नवम्बर 2021| बर्ष 11 अंक 3

मिथिला दर्शन

www.mithiladarshan.com



अजय सिंह

(24.09.1956 - 19.04.2021)

साहित्य, समाजक दर्पण

www.mithiladarshan.com

प्रतिष्ठाता संपादक : स्व० प्रबोध नारायण सिंह
स्व० अणिमा सिंह

प्रधान संपादक : उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'

कार्यकारी संपादक : कुणाल

मुख्य प्रबन्धक : प्रणव कुमार सिंह

संपादन सहयोग : बसन्त सेन
रघुनाथ मुखिया

वाणिज्यिक प्रबन्धक : संजीव पांडेय

Volume XI No. 3 : November 2021

Published by Suchita Singh for **Mithila Darshan Media Private Limited** from A-132, Lake Gardens, Kolkata - 700 045. While all care has been taken to ensure correct information, the Company does not accept any responsibility or liability for any discrepancy or error. Disputes, if any, are subject to exclusive jurisdiction of competent courts in Kolkata only.

प्रधान संपादक
Prof. Udaya Narayana Singh
Chair-Professor & Head, ACLiS
Amity Centre for Linguistic Studies
Amity University Haryana
Pachgaon, Manesar, PIN - 122 431

सम्पादकीय सम्पर्क
कुणाल
कार्यकारी सम्पादक
302, Rajlaxmi Residency
B-35, Buddha Colony,
Patna-800 001
मोबाइल : 93343 39348

Editorial Office : *Mithila Darshan*
A-132, Lake Gardens, Kolkata- 700 045
E.mail : mithiladarshan@gmail.com

पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने?
अछि सलाइ मे आगि, बरत की बिना रगड़ने?
- कविवर सीताराम झा



की लिखू? कत्तेक लिखू- अजय दय?

सब के बुते सभ किछु संभव नहि होइ छइ। जे किछु कर्म-कांड के साथ अजय केर सम्बन्ध रहल से सभटा चाहियहु क हम नहि क सकै छलहूँ। आ ई बात ओकरा शिशुकालहि स पता छल। ककरा स कोन काज ठीक ठीक भ सकैत छल भले तकर अंदाजा हमरा अहाँ के नहि होइ, अजय के तकर सही ज्ञान त छलहिये, आ तकर सूक्ष्म विचार सेहो छलै। रामलोचन जी के सेवा-निवृत्ति पर मिथिला दर्शन केर नैया के खेवैया बनय लेल चयन करब, अथवा हुनका राजी करायब से ओकरे लेल संभव छलै। तहिना आर्थिक विषय के लेल नरेंद्र झा जी के राजी करब, भानस-भात लेल राजीव आ नंदिता के जोड़ि लेब, राजनीति केर प्रेक्षपट लेल सुकान्त केर चयन अथवा वियोगी (योगेंद्र पाठक 'वियोगी'जी) के विज्ञानक विषय पर मैथिली मे लिखायब, ई सब...



पर्दा केर पाछां रहि कय चिंता करब क्यों नहि करितै त पत्रिका कैर प्रकाशन अथवा डिजाइन में एत्तेक बारीकी नहि आबि सकै छल। नवीन कलेवर में 'मिथिला दर्शन' केर छवि अथवा लुक केहन हो, तकर खर्च केर रेशनलाइजेशन कोना करी, अपन मित्र मंडली कैर माध्यमे कोना आनन्दबाजार प्रकाशन गोष्ठी सं गोपी दे सरकार के डिजाइन एवं इलस्ट्रेशन लेल ल आनब, संगहि पेज मेक-अप तथा टाइप-सेटिंग ले वसंत सेन के जोड़ब, संगहि बेसिक कीइंग लेल लखनपति जी के ल आनब, ई सब आन ककरो लेल असम्भवे छल।

बहुत गोटे एहन विश्वस्तरीय पत्रिका के जखन रेलवे स्टेशन केर व्हीलर के स्टॉल सें कीनि कय हाथ में ल कय उल्टा-पुल्टा कय देखैत छला हुनका भरिसक लागइ हेतनि जे नचिकेता जी दुनू भाइ केर पास पैसा केर ढेर छनि तैं एहन मानक पत्रिका बहार करै छथि। ई कोन पैध काज भेल? मुदा जे क्यों भीतरक इकोनॉमिक्स अथवा मार्केटिंग स्ट्रेटेजी के नजदीक स देखने हैत जाहि मे इला दीदीक बालक प्रणव कुमार सिंह (जे कि अपने नीक - प्रकाशन संस्था 'ब्रिजिंग बॉर्डर्स' चलाबय छथि) एवं पटना ऑफिस केर लेल संजीव पाण्डे क उल्लेख करै टा पड़त, ओ जानै छथि जे कत्तेक विस्तार स पत्रिकाक योजना बनाओल गेल छल आ कोना कोना तकरा वास्तवायित कैल जाइत छल। धनवाद केर चार्टर्ड अकाउंटेंट गगन अगरवाल जी केर पेपर वर्क तथा सुबुद्धि देव, तकरो लैल हिनक सांगठनिक मेघा के पहचानब आ' तकरा काज में लगा सकब एकर सफलता लेल दायी छल। पटना में कुणाल जी आ' अग्निपुष्प केर उपदेश आ सहायता हिनका सहजहि भेटलनि। कुणाल जी केर संग। सम्बन्ध बनल रहलनि अहू लेल जे मिथिला दर्शन मात्र पत्रिके धरि सीमित नहि रहल। एहि बैनर केर उपयोग लघु फिल्म तथा सीरियल केर लेल सेहो कैल जाय लागल। अजय के एतबा आत्मविश्वास छल जे जखन जखन आवश्यकता पड़त, अपन बड़का भाई के उकसा दिय पड़त। परिचय आ मित्रता भेल छलनि सीताराम सिंह केर संगे जकर पाछौँ अजय केर आपन संगीत केर ज्ञान तथा गायन प्रतिभा सेहो छलै, खाली अहि लेल नहि जे वीडियो एल्बम बनौता। तखन शुरू भ गेल हमरा वाध्य करब नाटक आ कविता में ओझरायल नहि रहि गीत-रचना मे लागी। ताहि लेल- उद्देश्य एक्कहिटाः आधुनिक मैथिली संगीत लेल लिखब जरूरी छल - मैथिली मे त निसार अख्तर, आनंद बक्शी अथवा गुलजार त राता-राती उत्पन्न नहि भ जेता। तैं कतहु शुरू त कैल जाय।

काज सहज नहि छलै। दिक्कत आर बेसी जे हम हैदराबाद तथा मैसूर केर दूरी मे, सीताराम जी अपन काने पर विश्वास करैत छला। त्रिमुखी टेलीफोन पर हमर उच्चारण तथा प्राथमिक गायन के सुनैत आ बुझैत, तकर ऊपर फिल्म मानक सुर-ताल जोड़ब एवं उदित नारायण तथा भूपेंद्र सनक बम्बई केर गायक, कलकत्ता केर मनोमय भट्टाचार्य एवं पटना केर नंदिता चक्रवती, रंजना झा आदि अनेको गोटे के युक्त क सकब, सेहो अजय के बुते संभव छल। एतबे सबटा गुणी-धन केर भरोसे दूरदर्शन बिहार के प्राइम टाइम लेल अठहतरि एपिसोड केर सीरियल केर कल्पना करब से ककरा साहस भ सकै छल? एकरा लेल मैथिली के मीडिया विशेषज्ञ प्रमोद झा जीक बुद्धि आ सहायता हुनका सहजहि भेटि गेल छलनि। मुदा कलकता विश्वविद्यालयक एकटा कॉलेज केर गणितक अध्यापक सोमनाथ गुप्त जकाँ उत्साही चलचित्र निर्माता के ताकि लेब से के क सके छल ? से त अनेक काल बाद 2010 मे सोमनाथ के बांग्ला फिल्म 'आमि आदू केर लेल राष्ट्रीय पुरस्कार भेटल छलनि। सोमनाथक 'ओके एट नाईट' (2015) अथवा 'आसा-जाबार माझे' त बहुत बाद में जनप्रिय भेल। हमरा अंदाजा नहि छल जे हमर 'प्रत्यावर्तन' केर कथानक के एतेक नमहर करैत, ताहि मे कतेको पात्र कहनिक ट्वीस्ट अथवा मोड़

के जोड़ि तोड़ कय एहन किछु बनि सकैत छल, नामकरण त हम सहजे क देने छलियै। मुदा नाट्यकार अथवा मैथिली के लेखक नहि होइतो जेहन निष्ठा आ कल्पना के बले ओ एहि प्रोजेक्ट में कूदि पड़ल छल, तकर अभिनेता चयन, कलर-स्किमिंग तथा ड्रेस डिज़ाइन आदि सब दिशि ध्यान दैत, तकर जत्ते प्रशंसा कैल जाय से कम्मे हैत। 2008-09 केर समय तैं मैथिली मीडिया लेल स्वर्णिम समये छल। कलकत्ताक प्रख्यात जादूगर पी सी सरकार केर कन्या मौबनी के हेरोइन के रूप में लेब आ बिना डबिंग करने तकरा सं मैथिली बजायब सहज काज नहि छल।

ओना हमरा मोन अछि 2005 केर 19 दिसंबर के ओ हमरा 'मिथिलाक प्रबोध बाबू' पर नब्बे मिनट केर तीन एपिसोड वाला फिल्म केर स्क्रिप्ट पर तकर चित्र-निर्देशक लाडली मुखोपाध्याय तथा अनन्या विश्वास के कतेक विस्तारित रूपें अपन मंतव्य देने छल इ-मेल द्वारा। बाबूजीक सहमौरा गामक श्यामलिमा तथा सौंदर्य के सेलुलॉइड मे एहन सार्थक रूप सँ 'picturize' करब, एहन ककरो लेल असम्भव छल जे अजय जकाँ सिनेमा पागल नहि होइ। बचपन में सेंट लॉरेंस हाई स्कूल केर बेल्जियन फादर हमर सभक घर मे आबि कय, अजय केर स्कूल स पड़ा कय सिनेमा देखबाक बात जखन पहिल बेरि बतौने छला, तखन माँ अणिमा जी एकटा डायरी द क ओकर दिमाग में घुसा देने छली जे प्रत्येक दिनक दिनचर्या सत्य-सत्य लिखैत नहि चलब त जीवन में सार्थकता नहि भेटत। मातृभक्त तत्तेक छल जे एहि मे चालाकी छल से नहि बुझलक। ओना माँ आ हम दुनू एक्कहि संग थिएटर आ फिल्म देखय जाइते छलहुँ -तैं अजय केर स्वीकारोक्ति हमरा दुनू के नुका कय पढ़े में बड़ मजा आबैत छल। आगाँ चलि कय मिथिला दर्शन केर मुद्रण-शुद्धि कर लेल ओकर माय पर निर्भरता देखे लायक छल। 2016 केर बाद के पत्रिका मे हमर सभक बांग्ला मातृभाषी मुदा मैथिली विशेषज्ञ माता अणिमा सिंह के ओ 'touch' नहि छलै से पता चलै छल। एम्हर आबि कय, मित्रवर रामलोचनक अकस्मात अंतर्धान के ल क ओ अत्यंत परेशान छल। बड्ड विषण्ण रहै छल।

शिशुकालहि स अजय केर रामायण महाभारत केर कंठस्थ ज्ञान तथा भारतीय दर्शन तथा ज्योतिष केर स्वयं-अध्ययन उल्लेख योग्य छल। एकबेरि मौन अछि आदरणीय जयकांत बाबू के ओ कुरु-पाण्डवक भयानक युद्धक सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवरण के विषय में प्रश्न क कय परेशान क देने छल। बचपन मे हनुमान बन एवं तदनुरूप पोशाक पहिरि कय अभिनय करबाक एकटा तस्वीर दीदी इला रानी सिंह केर एल्बम में रखनहु छनि। प्रत्येक दुर्गा पूजा के अवसर पर लेक गार्डन्स केर बांगुर पार्क केर सजावट अथवा थीम की हेतैक ताहि लेल ओकर सबटा मित्र वर्ग उत्सुक रहैत छल। एहन अद्भुत कल्पना सब दिमाग मे अबइ छलइ जे तकर वास्तव रूपायनक लेल योग्य शिल्पी के बंगाल केर कोना कोना से वैह खोजि क ल आनेत छल। हठात अजय केर प्रस्थान स ओकर सवटा विभिन्न प्रोफेशनक और मित्र सब जाहि तरहें फोन पर हमरा से बात करैत काल कानि रहल छल तकरे से मित्र मंडली में अजय केर लोकप्रियता केर अंदाजा लागल। बहुत गौटे कतेको सप्ताह केर बाद में बताउने छला जे सब के ई अविश्वास्य लागि रहल छलनि। पटना स? 19 अप्रैल केर ओ फोन हमरा सबके स्तब्ध आ असहाय बना देने छल।

कवि विदयानंद जी केर सपना में ओ एम्हर आयल छला। हुनकर कहब छलनि अजय मैथिली केर लेखक त नहि छला। मुदा 'literary impressario' की अवश्य छला। पता नहि की पुछबाक छलनि ओकरा कवि अध्यापक सँ भ सकैछ मैथिली भाषी लोक केर चरित्र मे। 'organizational behavior' की 'होइ छै तकरे विषय में, समाजक मैनेजमेंट के विषय मे; ओकर जिज्ञासा छलें कियेक त ओकर विषय त वाणिज्य शास्त्रे छलै -कोना संस्कृति। कें केना मार्किट कैल जाय सएह अपन उद्देश्य बना लेलक।


माँ डॉ. अणिमा सिंहक संग


भाई नचिकेता क संग


पत्नी सुचिता क संग

शिशुकाल में सात-आठ वर्ष ओ हमर सहारे दिल्ली में ठेकान बनौने छल, दिल्ली विश्वविद्यालयक जुबिली हॉल में। ओकरा दिल्ली में बजा कय, हमर अध्यापक मित्र अशोक कालरा जी केर सहायता स कॉलेज में भर्ती होब स ल कय प्रति वर्ष हमर जे सब अजस्त्र मित्र सब आईएएस कर परीक्षा में ससम्मान उत्तीर्ण होई छला, सब सँ किछु ने किछु सिखैत-जानैत कहिया ओ एत्ते पैध भ गेल छल... नहि जानि बेसी नहि, तैयो हमर डॉट-डपट सबटा माथा नीचाँ क कय सुनैत छल। सैह आगाँ चलि कय बाबूजी केर स्वप्न पूरन लेल स्वस्ति, फ़ाउंडेशन, प्रबोध साहित्य सम्मान, मिथिला दर्शन पत्रिका तथा मैथिली मीडिया लेल एत्तेक पैघ एकटा भरोसा आ' स्तम्भ जेकाँ बनि गेल से पतो नहि चलल।

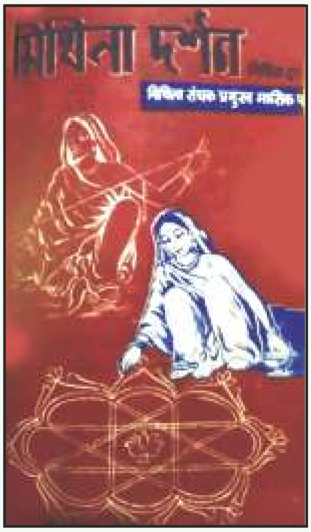
आइ, जखन पत्रिका चलैबाक साध्य हमरा सन अंतिम पारी केर खेल खेलय बला लोग क लेल असम्भवे बुझाइ छइ, तखन एहि सशक्त स्तम्भ केर अभाव बड्ड खटकै अछि।

मिथिला दर्शन : एक विशिष्ट पत्रिका

● **डॉ. अनमोल झा** (साहित्यकार)

भाषा ओ साहित्यक विकास मे पत्र -पत्रिकाक महत्वपूर्ण स्थान होइत अछि। जे कोनो भाषा वा साहित्य हो, पत्र पत्रिकाक प्रभाव ओहि पर पड़ैत रहैत अछि। मैथिली में प्रथम प्रकाशित पत्रिका 'मैथिल हित साधन' थिक जे जयपुर सँ 1905 मे प्रकाशित भेल अछि आ तकर बाद मिथिलामोद आ आओर बहुत पत्र पत्रिकाक प्रकाशन विभिन्न ठाम से विभिन्न समय पर होइत रहल।

एहि क्रम मे मिथिता दर्शन' नामक मैथिली पत्रिका कोलकाता सँ जनवरी, 1953 ई. सँ मासिक रुपे प्रकाशित होयब शुरू भेल। जकर सम्पादक प्रो0 प्रबोध नारायण सिंह छलाह। 1957 ई. मे पं0 दिनेश झा शास्त्री प्रधान सम्पादक आ निबन्ध सम्पादक पं0 श्री परमानन्द्र झा भेलाह, मई 1957 ई. सँ लए अक्टूबर 1958 ई0 तक केवल पं0 श्री परमानन्द झा सम्पादक छलाह। फेर प्रो0 प्रबोध नारायण सिंह आ डॉ0 अणिमा सिंहक संयुक्त सम्पादन मे दिसम्बर 1958 ई. सँ 1963 ई0 तक प्रकाशित होइत रहल। 1964-65 ई. मे श्री मदन चौधरी सेहो सम्पादक मण्डल में एलाह। 1968 सँ प्रो0 प्रबोध नारायण सिंह आ हिनक पुत्री प्रो0 इलारानी सिंह सम्पादन कएलनि। 1971 ई0 मे बाबू साहेब चौधरी, प्रबोध बाबूक जगह पर सम्पादक रूप में एलाह आ 1973 तक सम्पादन करैत रहला। 1973 ई0 मे आपसी मनमोटाओक कारणे बाबू साहेब चौधरी मिथिला दर्शन सँ अलग भ गेलाह आ एहि सँ अलग 'मैथिली दर्शन' नाम सँ एकटा पत्रिकाक प्रकाशन शुरू कयलनि । आ ई दूनू पत्रिका मिथिला दर्शन आ मैथली दर्शन किछु दिन संग-संग प्रतिस्पर्धात्मक रूप में प्रकाशित भ बन्द भ गेल।



'मैथिली दर्शन'क किछु अंक 2000ई क बाद रामलोचन ठाकुरक संपादन में बहरायल, मुदा इहो पुनः बन्द भेल से बन्दे रहल।

कलकत्ताक प्रवासी मैथिल द्वारा स्थापित 'मैथिल संघ' नामक संस्थाक मुख्य पत्र छल मिथिला दर्शन। मैथिली के सरकार तक पहुँचायब आ एकरा राजनीतिक अधिकार भेटैक ताहि उद्देश्य सँ एकर प्रकाशन कएल गेल छल । 'मिथिला दर्शन'क प्रकाशन जखन 1953 सँ भेल तकर बाद 1958 ई. सँ एकर प्रत्येक अंक में उदबोधन वाक्यक रूप में छल-

अछि सलाइ मे आगि, बरत कि बिना रगड़ने?
पायब निज अधिकार, कतहुँ कि बिना झगड़ने? (कविवर सीताराम झा)

एहि पत्रिकाक माध्यमे ओहि समय मे बहुत नवयुवक साहित्यकार एहि मे लिखैत छलाह। यथा हरिमोहन झा, आचार्य रमनाथ झा, प्रो. तन्त्रनाथ झा, काशीकान्त मिश्र, 'मधुप' डॉ0 लक्ष्मण झा, डॉ0 जयकान्त मिश्र, डॉ शैलेन्द्र मोहन झा पं0 सुरेन्द्र झा 'सुमन', बच्चा ठाकुर शेखर, डॉ0 रामदेव झा, कांचीनाथ झा किरण, श्री राजमोहन झा श्री मायानन्द मिश्र, डॉ0 परमेश्वर मिश्र आदि आदि।

मिथिला दर्शनक मुखपृष्ठ के नीक जकां लोक के आकर्षित करबाक हेतु समय- समय पर एकर ब्लाक में फेरबदल कयल जाइत रहल। 'मिथिला दर्शन'क विषय में विभिन्न विद्वान, इतिहासकार लोकनि कें मत एहि प्रकारे अछि।

1- पं0 चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' मे मिथिला दर्शनक लेल लिखैत छथि - मैथिली कें राजनीतिक अधिकार प्राप्तिक दिशा में कलकत्ताक प्रवासी बन्धु सक्रिय भेलाह तथा कलकत्ता में मैथिल भाषी लोकनिक एक संस्था स्थापित भेल ज़े 'मैथिल संघक' जामसँ जानल जाइत छल। साहित्य सेवीक प्रमुखता तँ एहू संघमे छल, परन्तु एकर सहयोगी साहित्य सेवीक अतिरिक्तो लोक भेलाह, जाहिमे सँ पछाति बहुतो गोटे साहित्यकार सेहो भ गेलाह। ई संघ 'मैथिल महासभाक' संकीर्ण दृष्टि सँ उपर उठि मैथली भाषी मात्रकें समेट क कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण भेल। एहन संस्थाक कार्यकलापसँ समाजो कें परिचय करयबाक हेतु तथा अपन स्वर सरकारक कान घरि पहुँचएवाक हेतु एक पत्रक आवश्यकताक अनुभव भेल। एही पृष्ठभूमिमे 1953 ई.क जनवरी सँ 'मिथिला दर्शन' नामक एक मासिक पत्रक प्रकाशन कलकतासँ आरम्भ भेल जकर संपादक छलाह प्रो. प्रबोध नारायण सिंह। एखन धरिक मैथिलीक पत्रक इतिहास में ई पहिल सम्पादक भेलाह जे ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थ सँ अतिरिक्त वर्गक छला। एहि सँ अन्य वर्गमे पसरल मैथिल शब्दक भ्रान्तिक आंशिक रुप में परिहार सेहो भेल।'

2-मायानंद मिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहास मे मिथिला दर्शन लेल लिखैत छथि– .

सन 1953 ई. मे कलकत्ता सँ मिथिला दर्शन डॉ0 प्रबोध नारायण सिंह ओ डॉ0 अणिमा सिंहक सम्पादन में 1970 ई. क़ दशक घरि खंडित रूपें प्रकाशित होइत रहल जकर नाम भेल। पाछू

मैथिली दर्शन तथा ओकर सम्पादन बाबूसाहेब चौधरी केलनि। ई दुनू मासिक पत्र अपन दीर्घ जीवन तथा आधुनिक साहित्य विशेषतः कथा साहित्यक विकासक दृष्टियें मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक 'मीलक पाथर' थिक। 'दर्शन' में मैथिली आन्दोलनक स्वर अपेक्षाकृत तीव्र रहैत छल तथा पूर्ववर्ती साहित्य पत्रे' जकां 'रीप्रिंट' माध्यम सँ' आगि मोम आ पाथर' नामक कथा संग्रहक पुस्तक सेहो प्रकाशित कयलक।

3- डॉ. बालगोविंद झा 'व्यक्ति' अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास' में बहुत संक्षेप में मिथिला दर्शनक बारे में कहैत छथि- कलकत्ता सँ 'मिथिला दर्शन (1953) मे श्री प्रबोध नारायण सिंहक सम्पादकत्व मे प्रकाशित भेल जे किछु दिन चलि बन्द भ जाय , पुनः चलय आ बन्द भए जाय।

4– एहिना डॉ0 जयकांत मिश्र अपन इतिहास मे मिथिला दर्शनक प्रकाशनक मात्र सूचना टा दैत छथि ओ लिखैत छथि–1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति भेलाक बाद बहुत रास नव-नव नीक पत्र पत्रिका बहराएल अछि। एहि मे मुख्य अछि दरभंगा सँ मासिक स्वदेश (1948) जे किछु दिन दैनिक सेहो भेल, (1948-49) मे पटना सँ मिथिला ज्योति, (1948) सीतामढ़ी सँ आ पछाति दरभंगा सँ वैदेही ,1953 मे कोलकत्ता सँ 'मिथिला दर्शन'।

5–डॉ0 श्री दुर्गानाथ ना ' श्रीश' जी अपन मैथिली साहित्यक इतिहास मे विस्तार स लगभग एक पृष्ठ मे मिथिला दर्शनक विषय में लिखलनि अछि तकर किछु अंश एतय अछि।

'मिथिला दर्शन' के प्रकाशन 1953 से आरम्भ भेल जे बीच में कतेक बेर बन्द भए पुनः प्रकाशित होइत रहल। एकर प्रथम सम्पादक छलाह प्रो0 प्रबोध नारायण सिंह।

वस्तुतः एकर सम्पादकत्वमे कएक बेर परिवर्तन भेल, परन्तु अधिकांशतः प्रबोधबाबू एकर सम्पादक रहलाह ओ संयुक्त सम्पादिका भेलीह क्रमशः हुनक विदुषी पत्नी श्रीमती अणिमा सिंह एवं पुत्री श्रीमती इलारानी सिंह।

एहि प्रकारे हमरा लोकनि देखलौं जे मिथिला दर्शनक हेतु की सभ इतिहासकार लोकनि अपन इतिहास में लिखलनि। एहि से फराक 'मिथिला दर्शन' स मोह रखनिहार सिंह परिवार एकर नब पर्याय प्रवेशांकक रूप में मई जून 2009 अक्षय तृतीया 2066 मैथिली द्विमासिक रूप में प्रकाशित करब फेर सँ प्रारम्भ कएलनि, जकर प्रतिष्ठाता संपादक प्रो0 प्रबोध नारायण सिंह, डॉ0 अणिमा सिंह, प्रधान संपादक नचिकेता आ कार्यकारी संपादक रामलोचन ठाकूर भेलाह। ई मैथिलीक रंगीन पत्रिका आकर्षक रूपे टा मे नहि, रचना चयन सँ सेहो लोक के आकर्षित करैत प्रकाशित होयब प्रारम्भ भेल। सब सँ बड़का बात जे ई पत्रिका ठीक समय स प्रकाशित होइत रहल आ एकर सरकुलर सिस्टम बहुत नीक छल।ई मिथिलाक सब शहर में उपलब्ध रहैत छल! एकर अतिरिक्त भारतक प्रायः सभ शहर में व्यक्ति विशेष लग मे सेहो उपलब्ध रहेत छल। ई रेलवे टीसनक ए.एच. व्हीलर लग सेहो उपलब्ध रहैत छल। जेना बिहार में पटना, दानापुर, गया, भागलपुर जमालपुर, सहरसा पूर्णिया, झाझा, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बरौनी, खगड़िया, मोतिहारी, कटिहार, अररिया, किशनगंज, बेतिया, हाजीपुर सोनपुर, मुजफ़्फ़रपुर, सीतामढ़ी, रक्सौल, नरकटियागंज, आरा, छपरा। बंगाल मे- हावड़ा, सियालदह, दुर्गापुर, आसनसोल, मालदह, न्यू जलपाईगुड़ी। झारखंड में-राँची, मुरी, धनबाद जमशेदपुर गोमो, साहेबगंज। उत्तर प्रदेश में - इलाहाबाद, मुगलसराय, फैजाबाद लखनऊ, मिर्जापुर ,वाराणसी, कानपुर, गोरखपुर आदि-आदि।

एहि उपरका सूची सँ हमरा लोकनि अटकर लगा सकैत छी जे मिथिला दर्शनक कोन प्रकारक वितरण व्यवस्था छल जे प्रायः मैथिलीक कोनो पत्र पत्रिकाक नहि छल।



एकर नव पर्यायक दाम 30 टका छल, बाद में एकर दाम 20 टाका क देल गेल। 20 टका मे 70-80 पृष्ठक कलर मैथिली पत्रिका मिथिला दर्शन घर- घर पहुँचब कम नहि अछि। एकर भीतर प्रकाशित साहित्यिक आ आन विषयक रचना सभ समसामयिक रहैत अछि जे लोक के बेसी आकर्षित करैत अछि। मिथिला दर्शनक प्रकाशन स्थल कलकत्ता रहल अछि। जखन कार्यकारी संपादक रामलोचन ठाकूरक शारीरिक अस्वस्थताक कारणे हिनक देहान्त सँ एक आध साल पहिले मार्च 2020 स कार्यकारी संपादक कुणाल भेलाह आ एकर प्रकाशन पटना स होमय लागल। एहि बीच कोरोना महामारी स समस्त विश्व चरमरा गेल। सब पर एहि संक्रमणक प्रभाव पड़ल, मिथिला दर्शन पर सेहो। तथापि कुणाल जी मिथिला दर्शन :क एकटा अंक प्रिंट करा लोक लग उपलब्ध करौलनि, बाँकी फरबरी-मार्च 2021 तक के सब अंक ऑनलाइन उपलब्ध अछि। एहि मध्य सिंह परिवार पर विपत्तिक पहाड़ टूटि पड़ल अछि। कोरोनाक चलते दू गोटा हिनका परिवारक कालक गाल में समा गेलथि। अजय सिंह जे पत्रिकाक वास्तविक संचालक रहथि, करोनाक शिकार भ गेलाह। नचिकेता जी नोकरी सँ अवकाश ग्रहण क कलकत्ता छोड़ि दिल्ली रहय लगलाह। एहना स्थिति में मिथिला दर्शन कोना लगातार ससमय प्रकाशित होइत रहय ताहि लेल सबहक नजरि कुणाल जी पर छनि। मुदा कुणाल जी संपादनक कार्य क दैत छथिन, मुदा आर्थिक सहायता? एखन तक अजय सिंह सब किछु करैत छला। आब के? समस्त मिथिला समाजक नजरि सिंह परिवार दिस छैन।

मिथिला दर्शन मैथिलीक एक विशिष्ट आ महत्वपूर्ण पत्रिका थिक,

ई दीर्घायु होय तकर कामना हमरे। नहि समस्त मैथिल लोकनि के छनि। ई सदति फलय- फूलय, जेना पहिले समय पर सबके भेट जाइत रहनि तहिना भेटय, मिथिला मैथिलीक पत्रकारिताक संबलता प्रदान करय से ईश्वर से प्रार्थना करैत छी।

संदर्भ : -

1-मैथिली पत्रकारिताक इतिहास - पं0 चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'। प्रकाशकः मैथिली अकादमी, पटना। द्वितीय संस्करण 2011। पृष्ठ 232-233 -

2. मैथिली साहित्यक इतिहास - मायानन्द मिश्र । प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक, किसुन कुटीर सुपौल- 85213 प्रथम संस्करणः 2014, पृष्ठ 250-251।

3. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ0 बालगोविन्द झा 'व्यथित'। मिथिलांचल प्रकाशन, टावर चौक, दरभंगा-846004। दोसर संस्करणः कोजागरा -1998। पृष्ठ 147

4. मैथिली साहित्यक इतिहास - श्रीजयकान्त मिश्र । प्रकाशक साहित्य अकादमी, पुनर्सस्करण : 2001, पृष्ठ 228

5. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ. श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' । प्रकाशक : भारती पुस्तक केन्द्र, टावर चौक दरभंगा संस्करण 1991, पृष्ठ- 319

संपर्क : 94337 53863

कलकत्ताक मैथिली आंदोलन आ मिथिला दर्शन

• **नबो नारायण मिश्र** *(संस्कृतिकर्मी)*

कलकत्ता प्रारम्भहि सँ सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक चेतनाक केन्द्र रहल अछि। सन 1933 ई मे पं कुज्जी झा पं. मार्कण्डेय मिश्र तथा पं. बबुआजी मिश्र द्वारा मैंथिल सम्मेलनक आयोजन भेल। फेर आगू चलि क 'मैथिल संघक' नाम सँ प्रतिष्ठित भेल। अइ मे कतेको परिवर्तन होइत संस्था अपन गति पकड़ि रहल छल। शिक्षित समुदाय मे स्कूलक शिक्षक तथा कौलेजक मैथिल छात्रक संख्या सेहो छलैक। मुदा ओहि मे एको गोटे एहन नइ भेला जे मैथिली आन्दोलन के नेतृत्व द सकितथि। एहने परिस्थिति में उपस्थित भेलाइ प्रो. प्रबोध नारायण सिंह। हिनका बाबू साहेब चौधरी आ देवनारायण झा सँ सम्पर्क भेलन्हि त ओहो संघक सदस्य भ गेलाह। हिनका अयला से संघक कार्यशैली में गति आबि गेलैक। मैथिली आन्दोलन के गति के आर अधिक मुखर बनयबाक हेतु एकटा पत्रिका केर खगता बुझल गेलैक आ आरम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'क प्रकाशन, जे संघक मुख पत्र छल, जकर सम्पादक भेलाह प्रो. प्रबोध नारायण सिंह!

संघक कार्यसमितिक निर्णयक अनुसार पत्रिका के आर्थिक सुदृढ़ताक हेतु प्राइभेट लिमिटेड कम्पनी क गठन भेल। जकर चैयरमैन भेलाह प्रबोध नारायण सिंह। मैनेजिंग डायरेक्टर -उदित नारायण झा (बसौली) , कम्पनी क सेक्रेटरी, राज नंदन लाल दास। पत्रिका 1963 सँ मिथिला दर्शन प्रा. लि. दिस सँ प्रकाशित होमय लागल। यद्यपि समय-समय पर सम्पदकक नाम तथा संपादक मंडलक नाम मे परिवर्तन होइत रहल।

प्रबोध बाबू, सिंह प्रेस' नाम सँ एकटा प्रेस खोललनि आ 'मिथिला दर्शन' पत्रिका ओही प्रेस सँ प्रकाशित होमय लागल।

मिथिला दर्शनक प्रवेशांक 1 जनवरी 1953 सँ त्रैमासिक पत्रिका रूप मे प्रकाशित भेल, पछाति ओ मासिक भ प्रकाशित होमय लागल।

प्रकाशनक सम्पूर्ण खर्च प्रबोधबाबू स्वयं वहन करैत छलाह। एकर स्पष्ट उद्देश्य छलैक मिथिला-मैथिलीक विकास एवम राजनैतिक अधिकार हेतु आन्दोलन। मैथिलीक विद्वान लोकनिक साहित्यिक रचना प्रकाशित होइत रहल जाहि मे पत्रिकाक तीन टा प्रमुख उद्देश्य छल।

(1) भाषा अन्दोलनक प्रति पत्रिकाक भूमिका।

(2) साहित्यिक विकास में पत्रिकाक अवदान।

(3) मिथिलाक सामाजिक, सास्कृतिक एवं आर्थिक समस्याक प्रति पत्रिकाक दायित्व।

सम्पादकीय दृष्टि के अवलोकनार्थ निम्नलिखित प्रमुख किछु उदाहरण द्रष्टब्य अछि।

(1) 1951 ई के जनगणना में मिथिला जनपद के लोक अपने मातृभाषा मैथिली लिखौने छल मुदा सरकारी खाता मे मैथिलीक स्थान पर हिन्दी लिखि दैल गेलैक। एकर विरोध मे तीव्र भर्त्सना करैत अप्रैल 1954 ई अंकक सम्पादकीय मे लिखलनि–

'जनगणनाक समय जनता के धोखा देल गेल जाहि मे पटनिया सरकारक निरस्सन्देह अप्रत्यक्ष हाथ छलैक। अशिक्षित तथा सरल स्वभावक जनता अपन मातृभाषा मैथिली लिखौने छल किन्तु लिखनिहार सभ अपन प्रभुक आदेशानुसार हिन्दी लिखि लैत छलाह। अतः ई ललकारपूर्ण चुनौती निर्भिक रूपे देल जा सकैछ जे गत जनगणना के आधार पर केओ मैथिली के दबा नहि सकैत अछि।

(2) फरबरी 1955 के अंक मे सम्पादकीय लिखने छलाह **जतय जे क्षेत्र भौगोलिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ भाषाधार दृष्टि मे मिथिले जकां प्रान्तक योग्यता राखितहु उपेक्षित शोषित अछि, ओकर जनता कटिबद्ध अछि, ततय प्रान्त देबहि परत।**

(3) आकाशवाणी सँ मैथिली में समाचार एवम अन्यान्य कार्यक्रम प्रसारण हेतु सरकारक उपेक्षाभाव ओ नीतिक कटु आलोचना

करैत मार्च 1955 क अंक में लिखलनि; **अविलम्ब सुधार नहि कयल गेल त सम्पूर्ण मिथिला में रेडियोक बहिष्कार दिवस मनाय ओकर अधिकारी के मानबाक लेल बाध्य क देल जेतनि।**

(4) मई 1955 के अंक मे हुनक क्रान्तिकारी मनोभाव स्पष्ट परिलक्षित भेल—

सम्प्रति हमरा चाही राघवाचार्यक उदघोष; **'बीझ लागि गेल छौ, कृपाण के पिजा '**

(5) मातृभाषाक माध्यम से शिक्षा अनिवार्य रूपें देल जयबाक हेतु दिसम्बर 1955क अंक में स्पष्ट घोषणा कयलन्हि; **हम हिन्दीक विरोधी नहि मुदा अपन मातृभाषा मैथिली हेतु कटिबद्ध छी।**

उपरोक्त सम्पादकीय स स्पष्ट अछि जे मिथिला दर्शन के कलकता सँ प्रकाशित पहिल पत्रिकाक गौरवक संग मिथिला- मैथिलीक विकास हेतु प्रतिवद्धताक दयोतक अछि।

किछु उल्लेखनीय तथ्य

———

(1) मैथिली साहित्य श्रीवृद्धिक हेतु मिथिला दर्शन में प्रकाशित निबंध उल्लेखनीय अछि। 1960क विशेषांक में दू महान भाषाविद डा0 सुनीति कुमार चटर्जी आ डॉ0 सुकुमार सेनक निबंध प्रकाशित अछि। डॉ.सुनीति कुमार चटर्जीक 'मैथिली भाषा आ संस्कृति' आ डॉ0 सुकुमार सेनक 'व्याडि भक्तितरंगिनी' मैथिली साहित्यक धरोहर अछि।

(2) तहिना कथा साहित्य में मणिपद्म, मायानन्द मिश्र, राजकमल, धीरेन्द्र, रामदेव झा, हरिमोहन झा, फणीश्वरनाथ 'रेणु' तथा ललित सन सिद्धहस्त कथाकारक कथा प्रकाशित भेल।

(3) कविताक क्षेत्र मे कतिपय मूर्धन्य कवि लोकनिक कविता प्रकाशित भेल-यथा- यात्री जी, हरिमोहन झा - मधुप जी, मणिपद्म,, कविवर सीताराम झा बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर' तथा रामकृष्ण झा ' किसुन'

(4) एकांकीकार जिनक रचना प्रकाशित भेलनि ओ छथि मणिपद्म, चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर' , गोविन्द झा, तथा आरसी प्रसाद सिंह ़

(5) नाटकक क्षेत्र में राधाकृष्ण चौधरीक 'नान्यदेवक दरबार' (विशेषांक 1961) उल्लेखनीय अछि।

मिथिला-मैथिलीक हित मे कएल गेल एहि महत्वपूर्ण सारस्वत अवदान लेल सम्पूर्ण मैथिल समाज एहि परिवारक सदैव कृतज्ञ रहत।

सम्पर्क : 933163348

(मिथिला दर्शन मार्च- अप्रैल 2021 अंकक उपरांत इएह अंक अइ। बीच के तीन अंक (मई-जून , जुलाई-अगस्त, सितंबर- अक्टूबर) प्रकाशित / अपलोड नइ भ सकलए.......

एहि घरक मझिले खाम्ह खइस पड़लइ कोरोना काल मे......ई काल मिथिलाक साहित्य, कला, संस्कृति समाजक अनेको खास व्यक्तित्व सब के हमरा सभहक बीच स उठा लेलक।

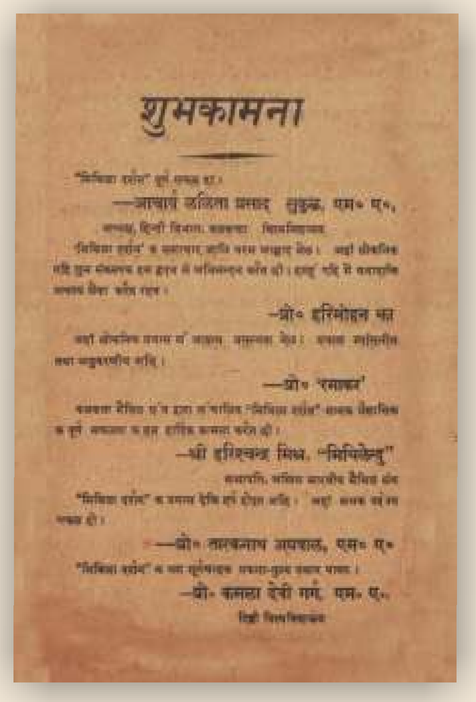
हिनकर सभक अभाव पूरा भ सकत से नइ कहल जा सकइए। ई धइर निश्चित जे हम सब आर दरिद्र भ गेलौं.......

मिथिला दर्शन परिवार एहि समस्त दिवंगतक प्रति प्रणाम निवेदित करइत कामना करइए जे समाज एहि अभाव के सहन क सकत।

मिथिला दर्शनक पहिल अंक


मिथिला दर्शन


नियमावली


शुभकामना

—आचार्य ललिता प्रसाद सुकुल, एम० ए०,

—प्रो० हरिमोहन झा

—प्रो० 'रमाकर'

—श्री हरिश्चन्द्र मिश्र, "मिथिलेन्दु"

—प्रो० कमला देवी गर्ग, एम० ए०

अजय सिंह

• कुणाल

पछिला सदीक नवम दशक मे, श्रीकांत जी (श्रीकांत मंडल) ललका पाग कथा पर मैथिली मे फिल्म बनाबक लेल प्रयासरत छला। हम ताबत बिड़ला ग्रुपक एकटा फैक्ट्री मे वर्क्स एकांउटेंट रही, कूल्टी मे। हेड-ऑफिस कलकत्ता (आब कोलकाता) छलइ। से बेसी काल कलकत्ता जाइ आ जनिका सबहक प्रेममय-सान्निध्य मे पांच बरख बितअओने रही, तनिको सब स भेंट करी। ओही क्रम में श्रीकांत जी स 'ललका-पाग' पर गप्प भेल। ओ कहलइन जे फिल्म क पटकथा, अजय लिखलइन। के अजय? कहलइन - प्रबोध बाबू क छोट बालक, आइ.आर.एस. बम्बई (आब मूम्बइ) मे पदस्थापित, सिनेमा मे बेस गंभीर रूचि रखनिहार, बांग्ला सिनेमाक कतिपय नामी फिल्मकार सभक घनिष्ठ मित्र।.... अजय बाबू स पहिल बेर हम एहिना परिचित भेल रही.... 2004 मे जखन नचिकेता जीक आदेश पर प्रबोध-साहित्य-सम्मानक उद्‌घाटन समारोहक मंच-सज्जा,नाटक, गीत-नाद प्रभृति क तैयारीक क्रम मे संपर्क भेल त बूझल जे इ आयकर अधिकारी, भाषा-मातृ-पितृ-भ्रातृ भक्तिक संगहि, विशिष्ट सौंदर्यबोधक स्वामी छइथ !



छः फूट नमहर, श्यामवर्ण, सोंटल-साटल देह, शिशुवत हंसी आ फूर्ती स रत-रत करइत। रामलोचन जी कहलइन जे हुनकर सदयः अधिकारी होइतो, पारिवारिक मित्र आ साहित्यिक क मान देनिहार अजय (श्रीकांत जी, रामलोचन जी, नचिकेता जी हुनका अहिना संबोधित करइ छलथिन), सम्पूर्ण आयोजनक सूत्रधार छइथ। क्रमशः बूझइत गेलौं जे आयोजनक डिजाइनिंग, कार्यक्रमक रूपरेखा आ खर्चक व्यवस्था सबहक सहर्ष जिम्मेदारी अजय बाबूक छलइन। निश्चित रूप स दादा (नचिकेता जी) क परामर्श आ सहमति स आ पितियौत अनुज अभय नारायण सिंह क (स्वस्ति फाउंडेशनक प्रबंध-न्यासी) सहयोग स। भैयारी क एहन सनगर संतुलन अभिभूत करइ छल। पूर्णतः नेपथ्यक लोक अजय बाबू, राजकमल चौधरीक नाटक, 'भग्न स्तूप का एक अक्षत स्तंभ' क चरित्र 'जयदेव' जकां कहियो मंच पर नइ गेला (मंच पर रहइ छला नचिकेता जी आ अभय बाबू...) आ तनावक लेश-पर्यंत हुनका चेहरा पर कहियो नइ देखाएल....

स्वस्ति फाउंडेशन (प्रबोध साहित्य सम्मान प्रदान केनिहार संस्था) क अतिरिक्त, मिथिला दर्शन मिडिया प्रा.लि. नाम स कम्पनी बनअओलइन! मैथिली भाषा मे मिडियाक, प्रिंट आ इलेक्ट्रॉनिक, दूनू क्षेत्र मे काज करब लगला। सब काज मे हमरा जोड़ने रहलाह (योजना, विमर्श, लेखन, निर्देशन...)। हरदम ओएह शांत, संयत, सुचिंतित आ सुनियोजित व्यवहार देखल। हमर तामसी प्रवृति पर हंसइत टिप्पणी कर स कखनो नइ चूकलाह... हमरा मोन नइ जे ओ किनको स बिना मानदेय (यथासंभव पारिश्रमिक) के काज करअओने होइथ। एहनो देखल जे ढनाढ्य बूझइ कतिपय क्षुद्र लोक मोल-मोलाइ, भयादोहन तक केलकइन। तखनो आवेश मे अबइत वा तमसाइत नइ देखल। हं, चुपचाप एहन लोकक विकल्प अवश्ये तकबा लइ छलाह।

रामलोचन जी क अस्वस्थता दुआरे, नचिकेता जीक अनुमति स मिथिला-दर्शन क कार्यकारी संपादन क भार हमरा देलइन ! कोविड-19 क आगमन भ गेलइ! लॉकडाउन दुआरे पत्रिका मात्र बेवसाइट पर अपलोड होब (लागल।... फेर 'प्रबोध साहित्य सम्मान' 2020 क उपरांत स्थगित करबाक निर्णय लेलइन। हम प्रस्ताव देलियइन जे कार्यकारी संपादकक जे मानदेय हमरा देल जाइए तकरो स्थगित क दियौ ! त जेना पहिने स सोचल होइन, तहिना जवाब देलइन- 'अहां लोकइन (माने मैथिलीक साहित्यकार-कलाकार) सैक्रिफाइस करिते रहलौंए। मुदा एहि स कोनो लाभ नइ। हम जखन पेज-सेटर के, अपलोड केनिहार के, कूरियर के, प्रिंटर के... सबके पाइ दइ छी त संपादक के किएक नइ ? दोसर बात, ओतबो त नहिए दइ छी जाइ स एक्को अंकक छपाइ कि वितरणक खर्च बहार भ सकय। ... चिन्ता नइ करू... एखन विपरीत काल छइ, बीतबे करतइ... हम विज्ञापनक जोगार करब, आर उपाय सब द सोइच रहल छी... 'प्रबोध साहित्य सम्मान' अही दुआरे स्थगित कएल जे मिथिला दर्शन चलइत रहओ.... के जनइ छल जे ई विपरीत काल, 'मिथिला-दर्शन' पर मर्मांतक प्रहार करत...

◆ ◆ ◆

नाम - अजय सिंह। जन्म - 24/09/1956 लेक गार्डेंस कलकत्ता। अवसान - 19/04/2021, आनन्दपूरी, पटना। पिता - प्रबोध नारायण सिंह। माता - अणिमा सिंह। ज्येष्ठ भ्राता - उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' , ज्येष्ठ बहीन - इलारानी सिंह। पत्नी - सुचिता कुमारी सिंह।

मैट्रिक - सेंट लॉरेंस हाई स्कूल, कलकत्ता। बी.कॉम.(आनर्स) - खालसा

कॉलेज, दिल्ली। कला-संकाय बला परिवारक एकमात्र कामर्स स्नातक। 22 वर्षक उमेर मे एस.बी.आइ. प्रोबेशनरी ऑफिसर चयनित भ क संगरूर, पंजाब मे योगदान केलइन। सहकर्मी तथा अधिकारी वर्गक प्रियपात्र रहलाह। परंतु 'कार्य-असंतोष' क भाववश, मात्र साल भइर बैंकक चाकरी केलइन आ दादा (नचिकेता) क परामर्श स यू.पी.एस.सी. क तैयारी करक लेल 'राउ कोचिंग' दिल्ली मे नामांकन करअओलइन। ओत्तहु अपन वरिष्ठ आ सहपाठी सभक बीच प्रियपात्र-लोकप्रिय बनल रहलाह। पहिने आइ.पी.एस. क लेल चयनित भेलाह जे हिनक रूचिक प्रतिकूल छल। फलतः तकरा अस्वीकार कएल। 1982 मे आइ.आर.एस. लेल चयनित भेलाह आ 'इकॉनोमिक आर्फेस विंग बम्बइ मे योगदान केलइन। ओत अपन सम्पूर्ण कार्यावधि मे अजय सिंह एक दक्ष आ कठोर अधिकारी क रूप मे ख्यात रहइथ !

पदोन्नतिक संग तबादला भेलइन आ हंस-भवन, आइ.टी.ओ. , दिल्ली मे योगदान केलइन। लगले (1993) डिपुटेशन पर 'दिल्ली वाटर बोर्ड' मे डायरेक्टर-फिनांस क रूप मे कार्यभार ग्रहण केलइन। एत ओ अमरावती (महाराष्ट्र) क एक सॉफ्टवेयर कम्पनी क सहयोग स दिल्लीक 'वाटर बिलिंग' मे क्रांतिकारी परिवर्तन केलइन। फलतः दिल्लीक रेवेन्यू मे आशातीत बृद्धि भेलइ।

पुनः कलकत्ता मे पदस्थापित भेलाह। पुनः पदोन्नति (कमिश्नर इनकमटैक्स) भेलइन आ धनबाद मे पदस्थापित भेलाह। एकबेर फेर धनबाद स कलकत्ता, 'कमिश्नर ट्रस्ट' क रूप मे पदस्थापित भेलाह। अही अवधि मे दादा क परामर्श स 'स्वस्ति फाउंडेशन' क स्थापना केलइन आ मैथिली साहित्य मे 'लाइफ टाइम एचीवमेंट' के लेल ओहि समयक सबस अधिक राशिक सम्मान, 'प्रबोध साहित्य सम्मान' क शुभारंभ केलइन !

पुनः पदोन्नति आ स्थानान्तरण भेलइन आ चीफ कमिश्नर इनकम टैक्स क रूप मे लुधियाना, पंजाब मे योगदान केलइन। एत्तहि स 2017 मे पदमुक्त (रिटायर) भेलाह !

◆ ◆ ◆

अपन मूलग्राम, सहमौरा, सहरसा क 300 वर्ष पूरान भगवतीथान क जिर्णोद्धार करा क एक भव्य-मंदिरक निर्माण करबओलइन। ओहि क्षेत्रक जल-संकट के ध्यान मे राइख, डीप बोरिंग करबा, वाटर-टैंक बनबओलइन जाहि स समस्त टोलके जल-संकट स मुक्ति भेटलइ। बिजली संकट के देखइत, जेनरेटर सेहो बैसअओलइन !

हिनक बाल्यकाल, लेक-गार्डेंस कोलकाता मे बीतल। एत ओ अपन संगतुरिया (डाक्टर, बैंकर, सरकारी पदाधिकारी, फिल्म मेकर, संगीतज्ञ) सबहक संग, पारा (मोहल्ला) क दुर्गापूजा-उत्सव क मुख्य पैट्रॉन छलाह। एत सब साल, दुर्गापूजा क यूनिक थीम होइ छइ। 2011 मे एकर थीम रखलइन-'मिथिला' अर्थात पंडाल, मूर्ति, पूजा-विधान आ मनोरंजन, सब मिथिला-देसिय। एकरा लेल संबंधित विद्वान सबहक परामर्श लेलइन। पूजा-विधानक लेल, विद्यापतिक 'दुर्गा भक्ति तरंगिनि' क प्रति, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा स मंगबओलइन। सीताराम सिंह स थीम म्युजिक बनबअओलइन। मनोरंजनक लेल



दीप, झंझारपूर स इजराइल पमरियाक नेतृत्व मे दू टा पमरिया दलक चयन केलइन। पटना स नृत्य दल 'सुरांगन' (जे हमर लिखल जट-जटिन नाट्य करइए) के चयन केलइन। दुनू नाट्य-रूपक प्रदर्शन पांच दिन तक कोलकाताक ओहि पुजा परिसर मे भेलइ! भगवती-भक्त अजय सिंह, तत्सवंधी संस्कृत-ग्रंथ सभक गहन जानकारी रखइ छला। संगहि, अपन पिताक पदचिन्हक अनुसरण करइत, एस्ट्रॉलॉजीक जानकार सेहो छलाह !

धनबादक पदस्थापना कार्य-काल मे ओ स्वामी सत्यानन्द द्वारा स्थापित रिखिया-आश्रम स संपृक्त भेलाह तथा प्रतिवर्ष पंद्रह दिन स ल क एक मास तक सपत्नीक ओत एकांतवास करथि। एहि अवधि मे ओ बाहरी दुनिया स समस्त संपर्क के स्थगित राखथि !

◆ ◆ ◆

2004 मे अग्रज (नचिकेता) क परामर्श आ पितियौत अनुज अभय नारायण सिंहक सहयोग स 'स्वस्ति फाउंडेशन' क स्थापना केलइन आ मैथिली साहित्य मे लाइफ-टाइम-एचीवमेंट क लेल पिता क नाम पर 'प्रबोध साहित्य सम्मान' क आरंभ केलइत। ओहि समयक, मैथिली मे सबस अधिक राशिक इ सम्मान 2020 तक अनवरत रहल। देशक ख्यातिलब्ध विद्वानक व्याखान आ नाटक, संगीत आ आयोजनक विशेषता होइ छलइ...2020 क बाद सम्मान के स्थगित कएल गेल। एकर मुख्य कारण छल जे मैथिली मे एहन वा एहि स अधिक राशिक सम्मान सब देल जाए लगलइए। अर्थात आनो लोकनिक-संस्थाक ध्यान एहि दिस आकृष्ट भेलनिहें - जे फाउंडेशनक कामना छलइ ! दोसर कारण जे उपलब्ध फंडक उपयोग मिथिला दर्शन के अनवरत प्रकाशित करक लेल कएल जाए।

प्रबोध साहित्य-सम्मान क संक्षिप्त विवरण

वर्ष	सम्मानित साहित्यकार	स्थल	नाटक/संगीत/फिल्म
2004	लीली रे	पटना	पटाक्षेपः लीली रे क उपन्यास अंश पर आधारित, आलेख-निर्देशन-कुणाल। अन्हेरनगरीः नाटक - भारतेन्दु, अनुवाद - प्रबोध नारायण सिंह, निर्देशक - संजीब मिश्रा।
2005	महेन्द्र मलंगिया	कलकत्ता	एक छल राजा - नाटक-नचिकेता, निर्देशक - गंगा झा
2006	गोविन्द झा	पटना	
2007	मायानन्द मिश्र	दिल्ली	एक छल राजा। नाटक-नचिकेता, निर्देशक-प्रकाश झा
2008	मोहन भारद्वाज	पटना	प्रयोग। नाटक-नचिकेता। निर्देशक-कुणाल
2009	राजमोहन झा	पटना	'के सूप, के चालनि'। राजमोहन झाक कथा पर आधारित फिल्म। पटकथा-संवाद-कुणाल। निर्देशक-सोमनाथ गुप्त।
2010	जीवकांत	दरभंगा	नोतैत अछि फंसरी - जीवकांतक कविता पर आधारित। आलेख आ निर्देशन - कुणाल।
2011	सोमदेव	पटना	नो एन्ट्री। नाटक-नचिकेता। निर्देशक-कुणाल।
2012	रामलोचन ठाकुर आ चन्द्रभानु सिंह	कलकत्ता	गोनू गवाह। लेखक-महेन्द्र मलंगिया, निर्देशक-गंगा झा।
2013	सुभाषचन्द्र यादव	सहरसा	डर - सुभाषचंद्र यादवक कथा आ महाप्रकाशक कविता पर आधारित। आलेख-निर्देशन-कुणाल। संगीत-सीताराम सिंह।
2014	भीमनाथ झा	सहरसा	पांच-पत्र। कथा-हरिमोहन झा। आलेख-निर्देशन-उत्पल झा।
2015	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	पटना	ममता गाबय गीत फिल्मक गीत आ विद्यापतिक गीत सभक प्रस्तुति। संगीत - सीताराम सिंह
2016	केदारनाथ चैधरी	पटना	एम.एल.एफ. 2015
2017	गंगेश गूंजन	दिल्ली	
2018	किर्तिनारायण मिश्र	पटना -	-
2019	हरेकृष्ण झा	पटना -	-
2020	उषाकिरण खान		(कोरोना दुआरे समारोह स्थगित)।

2012 मे दुनू सम्मानित साहित्यकार के सम्मान राशि पूरा अर्थात दुनु गोटे के एक एक लाख टाका देल गेल।

फाउंडेशन, सहरसा शहर मे एकटा भव्य कम्यूनिटी सेंटरक स्थापना केलक - स्वस्ति भवन। समस्त सुविधा-संपन्न इ भवन, क्षेत्रक साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधि के अन्यतम भावे सहयोगी-सहभागी होएत, इएह उद्येश्य छलइन अजय बाबूक।
2009 मे 'मिथिला दर्शन मिडिया प्रा. लि.' नाम स कम्पनी पंजीकृत करबओलइन आ अपन पिता द्वारा आरंभ कएल पत्रिका 'मिथिला दर्शन' क दोसर पर्याय आरंभ भेल ! संपादक-नचिकेता आ कार्यकारी संपादक-रामलोचन ठाकूर। पत्रिका संपूर्ण रंगीन आ पारिवारिक पत्रिकाक रूप मे परिकल्पित छल जकर डिजाइन, गेट-अप, विज्ञापन, आय-व्यय, प्रचार-प्रसार... अजय बाबू स्वंय देखइ छला। संपादक - कार्यकारी संपादकक काज कंटेंट निश्चित करब आ शुद्धता देखब छल जाहि मे ओ कोनो तरहक हस्तक्षेप कहियो नइ करइ छला। एहि द्वैमासिक पत्रिका क भव्यता आ नियमितता हिनकर परिकल्पना आ श्रम क परिचायक छल। एकर प्रचार-प्रसारक लेल अतिशय सचेष्ट रहल करथि। जत-कत्तहु मैथिली-भाषी लोकनिक संख्या छल ओतुक्का बूक-स्टॉल आ रेलवे-बूक-स्टॉल पर पत्रिका उपलब्ध करबइ छलाह। एहि मे संग पूरइत रहलथिन मार्केटिंग मैनेजर - संजीव पांडेय जे आइ अपना के अतिशय असहाय स्थिति मे पाइब रहल छइथ।
पहिने, कार्यकारी संपादक, रामलोचन ठाकूरक अस्वस्थता दुआरे दू अंक, फेर कोविड-19 क प्रकोप स सितम्बर-अक्टूबर 20 स मार्च-अप्रैल 21 तक पत्रिका ऑनलाइन टा उपलब्ध कराओल जा सकल। अपवाद छल अक्टूबर-नवम्बर 20 क अंक जे एक विशेष-अंकक रूप मे मुद्रित आ वितरित भेल।

◆ ◆ ◆

2007 मे नचिकेताक नाटक 'प्रत्यावर्तन' पर आधारित मैथिलीक पहिल टेली-सिरियल, 'नैन न तिरपित भेल' क 78 टा एपिसोडक निर्माण केलइन जे डी.डी. पटना स दू बेर प्रसारित भेल। श्रृंखलाक एक स ल क 52 तक के पटकथा आ एक स ल क चाइर तक के संवाद अजय सिंह लिखलइन। एपिसोड पांच स ल क 52 तक के संवाद कुणालक छल। एक स बाबन एपिसोडक निर्देशक रहथि सोमनाथ गुप्त (सुखद संयोग छइ जे सोमनाथ जी नगेन्द्रनाथ गुप्त क वंशज छइथ)। 53 स ल क 78 एपिसोड क पटकथा-संवाद-निर्देशन कुणाल क छल आ संपूर्ण श्रृंखलाक संगीत निर्देशक छलाह सीताराम सिंह।
श्रृंखलाक लेल कलाकार लोकनिक चयन, कलकत्ता, पटना, जमशेदपूर, सहरसा स कएल गेलइ। यथासंभव प्रयास केलइन जे ऑन स्क्रीन आ नेपथ्यक लेल उत्कृष्ट प्रतिभा सभक चयन कएल जाए।
अजय बाबूक एकटा आर योजना छल; मैथिलीक एक सौ कथा पर फिल्म, शार्ट फिल्मक निर्माण। एहि क्रम मे चाइर टा कथा पर

फिल्म क निर्माण केलइन;

1. मधुरमनि : कथा - कांचीनाथ झा किरण।
पटकथा-संवाद - कुणाल।
निर्देशक - सोमनाथ गुप्त
अवधि - 27 मिनट (2009)

2. के सूप, के चालनि : कथा - राजमोहन झा।
पटकथा, संवाद - कुणाल।
निर्देशक - सोमनाथ गुप्त।
अवधि - 27 मिनट (2009)

3. गोरकी : कथा - शैलेन्द्र आनन्द।
संगीत - सीताराम सिंह। गीत, - कुमार शैलेन्द्र, कुणाल,
पटकथा, संवाद, निर्देशन - कुणाल।
अवधि - 59 मिनट (2013)

4. कनिया काकी : कथा - कुमार पवन।
संगीत - सीताराम सिंह
गीत - विद्यापति, कुणाल
पटकथा, संवाद, निर्देशन - कुणाल।
अवधि - 59 मिनट (2013)

बाकी 96 टा चयनित कथा क वन-लाइन स्टोरीक फाइल हमरा लग पड़ल अइ। तहिना गोनू झा क मिथक पर आधारित 200 एपिसोड क योजना अंतर्गत 52 एपिसोडक फूल टाइप्ड स्क्रिप्ट सेहो पड़ल अइ। फेर एकटा 'मसाला-फिल्म' क फूल स्क्रिप्ट सेहो बनल जे हुनके कागज-पत्तर मे कत्तहु होएत।

2006 मे सी.आइ.आइ.एल, मैसोर क लेल हमर डाक्यूमेंट्री (एक घंटाक), विद्यापति एन्ड हिज एनफ्लुएन्स ऑन बांग्ला क सम्पूर्ण प्रोडक्शन प्लान आ डिजाइन हिनके परामर्श स बनल रहए। ओना हम सीतायन (2002) आ मिथिलाक संस्कार गीत (इ.जेड.सी.सी. क लेल 2007) सेहो बनाओल। तइयो, जं हमरा मे फिल्म क कोनो टा प्रतिभा अइ त ओकर उद्घाटन-प्रोत्साहन क श्रेय अजय बाबू के छइन।

2010 मे 'आधुनिक मैथिली गीत' क शीर्षक स नचिकेताक दस टा गीतक ऑडियो-भिडियो बनओलइन। संगीत-सीताराम सिंह, स्वर-उदित नारायण, भूपेन्द्र, रंजना झा, नन्दिता चक्रवर्ती प्रभृति। गीत सभक भिडियो-निर्देशक छइथ - सोमनाथ गुप्त।

पुनः पिता, प्रबोध नारायण सिंह क जीवन आ कृति पर तीन भाग मे विभक्त, डेढ़ घंटा क तीन एपिसोड मे विभक्त डाक्यूमेंट्री क निर्माण केलइन - 'मिथिलाक प्रबोध बाबू'। पटकथा - अजय सिंह, निर्देशन -लाडली मुखोपाध्याय।

कोरोना क पहिल लहरि के अजय बाबू, द्वारका, दिल्ली स्थित आवास पर बितअओलइन। फरबरी 2021 मे सासूर, (पूर्णिया) मे एक विवाह-समारोह मे शामिल होब बिहार एलाह। समारोहक उपरांत आनन्दपूरी, पटना आवास पर छलाह। कहलइन जे श्रीमती जी के एत मोन लाइग रहल छइन, त तखन पटने मे रहब।

एत मिथिला-दर्शन के लेल वेव-सिरिज क निर्माण क लेल योजना बना रहल छलाह। अपना के लाइम-लाइट स सायास दूर रखनिहार, नेपथ्य टा मे रह लेल जिद्दी, अजय बाबू मैथिली, बांग्ला, हिन्दी, अंग्रेजी जननिहार, फिल्म, संगीत, एस्ट्रालॉजी, देवी-भक्ति, योग, सामाजिक कार्य... सब पर विश्लेषणात्मक दृष्टि रखनिहार सह्मदय लोक छलाह। हम मना लेने रहियइन जे मिथिला दर्शन लेल एक पृष्ठक 'स्तंभ लेखन' करताह। बात आ योजना सब स उर्जान्वित रही जे आब बला समय बेस सक्रियता भरल रहत। मुदा...

25 मार्च क आवास पर पूजा रखने छलाह। संजीव क अतिरिक्त सपत्निक हम आ आर दू गोटे आमंत्रित रही... तकर किछुए दिनक बाद दुनू बेकती कोरोना संक्रमित भ गेलाह... हॉस्पिटल मे भर्ती कराओल गेलइन... संजीव आ जयसिंह (पितिऔत अनुज) क जी-तोड़ प्रयास क अछैत 19 अप्रैल क विदा भ गेलाह...

अजय बाबूक अवसान, एक विराट शून्यक निर्माण केलक। ई अपूरणीय क्षति भेलइ, मैथिली पत्रकारिता, मिडिया, हिनक परिवार, संजीव पांडेय आ हमरा लेल...


फिल्म गोरकी

...अपना पाछू , पत्नी सुचिता सिंह, जेठ भाइ - नचिकेता, भातिज - राजर्षि सिंह (नचिकेताक पुत्र। एहि परिवार पर कोरोना क दोसर आघात छइ, राजर्षि सिंह क पत्नी, डा. वर्णमाला क निधन) भागिन - प्रणव, सुमंत , भगिनी - ॠचा (जेठ बहीन इला रानी सिंहक पूत्र-पूत्री) छोइड़ गेलाह आ छोइड़ गेलाह मिथिला दर्शन क दोसर पर्यायक साठि स उपर अंक, मिथिला दर्शनक वेबसाइट, यू-ट्यूब चैनल, सिरियल, फिल्म, आधुनिक मैथिली गीत, डाक्यूमेंट्री, अनेक लंबित योजना आ कसकइत पीड़ा...

अहां हरदम मोन रहब अजय बाबू!

छोबि टा आर करा होलो ना

• सोमनाथ गुप्त *(फिल्मकार)*

सहरसा मे धारावाहिक के शूटिंग अंतिम चरण मे छल ।—हमर बजाहटि भेल-जरूरी काज छलइन –जा क देखल, भद्रलोक बेस अस्थिर सन घूर-बहुर क रहल छइथ -कहलइन- भारत आ नेपाल सीमा परहक दूनू देशक एक-एक परिवार के ल क एकटा कथा सोचलए-एहि कथा पर एकटा छवि (सिनेमा) बनेबाक छइ- कथा चित्र। छबि(सिनेमा) मुदा नइ बइन सकल।

सेंट लॉरेंस क समय

जेठ बालक शान्त शिष्ट छलथिन—, चिन्ता छलइन छोट बालक के ल क। घरक समस्त घड़ी क कांटा क्लॉकवाइज घूमइ। छोट जन एहि नियम के नई मानइ। घड़ीक कांटा के अपना हिसाबे आगू पाछू क दिअए। क्लास स फांकी माइर क सिनेमा देख गेल। घड़ी के कांटा एन्टी क्लॉकवाइज क देलक —फेर कखनो स्कूल जाइके मोन नइ भेलइ त घड़ी के कांटा के खूब आगू क फना देलक। मुदा प्रत्येक बेर शासन करबाक लेल उठल माएक हाथ, ओकर तर्कक आगू हाइर मानए। एहने छल ई ताहि समय मे। माए क समस्त समय के उनटा -पुनटा केनिहार छोट बालक। एहि छोट बालक संग हमर भेंट भेल अनेक बरख उपरांत, जखन ओ छोट बालक,सबहक लेल स्नेह सम्मानक पात्र भ गेल छल ।

आलाप

कोलकात्ता मे लाल बजारक नगीचे में अइ पोद्दार कोर्ट। बेस जन-संकुल क्षेत्र। आफिस, कार्यालय, दोकान, गोदाम, नाना प्रकारक पेशा व्यवसाय में व्यस्त कर्मस्थल। पता करइत -करइत, वी.एस. एन. एल. क कार्यालक बाद, अनेक भवन सबहक बाद, एक विराट- मकान में प्रवेश केलहुँ। सोझाक लिफ्ट में प्रवेश करक लेल लाइन लागल। लिफ्ट स बाहर भ क एकटा नमहर कॉरीडोर। सोझे पूब मूहें चलि क स्विंग-डोर के बामा कात नजर पड़ल, झक-झक करइत एकटा ब्रास नेम प्लेट, ताहि पर अंग्रेजी में लिखल -मि0 अजय सिंह, आइ. आर. एस. कमिश्नर इनकम टैक्स।

—आउ- आउ — कने काल बैस पड़त, अहाँ त चाह नइ पियब– हिनका ठंढा जल दहुन। बेयरा के कहलथिन, स्पष्ट छल जे ओ हमरा संबंध में पर्याप्त जानकारी प्राप्त केने छइथ।

भद्रलोक बेस नमहर माथक केश पतराएल, खल्वाट हेबाक प्रक्रिया मे —। सत्य कही, एहि उच्च-पदस्थ अधिकारी के देखि बेस नीक लागल। हुनका हाथक काज शेष होइत होइत - लंच ब्रेक के समय आइब गेल।

किछुए मनुख एहन होइए जिनका विषय में सहजहि शर्लक होम्स क कायदाक अनुमानक आधार पर सटीक धारणा नइ बनाओल जा सकइए। हमहुँ तखन नइ सोइच सकल रही जे हमरा सोझाँक टेबलक पाछा, रिवाल्विंग चेयर पर बैसल, पेसादार मनुखक भीतर, एकटा सम्पूर्ण मनुख बसइए,। से ओ, रिसेस क समय मे अपन जेष्ठ भ्राता क एकटा कथा के संक्षिप्त रूप सुना देलइन। बतअओलइन जे ओ एहि कथा पर आधारित मैथिली भाषा में एकटा टेलीवीजन सिरीज बनब चाहइ छइथ। फेर हम इ सुइन अबाक टा भेलहुं जे ओ स्क्रीन प्ले स्वयं लिखि रहल छइथ, आ तकर अस्सी प्रतिशत काज भ चुकल छइन।

कथाक थीम हमरा एक तरहे 'क्लीश' टा लागल। किंतु हुनकर कहबाक ढंग आ उत्साह हमरा मुग्ध क देलक। निर्देशक मे रूप मे काज करवाक आग्रह स हमरा मोन मे दू टा बातक घोर शंका भेल; पहिल मैथिली भाषा-ज्ञान हमरा एकदम नइ आ दोसर स्क्रिप्ट राइटर के रूप मे हुनका पर साफे भरोस नइ भ रहल छल। तखन हम अपना के उत्कृष्ट स्क्रिप्ट राइटर बुझइ छलहुँ। पहिल शंका के ओ साफे उड़ा देलइन-अहाँ हिन्दी पढि सकैत छी? हम कहलियइन-हं। बस तखन त भइए गेल। हमर स्क्रिप्टक भाषा मैथिली।

अइ मुदा ओ देवनागरी लिपि मे लिखल जाइए—अहाँ स्क्रिप्ट पढू आ हम मैथिली मे बाजब— अहाँ कने ध्यान स सुनब। लगभग सात दिनक एहि अभ्यासक बाद हम जानल जे हम त एक अत्यंत श्रुतिमधुर भाषा सिख रहल छी। धुरझार नइ बाइज सकइ छी। मुदा बुझबा मे हमरा कोनो असुविधा नइ भ रहलए– एकदिन पुछलनि, मैथिली बुझि रहल छी? हम कहलियइन बूइझ रहल छी, सेहो विश्वास पूर्वक। हमर दोसर आशंका जे हुनक लिखल स्क्रिप्ट के ल क छल से हुनक स्क्रिप्ट पढ़लाक बाद लागल जे कमिश्नर साहेब मुलधाराक सिनेमा के घोइर क पिबि चुकल छइथ। संवाद, नाटक,सेटिंग, ट्रान्जिशन, क्लाइमेक्स प्रभृति हिनका स्क्रिप्ट में बेस सिनेमैटिक छल आ प्रत्येक परत में शिक्षा एवं प्रमाणिकताक स्पष्ट छाप छल।

नैन न तिरिपित भेल

मिथिलाक एकटा आर नवीन ऐतिहासिक क्षण आबि तुलाएल, एहि इतिहासक कार्यक साक्षी हमहूं छी। आनन-फानन में आरंभ भ गेल मैथिली भाषा मे कथा धारावाहिक निर्माण कार्य। हमर अभिज्ञता, भाषा एवं एक विशेष प्रकारक मनुखक बारे में क्रमशः समृद्ध होइत गेल। जे सब '**नैन न तिरपित भेल**' देखने छइथ से एहि बात स सहमत हेता, जे ई अन्य धारावाहिक जकां ड्राइंगरूम ड्रामा नई छी! जौं कि लेखकक स्क्रिप्ट-संस्कारक आधार छल, सिनेमा पर्यवेक्षण क अभिज्ञता। फलतः हिनका स्क्रिप्ट मे सिनेमेटिक उपादान स संपृक छल।इएह कारण छल धारावाहिक में प्रचुर लोकेशन क उपस्थिति।

प्रथमे-प्रथम किछु करबाक अर्थ होइ छइ, प्रायः शून्य स आरम्भ केनाइ। कलकत्ता, बिहार , झारखंड आ ,प्रायः आधा मिथिला घुइम-घुइम क कलाकार आ लोकेशनक चयन कएल गेल छल। हमर काज छल चरित्रज्ञानुरूप कलाकारक एवं उपयुक्त स्थल के पसिन्न केनाइ जे सब कमिश्नर साहेब स्वयं देखि चुकल रहइथ। घर, मकान, मंदिर-प्रांगण हाजत, कोर्ट, बाजार,शॉपिंग मॉल, पार्क, डी.एस.पी. चैम्बर, जल प्रपात, सूपर स्पेशियलिटी हस्पीटल, मैदान, खेत, कुआँ, रेलवे- स्टेशन... समस्त रियल लोकेशन पर शूट कयल गेल। ओना एकगोटे, प्रोडक्शन मैनेजर क रूप मे हरदम उपस्थित रहैत छला, किंतु समस्त व्यवस्था कर परइ छलइन अजय सिंह महोदय के.....

टेलीविजन सिरीजक अतिरिक्त हमरा लोकइन, अनेक काज केने छी, जेना- शार्ट फिल्म, टि.भी. सी . म्यूजिक एम. भी, एवं प्रत्येक क्षेत्र मे हुनका काज करइत देइख अवाक भेल छी। एक दिस प्लानिंग, कम्यूनिकेशन तथा एक्जिक्यूशन त दोसर दिस रचनात्मकता - कथा सोचनाइ स्क्रिप्ट लिखनाइ —दूनू सम्पूर्ण स्त्रे फराक काज किन्तु ओ दूनू तरहक काज के संपूर्ण दक्षताक संग करइत छलाह।

एंट्रेप्रेन्योर

हमर कमिश्नर साहेब, स्वाधीन चेतना स संपन्न उदयोगी पुरुष छलाइ। एक दिन बजलाह जे हमरालोकनि बेस काज सब क रहल छी आ आगुओ काजक सुयोग सब आओत। तकरा एडिट करक लेक, स्टूडियोक खाली हेबाक प्रतीक्षा कर पड़त अथवा ओकरा अनुसारे काज कर पड़त! त किएक ने हम सब अपन एडिट-सेटअप बनाबी।' बस किछुए दिन मे हुनकर लेक -गार्डन्स आवास के निचला तल्ला पर एकटा नीक एडिट सेट-अप तैयार भ गेल । तखन, हम सब अपन समस्त काज ओहोठाम कर लगलौं। '**नैन न तिरपित भेल**' क पाहिल पर्याय प्रायोजक छल एकटा आडियो-भिजुअल आर्ट्स कंपनी आ बाद के समस्त निर्माणक, फिनांस समेत समस्त प्रायोजकिय कार्य- व्यापार अजय सिंह अपना कान्ह पर ल ललेइन। एहने उदयोगी लोक छलाह ओ ।

चाइर टा लड्डू

हम मार्निंग कालेज में पढ़बइ छलौ। से कालेज स सोझे लेकगार्डेन्स जाइ जत एडिट के काज चलइ छल। एक दिन लगभग डेढ़-दू बजे घरक काज केनिहाइर आबि कहलइन जे अहाँ के 'मासी माँ' ऊपर बजबइत छइथ। ऊपर जा क देखलौं जे 'मासी माँ' डाइनिंग टेवल पर बइसल छइथ, टेबुल पर भातक थारी, झांइप के राखल अइ - 'तोहर त भोरके कालेज ने' भोजन क ले। से जहिया हम कॉलेज स लेक गार्डेन्स जाइ हमर दुपहर क भोजन ओत्तहि हुअए। हम त शाकाहारी लोक, से हमरा लेल केक पर्यन्त एग-लेस बनाबइथ 'मासी माँ'। एकदिन प्रायः चाइर बजे अजय सिंह एडिट रूम मे एलाह, हाथ मे दू टा प्लेट, प्लेट में मुढ़ी, चुड़लाई आ तीलक लड्डू, 'माँ पठौलइन खा लिय!' तहिया स हम सभदिन प्रतीक्षा करी। चूड़लाई -लड्डू अबइत आ बुझितों जे चाइर बाइज गेलइ।

'मासी माँ' माने अजय सिंह क माए डा. अणिमा सिंह, धारावाहिक आ शार्ट फ़िल्म प्रायोजिका। अजय सिंह छलाह एहि संपन्न शिक्षित परिवारक । एहि परिवारक अनेक गोटे के हम खूब लग स देखने छी।दादा उदय नारायण सिंह संगे अवश्य अन्य सूत्र स आलाप भेल। कमिश्नर साहेब दुआरे हमरा अनेक लोक सब स संपर्क भेल। सीताराम सिंह, राजीव झा, तथा कुणाल जी सन गुनी-जन संग परिचय भेल। हम सब एक संगे काज केलौं।

मोबाइल फोन

हमरा लग एकटा नोकिया फोन रहए जे हमरा बेस प्रिय छल। से हमर अपने असावधानी स हेरा गेल। हम ततेक व्यथित भेलौं जे आवेश मे फोनक व्यवहार केनाइ छोइर देल। फलतः अन्य लोकक अतिरिक्त कमिश्नर साहेब स बातचित वाधित भ गेल। ओ हमरा पर खूब जोर स खिसिया गेला। ओहि काल मे हम अपन सम्पर्कितक नंबर हुनका देने छलियइन। एक बेर हम अपन पहिल फिचर फिल्मक स्क्रिप्ट सुनेबाक लेल प्रायोजक दिलीप सरकार ओत, सिमूलतला गेल रही । एहि बीच, मिथिला दर्शनक काजक लेल पटना जेबाक आवश्यकता भेलइन अजय सिंह के।

सिमूलतला शिडयूल समाप्त होइते पटना एबाक व्यवस्था क एक गोटे स संपर्क करओलइन। से ओहि दिन दुपहर हम हुनकर पठाओल गाड़ी स सिमुलतला स जसीडीह लेल रवाना भेलौं। ओत स पटना के लेल ट्रेन पकड़बाक छल। जसीडीह जाइत काल ड्राइवरक फोन बाजल। आश्चर्यजनक रूप स ड्राइवर बिना फोन आँन केने हमरा दिस बढ़ा देलक 'सर जी, आपका फोन है! बात किजिए'... किछु बुझबाक पाहिने ड्राइवरक फोनपर हमरा मुँह स हलो बहरा गेल। तखने ओम्हर स कमिश्नर साहेबक आवाज आएल — अहां त बेस लापरवाह लोक छी। अहां संगे योगायोग नइ रहला स त काज मे असुविधा भ जाइए। एहना मे अहां के सबकिछु पूरापुरी कहनाइ असंभव भ जाइए – बुझागेल, बेस तमसा गेल छइथ। खैर। ओ हमरा ट्रेनक डिटेल, कोच नंबर, सीट नं. समय, सबटा बतओलइन। जे-से हम जसीडीह पहुंचलौं। ट्रेन आएल। बताओल बोगी मे चढ़लौं आ अपन सीट ताक लगलौ हाठात एकटा आवज आएल —'एहिठाम। हे यौ! एमहर आउ! देखइ, छी जे बीचक रो मे, खिड़की लग बइसल कमिश्नर साहेब हाथ हिला रहल छइथ। जा क बइसलौ। तुरन्ते ओ अपना बैग स नवका कीनल नोकिया शिल्ड फोनक बक्सा बहार केलन। दूनू के दूनू दामी फोन। ओहि मे स जकर फीचर बेसी, से हमरा दिस बढ़ा देलइन। दोसर अपना लग रखलनि। इम एहि घटनाक लेल एकदम्मे तैयार नही रही, से बलात चेष्टा केलौं —एत्तेक दामी फोन— ओ हमरा रोकइत बजला– देखू ई अहां के कत्ते काज आओत से हम नइ जानी। मुदा हमरा काजक लेल इ अहां लग

रहए, से आवश्यक। आर फोन की दामी होयत। दामी त कम्यूनिकेशन छी। मोन राखू जे अहां लग फीचर फिल्मक काज अछि, जे किछु दिन में आरम्भ भ जायत। खैर से सब छोड़ू । जनइ छी जे हम एहि मोबाइल के टेक्नोलोजी लेल साफे अनाड़ी छी। से हमरा फोन मे पूरना फोन स सब डाटा ट्रांसफर क दिय। एकर बाद ओ त सुइत रहलाह आ हम 'हा' केने हुनका दिस तकिते रहि गेलौं।

हठात लागल जे ठाढ़ भेला पर ओ जते नमहर छइथ ओइ स बेसी एहि अर्धसुप्ता अवस्था मे बुझा रहलाहए... फेर हम डेटा ट्रांसफर कर मे लाइग गेलौं–

मिस्टर सिंह

पटना, रांची,बेगूसराय, सहरसा, भागलपुर, धनबाद, हम हुनके संगे गेल छी। '**मिथिला दर्शनक**' काज त होइते छल संगहि स्थान भ्रमण सेहो होइ छल। होटल,गेस्ट हाउस, हुनका आवास, सबठाम संगे रहल छी। हमरा जल्दी सुतबाक लेल चरिआबइत रहइत छला। बाद मे बुझलौं जे ओ फोंफ कटइ छला। तौं ओ पहिने हमरे सुतबइ छला। हुनका विश्वास छलइन जे पहिने सुतल लोकक कान में दोसरक फोंफ नइ ढुकइत अछि। हमरा दुनूक बीच एकटा सुन्दर बंधुत्व भाव तैयार भेल छल मिथिला दर्शन पत्रिक लेल एक नीक इल्युस्ट्रेटर क दरकार हो, कि कंप्यूटर, में कोन-कोन फीचर हो की साफ्टवेयर लेल जाए... सब बात मे हमरा स पुछिते टा छलाह। हमर पहिल फिचर फिल्मक लेल प्री- प्रोडक्शन स ल क. फिल्म सम्पूर्ण हेबा तक हुनकर सहयोग भेटइत रहल । एत तक जे अनेक व्यक्तिगत कार्य व्यापार पर्यंत मे हम हुनका पर निर्भर होइत गेल रही।

सिनेमा देखनाइ हुनका बड्ड-प्रिय छल। बाहर स कलकत्ता आबइथ त फोन करइथ, चइल आउ। सिनेमा देखबाक छइ। फेर कनिए कालक बाद फोन आबए, ड्राइवर के अपन पता बुझा दियउ, अहां के संग क लेत। सिनेमा स बहराइते प्रायः सब बेर बजितइथ- जनइ छी! मैथिली मे एकटा उत्तम फिल्म बनबहि परतइ—

हमर पहिल फिल्मक शूटिंग देखक लेल धनबाद स अपने ड्राइव क क सपत्नीक मुर्शिदाबाद पहुंइच गेल रहइथ। सिनेमा प्रिमियर मे सेहो सपत्नीक उपस्थित भेलाह! सिनेमा देखलाक बाद कहलनि— - एहि फिल्म के नेशनल एवार्ड भेटत–

एवार्डक घोषणाक बाद फोन केलियइन त बजलाह—हमरा की कहइ छी– हम त पहिने घोषणा क चुकल छी।

नियमित रुप स प्रायः एक स डेढ़ घंटा पूजा करइ छला। परन्तु सब तरहक धार्मिक गोलमालक विरोधी रहइथ। मनुष्य मात्र स प्रेम छलइन। लोकक बीच रह चाहइ छलाह। हुनकर स्वभाव छलइन- सहमर्मिता।मिथिला आ मैथिली के लेल अगाध नेह रखइत छला। हरदम किछ ने किछ करक लेल सदैव व्याकुल रहइ छला। आइ अनेक संस्था के एफ. सी. आर. ए. रिन्यू करक लेल फिफिआइत देखइ छी, हुनका देखने छी अनेक छोटो-खांट संस्था के अनुमोदन क सहायता करइत। हमर अपने एक परिचित स्वास्थ्य लाभक उपरांत पिता के नर्सिंग होम स नइ रिलीज नइ करा पाइब रहल छल। कारण छलइ टाकाक अभाव। बात अजय सिंहक कान में गेलइन आ सबटा व्यवस्था भ गेलइ। टालीगंजक एक साउंड रिकार्डिस्ट क किडनी ट्रांसप्लांट क लेल पर्याप्त सहायता केलथिन, आइ ओ स्वस्थ आ कार्यरत अछि। असल में अजय बांग्लाक पुत्र होइतो ,मिथिलाक लोक आ मिथिलाक पुत्र होइतो बांग्लाक लोक छलाह। हुनका ह्मदय रोगक शिकायत छलइन आ स्टेंन्ट लगाओल गेल रहइन। मेडिकल साइंसक अनुसार हुनका को-मरवियूटी छलइन जे कोरोना केस में भयंकर बात भेल। किन्तु की हुनक अवसान कोरोना दुआरे भेल? हम निश्चित छी जे ओ कोरोना दुआरे नइ मुइलाह... संभव छइ कोरोना दुआरे मुइलाह? कोरोना नेचुरल अछि कि मैन-मेड से वितर्क चलइत रहतइ, किंतु जाहि लेल वितर्क नइ, से भेल कोरोनाक कृत्य —कोरोना मनुष्यक विच्छिन्न क देलकइ। मनुखक लग स मनुख के दूर हटा देलकइ। मनुष्य टेक्नोलॉजिक गुलामी मे एसगर भ गेलए —आर ओ एकाकित्व स डेराइ छला, घृणा करइ छला—सम्भवतः ओ एसगर भ जेबाक अभिमान मे चइल गेलाह...

जखन हमरा हुनकर मृत्यु-संवाद भेटल, विश्वास नइ भेल। हमरा आँखिक सोझा अन्हार पसइर गेल... कान मे बाज लागल घोड़ा के टाप–, तुषार प्लावित संध्या जंगलक बाट घोड़ा पर चढ़ल रावर्ट फ्रास्ट जा रहल छइथ— एन्ड माइल्स टू गो, बिफोर आइ स्लीप..., आर तकर ठीक बाद मिस्टर सिंहक चेहरा आंइख, गाडी चलअओनाइ, चुप रहनाइ... यस कहनाइ, ट्रेन मे अर्धसुप्तावस्था... सब जेना फ्लैसेज मे आब लगल मोन मे उधिआइत रहल... आ भेल— माइल्स ही वेन्ट, विफोर ही स्लेप्ट इएह सत्य छी.. हुनका लेल इएह सत्य —क्रमशः मन शांत भेल ।' **सबटा कालक छइ कराल रस— सबकिछु समयक दास**' फेर रबीन्द्रनाथ ठाकुरक कथा, 'सबके जाइत देखइ छी...तैं जीवन हरियर लागइए...' हरियरिए त ओ चाहइत छला...

हम हुनका मि. सिंह कहितियइन। सबकिछु में हुनकर परफेक्ट प्रोफेशनलिज्म हमरा अद्भुत लगइत छल। तै अनजानहि मे हुनका संबोधित करइत हम फार्मल भ जाइ— आर नेनहि स जे सीखइत आएल छी, जे अइछ, सएह प्रेजेन्ट आ की कन्टीन्यूयस- की जाइन, एहि बोधक अनुसार एखनो कोनो समस्या आओत, भावना आओत त मोबाइल पर हुनकर नंबर सर्च करक लेल आंगुर अपने आप चल लागत...... आर एखन, पुनर्जन्म पर विश्वास करक इक्षा होइए।

(बांग्ला स अनुदित)

सम्पर्क : 94330 06688

एक बेछप-विरल व्यक्तित्व

• **सीताराम सिंह** *(संगीतकार)*

2004-05 स ल क 2020-21 तक अजय सिंह स संपर्क आ **मिथिला दर्शन मीडिया प्राइवेट लिमिटेड** क लेल कएल गेल हमर समस्त काज आह्लादकारी संस्मरण स परिपूरित अइ । हुनकर नाम मात्र सोचिते ओ सबटा चलचित्र जकां मष्तिष्क-पटल पर दृश्यमान भ जाइए....ओहि मे स की कहू आ की नइ ......
2004 मे कुणाल जी स ज्ञात भेल जे **स्वस्ति फाउंडेशन** नामक संस्था, विशिष्ट विद्वान आ मैथिली आन्दोलनी, प्रबोध नारायण सिंह क नाम पर ,मैथिली साहित्य क सबस पइघ सम्मानक योजना बनअओलकए। उद्‌घाटन-सम्मान, विशिष्ट कथा-शिल्पी लिली रे के, भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना मे प्रदान कएल जेतइन ।एकर समस्त व्यवस्था क भार हिनके पर छलइन। से सांस्कृतिक कार्यक्रम (गीत - नाद) क लेल हम अपन वादक-गायक दल संगे कुणाल जी क नाटक दल मे शामिल भ गेलौं।ओत्तहि औपचारिक रूप स नचिकेता जी स आ अजय सिंह स परिचय भेल। हम एतबे बूझल जे नचिकेता जी मैथिली क कवि-नाटककार, विश्व प्रसिद्ध भाषाशास्त्री छइथ आ अजय सिंह ,कमिश्नर इनकम टैक्स। दूनू प्रबोध बाबूक पुत्र छइथ ।परंतु, आचरण आ व्यवहार स अनुभव भेल ई लोकइन सामान्य आयोजक नइ,सह्मदय-सांस्कृतिक लोक सब छइथ, कला-कलाकारक प्रति नेह-आदर स परिपूर्ण। इएह भाव आयोजन मे हिस्सा लेनिहार समस्त कलाकारक मोन मे छलइ।...ई अजय सिंह संग हमर सांगीतिक-संवन्धक शुभारंभ छल जे क्रमशः पारिवारिक-आत्मीय भ गेल।
सम्मान-कार्यक्रम क तीन-चाइर दिनक उपरांत नचिकेता जी क फोन आएल। ओ कहलइन,'अनुज अजय, हमर एकटा नाटक के आधार पर मैथिली क पहिल मेगा- सीरियलक निर्माण क रहलए। से ओ सीरियल मे संगीत क लेल अहां स बात कर चाहइए।'हम सहर्ष स्वीकृति देल। एकर दुइए दिनक बाद हमरा लग किछु गीत पठअओलइन, जे एकर संगीत सोचियउ। संगहि, तीन दिन आगू क कलकत्ता क टिकट सेहो आएल-दू गोटे क लेल।हम चकित छलौं जे अजय सिंह मात्र टास्क -मास्टर नइ व्यक्तिगत असुविधा-सुविधा क ध्यान सेहो बिना कहने राखइ छइथ।हम एसगर यात्रा नइ क सकइ छी, तैं दू गोटे क टिकट .....
अस्तु,हम कलकत्ता पहुँचलौं।संग मे गीत सभक तीन-तीन धुन ल गेल रही।स्टेशन पर गाड़ी आ रिसीव करक लेल लोक हाजिर। लेक गार्डेन्स पहुँचलौं। ओत्तहि अणिमा सिंह स भेंट भेल। मोन कहलक,' जैं एहन माता, तैं एहन पुत्र!.... सुभयस्त हेबाक सब सुविधा प्रस्तुत छल।सुभ्यस्त भेलौं। लोक सभक जुटान भेलइ। सीरियल निर्देशक सोमनाथ गुप्त, कार्यकारी निर्माता मल्लिका जालान, अणिमा सिंह, अजय सिंह आर किछु गोटे....। सब गोटे धुन सुनलइन। सबके सब धुन पसिन्न भेलइन। अंतिम निर्णय हमरे पर छोड़ल गेल। माने, हमरा सीरियल क संगीत निर्देशक बना देल गेल। फेर मल्लिका जालान पुछलइन जे हमर पारिश्रमिक की होएत? हम त व्यवहार आ मान-दान स ततेक ने अभिभूत रही जे मुद्रा क बात केनाइ क्षुद्रता लागल। कहलियइन जे फीस के बात अहां सब जानू। हम त बस काज करब। मल्लिका जालान कहलइन जे 'एकबार सोच लीजिए'। कहलियनि, सोच लिया।.....हम अजय सिंह क टीम भ गेलौं।जे देलइन से पर्याप्त होइ छल आ मान-सम्मान त एत्ते जे ह्मदय भरल अइ... भरल रहत।
अजय सिंह टीम-वर्क के पक्का प्रैक्टिशनर छला ।सब काजक लेल, हुनका लग फराक टीम छल।रचनात्मक विधा मे, सोमनाथ गुप्त, कुणाल जी आ हम हुनकर टीम छलौं। सोमनाथ जी स सम्पर्क त मात्र हुनके दुआरे भेल।फेर क्रमशः हम जेना हुनकर परिवारक लोक भ गेलियइन आ हमर कतेको व्यक्तिगत समस्या के ओ अपना जकां समाधान केलइन ..फेर तकर चर्चा पर्यन्त नइ,मानू जे ओ सब किछु भेबे नइ कएल।
सीरियल मे अनेको गीत देलइन। किछु पारम्परिक आ किछु नचिकेता लिखित आधुनिक गीत। एक दिन बाते- बात मे कहलियइन जे मैथिली साहित्य त उच्चता प्राप्त केलकए। उत्कृष्ट गीत सब लीखल जाइए। शानदार पारंपरिक राग-भास छइ।मुदा आधुनिक संगीतक क्षेत्र मे मैथिली पछुआएल अइ ।जेना बांग्ला मे '**आधुनिक बांग्ला गान**' छइ तहिना मैथिली मे सेहो होइतइ! सप्ताह दिनक अभ्यंतरे योजना तइयार क लेलइन। फेर नचिकेता जी द्वारा दस टा गीत लीखल गेल। संगीतवद्ध भेल।नामी कंठशिल्पी (उदित नारायण, भूपेंद्र, रंजना झा, नंदिता चक्रवर्ती, मनोमय भट्टाचार्य...) क स्वर मे रिकॉर्ड भेल। सोमनाथ जी ओकर वीडियो केलइन। गीत सब मिथिलादर्शन यू ट्यूब चैनल पर उपलब्ध अइ।
हमर पचास बरखक सांगीतिक जीवन मे अजय सिंह एकमात्र व्यक्ति छलाह जे सायास पर्दाक पाछां रहि समस्त काजक कुशल संचालन केलइन। कहिओ ई नइ कहलइन जे ई खर्च किए? हुनकर रचनात्मक टीम एहि बात के गमि क 'एस्थेटिक्स ऑफ मिनिमम एक्सपेंडिचर' क सिद्धांत के लागू केने रहल। बिना कहने अपन मोनक अनुसार काज करा लेनिहार विरल होइ छइथ। अजय सिंह एहने विरल व्यक्तित्व छलाह।

एकबेर अपन लेक गार्डेन्स, कलकत्ता, मोहल्ला क दुर्गापूजा क थीम रखलइन–मिथिला।हमरा थीम म्यूजिक तइयार करबाक काज भेटल ।हम कहलियइन जे ई काज हम बिना पारिश्रमिक के करब। एक तरहे तमसाइए गेला'......नहि।कलाकार के कखनो फ्री मे काज नइ करक चाही। ई पूजा समिति क फ़ंड छियइ। बजट मे संगीतक लेल जे निश्चित हेतइ से लेब पड़त।' आर ओ पारिश्रमिक, हमर सोच स बेसीए छल।

हुनका सनक गुणीक सम्मान केनिहार दोसर नइ भेटल। ओएह छलाह जे हमरा 'पंडित सीताराम सिंह 'कहलइन। हमर विरोध के कटइत बजलाह, 'हमरा लेल अहां संगीतक पंडित छी। बस।'

हम सौभाग्यशाली छी जे लगभग डेढ़ दशक तक हुनकर संसर्ग मे रहबाक आ काज करबाक सुयोग भेटल।

सम्पर्क : 74881 67976

सह्रदय अभिभावक

• **रूपम झा** *(अभिनेत्री)*

मित्र मंडली द्वारा खबइर भेटल जे सहरसा मे एकटा मैथिली धारावाहिक के ऑडिशन भ रहल छइ। हमहूं गेलौं।धारावाहिक मे अभिनय क सुयोग त भेटबे कएल। अही क्रम मे अजय सर स पहिल भेंट भेल।हमरा लागल जे ई निर्माता स बढ़ि क एक अभिभावक छइथ। क्रमशः ई धारणा गाढ़ होइत गेल।....अजय सर, माने निर्माता क दम्भ स रहित, इन्कम टैक्स कमिश्नर क गुमान क लेश नइ, बस एक खेयाल राख बला, स्ह्रदय अभिभावक। जत कतहु शूटिंग भेल,कलकत्ता मे कि सोनबरसा मे, अपन काज स समय बचा क उपस्थित होइ छला। एकमात्र जिज्ञासा होइ छलइन जे रहन-सहन, यातायात मे की कोनो आन तरहक असुविधा त ने अइ। हमरा त लागए जे हमर पिता हमर कुशल-क्षेम जाइन रहल छइथ।...एक पुत्री जकां दुलार देलइन... अदभुद रूप स उदार, प्रेरणादायी व्यक्तित्व क स्वामी छलाह अजय सर।

सीरियल के बाद हम हुनका द्वारा निर्मित दू टा लघु फ़िल्म मे काज केलौं। संजीव जी (संजीव पांडेय,मिथिलादर्शन के मार्केटिंग मैनेजर) के हम अजय सर के नामे सुइन क 'हं' कहि देलियइन आ एसगरे पंडौल चइल गेलौं ...अजय सर के प्रोजेक्ट छइ त कोनो प्रश्न निरर्थक। अहां अपन काज स संतुष्ट क सकी कि नइ, हुनकर व्यवहार स असंतुष्टि क सवाले ने ....सुखद संयोग ई जे हमर जीवनसाथी सेहो अही प्रोजेक्ट मे भेटला। हेमंत ,गोरकी फ़िल्म क नायक छला आ हम नायिका। अजय सर के अपन निर्णय क सूचना देलियइन, अनुमति मंगलियइन त ओहिना प्रसन्न भेला जेना एकटा पिता के हेबाक चाही।

प्रत्येक पाबइन -तिहार क अवसर पर फोन करिते टा छलाह आ हम हुनक आशीर्वचन स आह्लादित होइ छलौं। अंतिम बातचीत 01.01.2021 क भेल रहए, नव वर्ष क शुभकामना क अतिरिक्त आगामी योजना द सेहो कहलइन। हम मोने मोन गुड़ - चाउर फ़ंकइत संजीव जी क फोन क प्रतीक्षा कर लागल रही ....

ख़बइर भेटल... हुनक अवसान क .... विश्वास नइ भेल ...हम दूनू गोटे बहूत दिन तक इएह कामना करइत रहलौं जे ई ख़बइर झूठ हो.... मुदा ओ त सत्ते चइल गेलाह... मैथिली सिनेमा आ संगीत क बहूत रास योजनाक संग चइल गेलाह ... मैथिली भाषा मे अधिकाधिक स्तरीय ऑडियो-विज़ुअल काज हुनकर आत्यंतिक कामना छल... हुनकर निष्क्रमण, मैथिली भाषा क मनोरंजन विधा क विराट क्षति अइ। ई क्षति कहिओ पूरा नइ होएत।

हुनकर आत्मा क शांति क लेल प्रार्थना करइ छी, श्रद्धा-सुमन अर्पित करइ छी।

सम्पर्क : 83404 53582

अनन्य मैथिली हितैषी अजय सिंह

• **नबो नारायण मिश्र** *(संस्कृतिकर्मी)*

2004ई. के ओ दिन कोना, बिसरि सकैत छी जहिया हम मिथिला मैथिलीक शुभचिंतक अनन्य हितेषी अजय सिंह (सुपुत्र प्रबोध नारायण सिंह) सँ भेट करवाक निमित्त हुनकर आयकर विभागक कार्यालय गेल छलहुँ। ओ आयकर विभाग मे उच्च पद पर आसीन, पोद्दार कोर्टक कार्यालय में कार्यरत छलाह।

भेंट करवाक प्रसंग छल जे स्वस्ति फाउन्डेशन उच्चकोटिक मैथिलीक साहित्यकार के प्रतिवर्ष एक लाख टाकाक पुरस्कार आ प्रशस्ति-पत्र स सम्मानित करबाक घोषणा 2004 ई में कयने छल। ओहि सम्मान-समारोह कें भव्य बनेबाक दृष्टि सँ एकटा बरेण्य साहित्यकार द्वारा उदघाटन, अभिभाषण पश्चात नीक सभागार में प्रस्तुत करबाक योजना छलन्हि। प्रथम वर्ष एहि कार्यक्रम के शुभारम्भ पटना में भेल छल।

एहि भेंटक हमर उदेश्य छल जे प्रबोध बाबू बीमारीक कारणे कलकत्ता से बाहर नहि जा सकैत छलाह। एइन महत्वपूर्ण कार्यक्रम देखवा सँ ओ स्वयं बंचित रहताह। प्रबोध बाबूक कार्यक्षेत्र कलकत्ता रहलन्हि अछि। अस्तु कलकत्ता मे एहन आयोजनक बेसी सार्थकता छैक। यद्यपि एहि विषय में, एहि स पूर्व कोकिल मंच के सचिव होयवाक कारणे हम नचिकेता जी सँ एहि प्रसंग में व्यक्तिगत रूप सँ पत्राचार कयने छलहुँ।

अजयबाबू सब बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार करैत पुनः दोसर दिन भेंट करबाक हेतु कहलन्हि। प्रथमे भेंट में एहन आभास भेल जे हुम दुनू गोटे एक दोसर सँ पूर्वहि सँ पूर्ण परिचित छी।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम क अनुसार दोसर बैसार में नचिकेताजी आ अजय बाबूक सहमति सँ ई तय भेल जे कलकत्ता में ई कार्यक्रम हमरे सभहक सहयोग से सुचारू रूपें सम्पन्न होयत।

तत्पश्चात हम कोकिल मंचक कार्यकारिणी समितिक सम्मुख ई प्रस्ताव रखलहुँ आ सर्वसम्मति सँ निर्णय भेल जे हम सभ एहि कार्यक्रम के अवश्य सफल बनावी।

तत्पश्चात हम संस्थापक निर्देशक गंगा झा कें संग तेसर बैसार मे उपस्थित भेलहुँ। तकरे फलस्वरूप 2005 ई0 में प्रबोध साहित्य सम्मान समारोह कलकत्ता मे भेल जाहि मे सुप्रसिद्ध नाटककार महेन्द्र मलंगिया के ई पुरस्कार प्रदान कयल गेल छल। उक्त अवसर पर कोकिल मंच, कलकत्ता द्वारा नचिकेता लिखित मैथिली क मौलिक नाटक 'एक छल राजा' के मंचन गंगा झा के निर्देशन में 12 जून 2005 क महाजाति सदन प्रेक्षागृह में सम्पन्न गेले।

पुनः 12 फरवरी 2012 में प्रबोध साहित्य सम्मान समारोहक अवसर पर ई सम्मान सुप्रसिद्ध साहित्यकार राम लोचन ठाकुर के प्रदान कैल गेल। उक्त अवसर पर महेन्द्र मलंगिया लिखित 'गोनू गवाह' के मंचन गंगा झा जी के निर्देशन में कोकिल मंच द्वारा महाजाति सदन प्रेक्षागृह में सम्पन्न भेल। उपरोक्त दूनू कार्यक्रम में अपन गाड़ी आ ड्राइवर हमरा ऑफिस में पठा दैत छलाह जे कार्ड बेसी स बेसी लोक, धरि अहाँ पहुंचा सकी! आर जे कोनो सहयोग हमरा से अपेक्षा हो से व्यक्त करू, हम पूर्ण करबाक प्रयास करब। एहि मध्य हुनकर बालीगंज, बिड़ला मन्दिरक ठीक बिपरीत दिशा में सरकारी आवास आ लेक.गार्डन्स मे पैतृक आवास पर भेंट होइत रहलाह से अति विनम्रता,आत्मीयताक संग जकर वर्णन हेतु शब्द कम पड़ि जाइत अछि।

उपरोक्त एहि दुनू कार्यक्रम में जँ रामलोचन ठाकुर आ अजय सिंह के सहयोग हमरा नइ भेटल रहैत त कोकिल मंच द्वारा एहन भव्य कार्यक्रम कथमपि नहि भ पबैत।

मैथिली टेलीफिल्म निर्माणक क्रम में अजयबाबू सँ बेसी गप्प होइत छल। ताहि अवधि में पुरुष आ महिला पात्रक जतय आवश्यकता भेलन्हि से यथासाध्य हम सहयोग कयलियन्हि। महिला पात्रक विशेष प्रयोजन छलन्हि ताहि मे कोकिल मंचक रंगकर्मी बन्दना झा के हम तैयार कराओल जाहि मे बेलगाछिया स्थित ओहि आवास पर कतेको बेर दौड़य परल आ अन्ततोगत्वा ओकरा स स्वीकृति भेटल छल।।

मिथिला दर्शनक कार्यालय हुनक पैतृक आवास लेक गार्डेन्स में अवस्थित छल जतय पत्रिकाक रूप-रेखा तैयार कयल जाइत छल। बेसी काल, रवि दिन, रामलोचन ठाकुर प्रूफ देखबाक हेतु ओतय उपस्थित रहैत छलाह। हुनका सँ फोन पर गप्प भेलाके पश्चात यदाकदा हम ओतय भेंट करबाक हेतु जाइत छलहुँ। एक दिन मकानक दरबाजा पर घंटी बजौला उपरान्त अजयू बाबू स्वयं गेट खोललन्हि आ सूचित कयलन्हि जे ठाकुरजी अणिमा जी संग. उपर के तल्ला पर पत्रिका-सम्पादन में व्यस्त छथि। ओ फोन सँ ठाकुरजी के सूचित कय नीचा तल के कक्ष में बजौलन्हि आ तीनू गोटे दीर्घ काल धरि पत्रिकाक संग मिथिला मैथिलीक प्रसंग बिचार विमर्श करैत रहलहुँ। कोलकाताक बाहर सँ आयल कोनो साहित्यकार के ठाकुरजी, विशेषतः रवि दिन मिथिला दर्शनक कार्यालय लेक-गार्डेन्स मे बजा क भेंट करैत छलाह आ तकर पूर्व सूचना हमरा अवश्य दैत छलाह जाहिस ओहि बैसार मे हम सम्मिलित होइत रहलहुँ। जतय अजय बाबू आ रामलोचन ठाकुर भेटि जाइत छलाह एक्कहि संग।

सभा संस्था आ मिथिला मैथिलीक अतिरिक्त - अजय बाबू एकटा व्यक्तिगत उपकार हमरा पर कयने छलाह जकर हम हिनकर ऋणी छी।

2012 ई मे हमर बालक के इन्जीनियरींग मे नामांकन कराबय गेल छलहुँ। ओतय आवेदन फार्म मे इ उल्लेख छलैक जे जाहि छात्रक अभिभावक क सलाना आमदनी तीन लाख टाका सँ कम छैक तकरा फीस में कॉलेज द्वारा किछु प्रतिशत छूट देल जायत। तकर प्रमाण-पत्र आयकर कार्यालय सँ निर्गत भेल हो। आय प्रमाण-पत्र फार्म के सँग संलग्न केलाक उपरान्त ई लाभ भेटि सकत।

हम ओही श्रेणी में छलहुँ। मात्र नामांकन के लेल एक दिन शेष छल। प्रात भेने जँ नामांकन के अन्तिम दिन कोनो कारणवश नहि भेल त छात्रक एक साल बेकार चलि जायत। समय बहुत कम छल आ सरकारी दफ्तर में सर्टिफिकेट बनावहि में समय सीमा पार भ जाइत।

रहन कठिन घड़ी में हटात अजय बाबू मोन परलाह। कॉलेज मे तीन बजि गेल छल आ ओतहि सँ हुनिका फोन पर ई गप्प केलियन्हि। ओ सहर्ष कहलन्हि जे हम एखन ऑफिसे मे छी। अहाँ शीघ्र आउ हम सर्टिफिकेट बना दैत छी। सायंकाल पांच बजे हुनिकर कार्यालय पहुँचलहुँ आ संगहि -संग टाइपिस्ट के आदेश देलखिन जे एहि फॉर्मेट मे सर्टिफिकेट बनाउ। जावत एहि कार्य मे समय लगलैक ताबत धरि हमसभ चाह पिबैत अन्यान्य बात मे लागल रहलहुँ।

तपश्चात ओ सर्टिफिकेट बना देलनि जाहि सँ हमरा बालक के पढ़ाई में फीसक किछु प्रतिशत छूट भेटल। आजुक समय मे एहन परोपकारी लोक भेटब, असम्भव
कतेको व्यस्त रहितहुँ मिथिला- मैथिलीक नाम पर ओ समय अवश्य निकालि लैत छलाह।हुनक बहुत योजना सब मैथिली हित में छल जे दुर्भाग्यवश अपूर्ण रहि गेल। एहि कारणे मैथिली जगत के बड़ क्षति भेलैक अछि। ओना त वैश्विक महामारीक कारणे भारते नहि अपितू सम्पूर्ण विश्व एहि सँ प्रभावित भेल। मुदा
कोलकाताक मिथिला- मैथिली हेतु 2021 ई0 अशुभ सिद्ध भेल अछि, जाहिमे चारिटा प्रमुख व्यक्तित्व हमारा लोकनिक बीच में नहि रहलाह!

(1)मैथिली सेवी संगठनकर्ता-राजकुमार झा (कोन्नगर)
(2) वरिष्ठ साहिहाकार, सम्पादक - राम लोचन ठाकूर
(3) मिथिला मैथिली अनन्य उपासक-अजय सिंह
(4) बरिष्ठ पत्रकार सम्पादक-राज नन्दन लाल दास

हिनका लोकनिक, आकस्मिक अवसान स कोलकाताक मैंथिली गतिबिधि मे जे ह्रास भेल अछि तकर क्षतिपूर्ति निकट भविष्य मे असम्भव। एहि चारु महान आत्माक चिर शांतिक हेतु प्रार्थना करैत विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत छी।

सम्पर्क :93301 73348

मिथिलाक गाम, प्रकृति,मनसा देवी आ ग्रेट ट्रेडिशन पर लिटिल ट्रेडिशनक मोनोपोली

• डॉ. केलाश कुमार मिश्र *(मानवशास्त्री)*

हम साहित्यक लोक नहि समाज विज्ञान, लोकविद्या (फ़ोकलोर), मानव विज्ञान आ कला-विज्ञानक लोक छी। गाम हमरा नीक लगैत अछि। भारत केर अनेक भू-भागक गाम के देखबाक आ अनुभव करबाक अवसर भेटल अछि। गाम पर लिखबाक, बजबाक आ सुनबाक अवसर भेटल अछि। भले गाममे कम रहल होई गाम हमर रक्तमे बहैत रहैत अछि। हमरा लगैत अछि भारत के लोक छोट शहर, नगर अथवा महानगर जत मोन होइक रहय ओकर आत्मा, विचार, संस्कार सदिखन गाममे रहैत छैक। हम सब दिल्ली महानगरमे गाम ताकैत छी आ गाम भेटैत अछि। एखनो भारतक आत्मा गाममे रहैत छैक। मिथिला तकर कोनो अपवाद नहि अछि। अतए के लोक अपन गाम, लोक, माटि आ संस्कृति सँ बहुत सिनेह करैत छथि। हमरा हरेक गामक एक व्यक्तित्व देखाइ दैत अछि। गाम कखनो नीक अधलाह नहि होइत अछि, बल्कि हरेक गामक अपन विशिष्ट संस्कार आ ओकर क्रमवार इतिहास होइत छैक। जेना की कोनो गाम विद्याक हेतु, कोनो धनक हेतु, कोनो कलाक हेतु, कोनो पहलमानी हेतु, कोनो विशिष्ट फल हेतु, कोनो आन तरहक संस्कार हेतु, कोनो धर्मक्षेत्र हेतु, कोनो तीर्थक्षेत्र हेतु ज्ञात अछि आ ओकरा ख्याति भेटल छैक। गाममे जे विभिन्न वर्गक आ जातिक लोक रहैत अछि तकर अपन संरचनात्मक आ कार्यात्मक महत्त्व छैक। इएह सब अनेक बात छैक जकरा पर हमरा 'मिथिला दर्शनमे' खोइंछा-छोड़ा क लिखबाक छल। लिखनाई शुरू केने रही। होइत छल अहि बहाने बहुत बात सब लिखब। लिखब सँ पहिने बुझब आ सीखब। गाड़ीक पहिया पटरी पर चढ़ि गेल छल। गाडी स्पीड पकड़ि लेने छल। अकस्मात बज्रपात भेलैक। एकर कर्णधार कोरोना महामारीक भेट चढ़ि गेलाह। हमरा लगैत अछि आब हमर ई परियोजना बहुत काल लेल जेना पछुआ गेल। खैर! होनी कें कियो नहि टाइर सकैत छैक। शायद कियो फेरो भेटि जाथि जे हमरा लिखबाक लेल चिरिएनाई शुरू करथि। मुदा एखन के परिस्थितिमे ई बात सभ दिवास्वपन जकाँ लगैत अछि।

तँ गामक परिवेशमे अबैत छी। गाम मतलब धरतीक ओ भू-भाग जतय प्रकृति आ संस्कृति ताल सँ ताल मिला सामंजस्य सँ रहैत होथि। गामक लोक जेना पाबनि तिहारमे अपने जुड़ाइत अछि तहिना प्रकृतिक अवयव - खेत, इनार, गाछ, गाय-बरद, महिस आदि कें जुड़बैत अछि। गामक लोक प्रकृति के जीव जंतु जेना की सांप, चिरई तक के जुड़बैत अछि। सांपक मानवीकरण गामेक संस्कृतिमे कएल जा सकैत अछि। बिसहरि गीत सभमे बिसहरि के नायिका बना हुनक श्रृगारक अति मनमोहक गीत मैथिली ललना सभ करैत छथि। बिसहरिक केश विन्यास, कान आ नाकक गहना, बिसहरिक रूसब, सब किछु भेटत। जेना मनुखक वंश बढैत छैक तहिना बिसहरिक वंश बढबाक कल्पना छैक। जहिना मनुखक नामकरण होइत छैक तहिना साँपक नामकरण आ ओकर सम्बन्धीक जाल, मौसा, मौसी, पिसा, पीसी, मामा-भगिनी, छोट-पैघ बच्चा, राजा आ प्रजा बनैत छैक देवता आ मनुख संग जीवन जीबैत अछि।जेना बेटी जमाय अथवा बेटा पुतहु लेल नीक वस्तुक सचार तहिना बिसहरि लेल दूध-लावा। प्रश्न इ उठि सकैत अछि जे आखिर एकर की दरकार? एकर प्रयोजन इ जे सांप मनुख कें नहि काटय। संतुलन लेकिन गज्जब के छैक। अगर सांप बिनती (बिन्नी) निहोरा सँ नहि मनैत अछि त फेरो ओकरा अपन वश मे करबाक हेतु गरुड़, मोर आदि आबि जाइत छैक। आस्तिक मुनि अबैत छथि। सपनौर तँ छैके।इ सब बात एक पाबनि मधुश्रावणी मे, जे एखने बीतल अछि देखबामे अबैत अछि। लोकक एहन भ्रान्ति बनल छैक जे मधुश्रावणी पाबनि मात्र ब्रह्मण, आ कर्ण कायस्थ धरि सिमित छैक। एकर स्पष्टीकरण एक फकड़ा सँ भ जाइत छै। गाम घरमे दोसर जातिक स्त्रीगण सब मधुश्रावणी लेल बजैत छथि : 'बभनिया के दगनिया पाबनि' मुदा सत्य ई छैक जे ई पाबनि आ विशेष रूप सँ मनसा देवीक उपस्थापन, ग्रेट ट्रेडिशन पर लिटिल ट्रेडिशन के भारी बनबैत छैक। इ आलेख ओही बातपर एक लघु किन्तु तथ्यात्मक विवेचना प्रस्तुत करैत छैक।

अगर गंभीरता सँ निष्पक्ष बनि देखी तँ स्पष्ट भेल जायत जे आदिवासी आ तथाकथित निम्न जातिक लोक अधिक 'नाग टोटम' केर छथि। क्षत्रियमे सेहो नागवंशी सबस अंतिम सीढी पर मानल जाइत छथि। अगर नागक सर्वाधिक पूजा कियो करैत अछि तँ ओ वर्ग थिक तथाकथित ओ समूह जकरा लोक बैकवर्ड अथवा पिछड़ी जाति कहैत अछि, मानैत अछि। नागकेँ प्रतिनिधि मानल गेल अछि तथाकथित छोट लोकक सांस्कृतिक धरोहर के जकरा लिटिल ट्रेडिशन कहल जाइत छैक। बिहार, बंगाल,

उड़ीसा, असम, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश आ कश्मीर आ कतेक आनठाम नागक देवी, या सर्वोत्कृष्ट देवी मनसा देवी कैँ पूजबाक परम्परा छैक। ओना लोक परम्परा केर एक लेयर कहैत अछि जे मनसा देवी भगवान शंकर केर मानस पुत्री (Mind-born daughter) छथि। पार्वतीक सानिध्य भेटल छनि, तंत्रक अद्भुत क्षमता छनि, विस्मयकारी स्वभावक देवी छथि। लोक मनसा देवी कैँ क्षणे रुष्ठाा, क्षणे तुष्टा मानैत अछि। शिवक सँग जुड़ला सँ मनसा देवी आरो प्रभुत्वशाली भ जाइत छथि। मुदा शंकर जकाँ औढरदानी सेहो छथि मनसा देवी। तमसा गेलीह तँ सांप सँ डसा प्राण लेतीह, खुश भेलीह तँ सब खुशी सँ घर परिवार भरि देतीह। अइ पर फेर कहियो बात करब। एखन मूल विषय पर केंद्रित करैत कथ्य कैँ आगा बढ़बैत छी।

मनसा देवीक कथा अनेक ठाम पानिक उद्भव आ पानिक गाथा संग चलैत अछि। नाग पञ्चमी आ मधुश्रावणी पाबनिमे अहि कथाक विस्तृत संदर्भ भेटैत अछि। अगर बिहुला आ बाला लखेन्द्रक कथा पर गंभीरता सँ विचार करी तँ मनसा देवी केर स्वरूप स्पष्ट हएत। बिहुला मतलब ओतबे पतिब्रता अपन पति बाला लखेन्द्र लेल छथि जतेक सावित्री अपन पति सत्यवान लेल। सबसँ पहिने ई बुझब जरूरी जे ई बिहुला छथि के? बिहुला छथि बाला लखेन्द्रक व्याहता पत्नी। लखेन्द्र के थिकाह? लखेन्द्र छथि अपना समय के बहुत पैघ, स्थापित आ प्रभुत्वशाली व्यापारी अर्थात सौदागर चंदू सौदागर केर पुत्र। पूरा मनसा देवीक कथा चंदू सौदागर, बाला लखेन्द्र आ बिहुला पर केंद्रित छैक। चंदू सौदागर मात्र भगवान शिव आ विष्णु जीक पूजा अर्चना करैत अछि। ओ दोसर कोनो देवी अथवा देवताक नहि तँ पूजा करैत अछि, नहिये ओकर सत्ता स्वीकार करैत अछि। जखन मनसा देवी कैँ ई पता चलैत छनि जे चन्दू सौदागर आन देवी देवताक पूजा नहि करैत अछि तँ मनसा तामसे भेर भ जाइत छथि। ओकरा ओकर औकात बतबय चाहैत छथि। चन्दू सौदागर यद्यपि कोनो अवस्थामे मनसा देवीक पूजा करबाक हेतु तैयार नहि।

कथा आगाँ बढैत रहैत छैक। मनसा देवी चन्दू सौदागर पर दिन प्रति दिन क्रुद्ध होइत रहैत छथि। हुनका अनेक तरहक समस्या छनि। आर तँ आर, मनसा देवीक कोनो प्रतिनिधि दूत सँ बातचीत करबा लेल सेहो नहि तैयार होइत अछि चंदू सौदागर। 'रे चंदू, तोहर अतेक गुमान!' मनसा क्रोधित होइत सोचैत छथि आ हुनक विष आरो कालक धाप चलय लगैत छनि। मनसा देवी प्रलयंकारी भ जाइत छथि। जेना अग्निक ज्वालामे धू-धू जरैत होथि। मनसा मोनहि मोन निर्णय लैत बाजय लगैत छथि ' रे चन्दू तों घमन्ड सँ चूर भेल छै। हम बतबैत छी तोहर औकात।' ई कहैत मनसा अपन नाग सबसँ चंदू सौदागर केर छह पुत्र के डँसा दैत छथि आ छहो पुत्र मरि जाइत छैक। समस्त नगरमे हाहाकार मचि जाइत छैक। चंदू जेना टूटि गेल हो। बहुत खिन्न भ जाइत अछि दुनू प्राणी। चंदूक सातम आ अंतिम पुत्र लखेन्द्र एखनो जिबैत छैक। मुदा एकटा विकट समस्या ई छैक जे चन्दू केर कुंडलीमे लिखल छैक जे सुहागरातिक रातिमे साँप काल बनि ओकरा डँसि लेतैक। सांप मनसा देवीक रहतैक। आब की हो? चंदू सौदागर बहुत दुखी भ जाइत अछि। की उपाय कएल जाय जाहि सँ बाला लखेन्द्रक प्राण बचय आ वंश समाप्ति सँ बचि जाइक। राति-दिन उपायमे लागल रहैत अछि चंदू। ककरो मादे चंदू सौदागर के ई पता चलैत छैक जे बगल के कोनो गाममे बिहुला नामक एक लड़की छैक जे विवाह योग्य छैक। बिहुलाक हाथक लकीरमे लिखल छैक जे ओ चिर-सौहागवती रहतैक। फेर की? तुरते चंदू सौदागर बिहुलाक हाथ अपन बेटा बाला लखेन्द्रक हेतु मांगि लैत अछि। एहि तरहें बिहुला आ बाला लखेन्द्रक विवाह भ जाइत छैक। कालक भय यद्यपि एखनो बनल छैक। तकरे ध्यानमे रखैत विवाह भेला के बाद वर कनिया के सुहागरातुक हेतु एक सीसाक बाकस बनबाओल जाइत छैक। ओहिमे हवाक आवागमन हेतु सुईक नोक बराबर छेद छोड़ि देल जाइत छैक।

मनसा देवीक लेल अतेक जगह पर्याप्त छनि। मनसा देवी तुरंत बहुत सूक्ष्म शरीर धारण करैत शयन कक्षमे प्रवेश क जाइत छथि आ कोहबरमे प्रेमालिंगनमे नूरियाएल बाला लखेन्द्र आ बिहुलाक जोड़ीमे बाला लखेन्द्र कैँ डंसि लैत छथिन। विष ततेक प्रभावी जे डंसिते देरी बाला लखेन्द्र अपन प्राण त्यागि दैत छथि। आब की हो। पूरा नगर हाहाकार क उठैत अछि।

आब की हो? की बिहुलाक अचिर सोगाहवती बला रेखा गलत छनि? बिहुला एखनो दृढ़ छथि आ लोक कैँ बुझबय चाहैत छथि जे एना कोना भ सकैत छैक? लखेन्द्र कोना बिहुला सँ पहिने अपन प्राण छोड़ि सकैत छथि? बिहुलाक हाथमे तँ चिर-सौहागवती रहबाक वरदान छनि। एना केना हेतैक? बिहुला जिद ठानि दैत छथि जे केराक थम्हक एक मचाननुमा नाव बना बाला लखेन्द्रक पार्थिव शरीरकैँ ओहि पर राखि देल जाय। ओहि पार्थिव शरीरक माथ बिहुला अपन कोरामे लैत केराक मचान पर बैसि जाइत छथि। केराक मचाननुमा नाव के बहैत नदीमे प्रभसा क देल जाइत छैक।

बिहुला अपन पतिक लहास क संग नदीमे मचान पर बहए लगैत छथि - राति दिन, चारु पहर। किछुए दिनक बाद बालाक मृत शरीर सँ दुर्गंध आबय लगैत छनि। मांस सड़ लगैत छनि। बिहुला एखनो हिम्मत नहि हारैत छथि। नदीक प्रवाह संग बहिते रहैत छथि।

चलैत चलैत दूर सँ नदीक एक कछेर पर एक दृश्य देखि अचरजमे पड़ि जाइत छथि। चिंतामग्न बिहुला अपन नाव ओतय रोकि चुपचाप गिद्ध दृष्टि सँ ओहि दृष्यक अवलोकन करए लगैत छथि। देखैत छथि जे एक कमे उमेरिक धोबिन कपड़ा धो रहल अछि। ओकर तीन बर्खक बेटा ओकरे बगलमे बैसल छैक। धोबिन बेटा कैँ संच मंच भेल बैसबाक निर्देश बेर बेर द रहल छैक मुदा ओ

बच्चा अतेक खुरलुच्ची जे सब बेर मायक आगा आबि जाइक। अन्तमे तँग होइत ओ धोबिन अपन बेटा केर गरदनि मरोड़ि दैत छैक। बच्चा बिना उचाबच केने प्राण त्यागि दैत छैक। मुदा तकर कोनो चिंता बिना केने धोबिन अपन बेटाक लाश कैँ एक गमछा सँ झाँपि अपन काजक धुनमे मगन भ जाइत अछि।

बिहुला कैँ लगैत छनिः 'केना ई संभव छैक जे एक माय अपन बेटाक खून क देतैक? उपर से ने कोनो पश्चाताप, ने कानब ने आँखि सँ नोर। नहि-नहि, कतबो निष्ठुर माय एहेन कृत्य नहि क सकैत अछि। ई अवश्य विशिष्ट नारी अछि। एकरा लग कोनो तंत्र-मंत्र आ जादूटोनाक अनन्त शक्ति छैक। भ सकैत अछि ई धोबिन हमर समस्याक निदान करय आ हमर पति बाला लखेन्द्र पुनः जिब उठैथ।' ई सोचैत बिहुला चुपचाप ओहि धोबनिक अगिला डेगक प्रतीक्षा करै लगैत छथि।

धोबीन निश्चित सँ कपड़ा धोबैत पखारैत अछि। जखन सब काज भ जाइत छैक तँ घर लेल प्रस्थान करबा सँ पूर्व अपन मृत पुत्रक शरीर सँ गमछा हटा दैत छैक आ नदी सँ आंजुरमे जल लैत किछु बिकट मंत्रक उच्चारण करैत बच्चाक शरीर पर पानिक छीटा दैत छैक। पानिक बूंद पड़िते मातर ओकर मृत पुत्र उठि क बैस जाइत छैक। आब धोबिन बेटाक आँगुर धेने प्रसन्न मोन घर लेल विदा होइत छैक। बिहुला तखने धोबिन के अबाज दैत कहैत छथिनः 'हे बहिंन धोबिन! कनिकाल रुकू। हमर विपदा सुनु। हमरा अहाँक मदति केर दरकार अछि।'

बिहुलाक बात सुनैत देरी धोबिन, रुकि जाइत छैक। बिहुला आब सब बात सांगोपांग रूप सँ धोबिन के कहैत छथिन। धोबिन बिहुलाक वेदना सँ द्रवित भ जाइत छथि। बिहुला कैँ अपना संगे अपन घर ल जाइत छथि। घर पर बच्चा कैँ छोड़ि ओ धोबिन बिहुला संग पुनः नदीक कात अबैत छथि । आब बिहुलाक नाव पर सवार भेल धोबिन सेहो अनन्तक यात्रा हेतु विदा होइत छथि। चलैत चलैत शिवलोक पहुँच जाइत छथि।

शिवलोक पहुँचैत देरी धोबिन शिवक चरण छुबैत बिहुलाक सब बात शिंव कैँ बता दैत छथिन। शिव ध्यान लगबैत छथि आ मनसा देवी हुनक समक्ष उपस्थित। शिव मनसा सँ बाला लखेन्द्रकैँ पुनर्जीवित करय कहैत छथिन। मुदा मनसा देवी एखनो क्रुद्ध छथि ।

मनसा देवी कहैत छथिनः 'एखनो ओ चंदू सौदागर अपन घमन्ड सँ बाहर नहि आबि रहल अछि। ई चन्दू सौदागर हमर सम्मान नहि करैत अछि। हमरा देवताक श्रेणी मे नहि रखैत अछि। आर तँ आर हमर भेजल दूत सँ बातो करबाक लेल तैयार नहि अछि। हम, हे शिव, एकर की करु? अहाँक जे आज्ञा?' शिव कहैत छथिनः 'मनसा! अहाँ शिव परिवारक देवी छी। अहाँ हमर मानस पुत्री छी। हमरा अहाँ पर गुमान अछि। चन्दू सौदागर गलती केलक अछि। आब ओ भविष्यमे एहि तरहक गलती नहि करत।'

आब मनसा देवी कनी शांत होइत छथि। अही बीच धोबिन बिहुलाक हाथ धेने मनसा देवी लग आबि जाइत छथि। बिहुला मनसा देवी के चरण पर सुति रहैत छथिः 'दोहाई मनसा माई, हमर पति बाला लखेन्द्रक प्राण वापस करु। आइये सँ हम, हमर पति, ससुर आ सासु सब कियो अहाँक नित्य पूजा पाठ शुरू करब। हम अपन ससुर कैँ अपने सँ समझा बुझा देबनि।' अतेक बात सुनैत देरी मनसा देवी जेना प्रफुल्लित भ गेलीह। आइ जीतबाक अनुभूति भ रहल छलनि। मुदित होइत बाला लखेन्द्र लग गेलीह। अपन हाथ सँ छुलथिन। छुबिते देरी बाला लखेन्द्र जीवित भ गेलाह आ उठि क बैस रहलाह। आब धोबिन संग शिव आ मनसा देवी सँ आशीर्बाद लैत बिहुला आ बाला लखेन्द्र अपन घर दिस विदा भेलाह। धोबिन सेहो हुनका सब लेल कोनो देवी सँ कम नहि छलथिन। जखन ओ सब अबैत छथि तँ अपन पुत्र कैँ जिबैत देखि चन्दू सौदागर खुशी सँ नाचय लगैत छथि। बिहुलाक कहला पर मनसा देवी केर आराधना शुरू भ जाइत छनि। मनसा देवी आरो प्रसन्न होइत चंदू सौदागर के पहिने सँ मृत छह आरो पुत्र कैँ जिया दैत छथिन।

अहि कथाक संक्षिप्त विवरण देबाक प्रयोजन ई जे किछु भरम टुटब जरूरी। मनसा देवी तँ छोट लोकक देवी छथि। हुनक दर्शन बिहुला कैँ धोबिनक सानिध्य आ प्रतापे भेलनि। ई पाबनि लिटिल ट्रेडिशन के, ग्रेट ट्रेडिशन पर प्रभाव पर केंद्रित अछि। एक कथाक सब पात्र छोट जातिक अछिः चन्दू, बाला लखेन्द्र आ बिहुला बनिया जाति सँ; धोबिन धोबी जाति सँ।

अगर मधुश्रावणी पाबनिमे प्रयुक्त सामग्री दिस देखब तँ पता चलत जे मालिन फूल लेल, डोमिन बाँसक सामग्री हेतु, बरइ पान लेल, चुड़िहारिन चूड़ी टिकुली लेल, कुम्हारिन माटिक सामग्री हेतु एहि पाबनिक जरूरी अंग थिक। इ एक तरहक ग्रामीण जीवनक सौहार्द्य भेल जे ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक लड़की विवाहक बाद विवाहक अंतिम मान्यता तखने प्राप्त करैत अछि जखन धोबिन आबि क ओकरा अपन हाथक सिंदूर देतैक। ई लोक आ शास्त्रक समायोजन भेल। एकर दर-परत-दर बुझबाक खगता अछि। अहि पर गंभीर काज अवश्य होबाक चाही। काज एहेन जे शास्त्रीय विधानक अहं सं इतर हो आ लोक आ शास्त्रक वैज्ञानिक संदर्भ आ विवेचन पर टिकल हो।

सम्पर्क : 80762 08498

बन्नी माई-बंदी माई

• **प्रदीप कान्त चौधरी** *(समाजशास्त्री)*

उत्तर बिहारक ग्रामीण अंचल में वनदेवीक अनेकों स्थानीय स्वरूपक उपासना देखल जा सकैत अछि। मुदा किछु बनदेवी प्रायः ऐहन छथि जिनकर उपासना करोड़ों परिवार में कुलदेवीक रूप प्रचलित छन्हि। एहने एकटा प्रचलित देवी छथि बन्नी माई। बन्नी शब्दक व्युत्पत्ति प्रायः वन स भेल हैत एवं वनक देवी होमय के कारण बुझि पड़ैत अछि जे बन्नी माइ देवी के रूप में प्रतिष्ठित भेली। हिमाचल प्रदेश के चंबा जिला में सेहो बन्नी देवी के प्रख्यात स्थल छनि, जेकर उपासना गद्दी जनजाति के लोक करैत छथि। चंबा के स्थानीय भाषा में ओक (बांज) वृक्ष के सेहो बन कहल जाइत छैक, ताहि लेल मान्यता अछि जे एहि देवी के नाम ओहि वृक्ष के नाम पर पड़ल अछि। मुदा ओहि स इहो संकेत भेटइत अछि जे हिनकर उद्भव कोनो ने कोनो रूप स वनदेवी स जुड़ल छन्हि। भरमौर स 41 किमी दूर, टुंडा वन अभ्यारण्य के भीतर हिनकर ई मंदिर स्थित छैक। देवी के अनेकों छागरक बलि देल जाइत छन्हि आ मंदिरक पुजेगरी रौद्र रूप धारण कय ओकर शोणित मुंह लगा क सीधे पी जाइत छथि। अनुमान होइत अछि जे ई देवी खाद्यसंग्राहक-आखेटक समाजक अवशेष वा निशानी छथि आ ओ प्रागैतिहासिक काल सं वनदेवीक प्रतीक रहल छथि। यैह कारण अछि जे ग्रामीण समुदायक चिनबार पर हुनक पुजा अखनो धरि होइत छैन्हि। भारतक प्राचीन धर्म एवं संस्कृति के अध्येता लोकनि के अखनों अहि देवी के प्रभाव आ महत्व के आभास नहि भेल छनि। निम्न कृषक समुदाय के हजारों बरखक जात्रा एवं संस्कृतनिष्ठ संप्रदायक शक्तिशाली अन्हर बहय के बावजूद, हिनकर उपासना अक्षुण्ण छनि। गोरैया बीर जे अपने भारी प्रचलित लोकदेवता छथि, ओ मूलतः बन्नी के आराधक एवं सेवक छथि। ताहि लेल बन्नी के पूजा-घरक दुआरि पर गोरैया के पूजा देल जाइत छनि।

बन्नीक संबंध जादू-टोना आ डाइन-जोगिन क परंपरा स सेहो भ सकैत छन्हि। यद्यपि ज़्यादातर विद्वान एवं शोधकर्ता में ई प्रवृत्ति रहैत छन्हि जे ओ लोकधर्म के सेहो मात्र संस्कृतनिष्ठ पौराणिक परंपरा के चश्मा स देखैत छथि। ताहि लेल किछु विद्वान बन्नी के सरस्वती/ वाक के रूप मे प्रस्तुत करैत छथि, जे वैदिक साहित्य में ज्ञान के देवी मानल जाइत छथि। अहि प्रभावे प्रायः किछु लोकसंगीत में सेहो बन्नी के वाणी के देवी कहल गेल छनि। मुदा अधिकतर लोकसंगीत में हुनकर भिन्न छवि देखाइत छन्हि, जतय ओ देशी शराब पीअ बाली देवी छथि, जे विजुवन मे मयूर के शिकार करैत छथि। कखनो काल ओ अपन सेवक के आदेश दैत छथिन्ह जे हुनका रक्तबलि अर्पित कयल जाए, आ कखनो अपन गहवर के अनुचित रखरखाव स क्रुद्ध भ जाइत छथि।

नान्ही नान्ही कौड़िया गोसाउनी, खोइंछा बान्हलनि
चली भेल कलबरबा दोकान...
किछु मद पियल गोसाउनी, किछु ढरकउलनि,
किछु लेल भार लदाय...
कोपी-कोपी बोलथिन बन्नी मैया,सुनहु सत्रुहन साही हो
मोर माड़व मकरा बियाय गेल अपन सेवक बिनु हो

बन्नी विलासिता पसंद भगवती के रूप में चित्रित कएल गेल छथि, जतय ओ कहैत छथि जे ओ ऐहन घर में विश्राम करती जतय सब पलंग चन्दन लकड़ी के बनल हो, फूल के ओछाओन, पहिरय लेल रेशम के पीत वस्त्र होय। किछु लोकगीत में हुनका सात टा घोड़ा पर सवार कहल गेल छन्हि। अनेकों यादव, कुर्मी आ राजपूत परिवारक कुलदेवी के रूप में ई पूजित छथि। हिनका फूल, फल, पान आ मिठाई ज़्यादातर चढ़ाओल जाइत छनि।

प्रतीत होइत अछि जे बन्नी के उपासक अतेक विस्तृत भूभाग में पसरि गेल रहइथ जे कालक्रम में एहि नामक स्वरूप में विविधता आबय लगल। जेना बंदी माई, सती बंदी, काली बंदी, काली बन्नी आदि। यदि बन्नी आ बंदी के एके देवी मानल जाय त पूर्वी उत्तर प्रदेश आ पश्चिमी बिहार के कइएक करोड़ परिवार के कुलदेवी के रूप में प्रतिष्ठित हेती। जनमानस में एहि देवी सबहक बड्ड अस्पष्ट एवं धूमिल छवि रहि गेल छैक। आमतौर पर पूछला स लोक बन्नी आ बंदी के अलग अलग देवी बतबैत छथि। मुदा एहि बातक संभावना अछि जे बन्नी आ बंदी एके वनदेवी के दू अलग अलग अनुष्ठानिक परंपरा के प्रतिनिधि होईथ या कृषक जनजाति सभक अद्य-ऐतिहासिक देशांतरण में अलग अलग क्षेत्र में बसय के कारण नाम में कनी भिन्नता भेल होई। अथवा कईएक देवी के समिश्रण के कारण एहि दुनू के आसपास अनेकों देवी के परिकल्पना विकसित भेल होनि। काली सेहो मूलरूप स एक टा वनदेवी छथि। ताहि लेल हिमाचल में बन्नी के महाकाली बन्नी कहल जाइत छन्हि। एक प्रकार स विभिन्न स्त्रोत स आयल वनदेवी सभक सपिंडन स अहि देवी सभक परिकल्पना विकसित भेल हो। मुदा अहि में कोनो संदेह नहीं जे दुनू प्रागैतिहासिक पुरावशेष के अंश छथि।

उत्तर प्रदेश में बंदी माई के कम स कम चारि टा मंदिर ज्ञात अछि। पहिल मंदिर मथुरा मे गोकुल के निकट बंदी नामक गाम मे अछि। दोसर बंदी मंदिर बनारस में अछि ज0कर ऐतिहासिकता सेहो प्रमाणित अछि। ई मंदिर दशाश्वमेध घाट स ठीक कनेक पहिने प्रयाग तीर्थ नामक स्थान पर छोट सनक मंदिर अछि। किछू विद्वानक कहब छनि जे स्कंद पुराण के काशी खंड मे एकर उल्लेख आयल छैक, जे 12वीं -14वीं सदी के ग्रंथ अछि। अहि मंदिर मे अखन ताला चढाबय के परंपरा बनि गेल अछि। तेसर बंदी माता मंदिर, डालीगंज, लखनऊ मे अछि। आ चारिम मंदिर कानपुर जिला मे बिठूर आ शिवराजपुरी के बीच गंगा घाट पर स्थित अछि। ई मंदिर माटिए के ढेर स बनल अछि जकरा पर ध्वजा लागल छैक। मंदिर स गंगाजी तक माटि काटि क सीढ़ी बनाओल गेल छैक। एहि सब उदाहरण स किछू संकेत भेटइत छैक जे वनदेवी के कोनो बृहत संप्रदाय पूर्व में रहैक जे बन्नी आ बंदीक रूप में प्रचलित रहैक। कालक्रम में ग्रामीण एवं निम्न खेतिहर समुदाय एकरा अप्पन घरक चिनबार आ पिंडी में सुरक्षित रखने छथि।

सम्पर्क : 98184 46601

उत्तर-विभाजनक अन्हरिया : अल्लाह हो राम

• डॉ. कमलानंद झा *(आलोचक)*

कोनो नीक उपन्यास सोझरायल मानवीय इतिहास विवेकक अभावमे नहि लिखल जा सकैछ। मानवीय इतिहास-दृष्टि समाजकेँ जोड़बामे, समरसतापूर्ण समाज गढ़बामे आ कतिया देल गेल मानव-समूहक शक्ति आ सामर्थ्यकेँ पड़ताल करैत ओकर गरिमाक रक्षा करबामे अपन सार्थकता सिद्ध करैत अछि। **'अल्लाह हो राम'** मानवीय इतिहास संचित करबाक कथात्मक अभिव्यक्ति अछि।आजुक संदर्भमे एहि उपन्यासक विशेष महत्व एहि दुआरे जे कण-कणमे ईश्वरक व्याप्ति आ प्राणिमात्रमे परमात्माक अनुभूतिक सन्देश देबयबला भारत, घनघोर रूपसँ साम्प्रदयिक समाजमे रूपांतरित भ रहल अछि। लोक त लोक दोकान, फल आ साग-सब्जी सेहो हिन्दू-मुसलमान भेल जा रहल अछि।एहन भीषण समयमे **'अल्लाह हो राम'** भारतीय संस्कृतिक मूल मिजाजकेँ पकड़बाक प्रयास करैछ जाहिमे कहल गेल जे **'संगच्छध्वं- संवदध्वं वो मनांसि जानताम'** अर्थात हमसब एक संगे चली, एक संगे बाजी, हमर सभहक मन एक भ जयबाक विलक्षण आकांक्षाक नाम थिक **अल्लाह हो राम**। भारतक मूल आत्मा **'वसुधैव कुटुंबकम'**मे बास करैत अछि आ **'साझी-संस्कृति साझी विरासत'** हिन्दुस्तानक मूल चरित्र अछि। ई उपन्यास भारतक मूल आत्मा आ मूल चरित्रक कथा-आख्यान रचैत अछि।

उपन्यासक कलेवर महाकाव्यात्मक अछि। आजादीक किछु वर्षसँ ल क समकालीन मिथिला आ प्रसंगात सौंसे हिन्दुस्तानक सामाजिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक बेचैनी, पूर्वग्रह, कशमकश, उदात्त भाव, प्रेमक उत्कटता, घृणा, आपसी तनातनी, सहभाव आदिक विलक्षण रचनात्मक संकलन अछि ई उपन्यास।साम्प्रदायिकता जेहन क्षुद्रभाव पर त ई उपन्यास **बज्जर** नाहित खसैत अछि। कहबामे संकोच नहि जे यशपालजीक प्रसिद्ध उपन्यास **झूठा सच**, राही मासूम रजाक उपन्यास **आधा गाँव** आ भीष्म साहनीक **तमससँ** कनियो कमजोर नहि **अल्लाह हो राम**।

रामकिसुन आ दाहुरक अपराजेय मित्रताक तानाबानासँ उपन्यासक संतुलित काया ठाढ़ कएल गेल अछि।रामकिसुन हिन्दू रहैछ अ दाहुर मुसलमान। दू शरीर एक आत्मा-हिन्दुस्तान जकाँ। भीषण त्रासदपूर्ण बाढ़िक कोहरामक बाद भूख आ अभावसँ तंग आबि दूनू मीता जेना-तेना बंगालक जाहि पार्वतीपुर स्थान पर रोजगारक तलाशमे जाइत अछि, **पर्वतीपुर** विभाजनमे पाकिस्तानक बखरामे चलि जाइछ। ओतय दूनू फेरामे पड़ि जाइछ। रामकिसुनक प्रेमिका संगीताकेँ मुस्लिम गुंडा सभ **अपहरण** क लैछ आ दूनूकेँ खत्म क दैत अछि। दाहुर अपना हाथे रामकिसुनक अंतिम संस्कार करैत अछि। कोराना काल में समाचार पढ़ल आ देखल जे हिन्दूक लहासकेँ 'राम नाम सत्य' संगे मुसलमान सभ मिलि क जरौलक। कियक त ओकर परिवारक कियो कोरोनाक भयसँ हास्पीटल लेब नहि एलैक।

उपन्यासकार, **सच्चिदानंद सच्चू** मानवताकेँ तार-तार करएबला विभाजनजन्य साम्प्रदायिकताक उद्घाटन स्पष्टतापूर्वक कयलनि अछि।पाकिस्तानक घोषणा होयतहि ओहि क्षेत्रमे व्यापक स्तर पर हिन्दूक कत्लेआम **होमए** लागल। देखैत-देखैत पार्वतीपुर स्वयं एकटा पाकिस्तान बनि जाइछ। जखन दाहुर अपन मित्र रामकिसुनकेँ मुखाग्नि द रहल छल आक्रोशमे चिकरि-चिकरि बाजल छल 'ई पाकिस्तान नईं एकटा अन्हरिया राति छै। ई अन्हार जेना-जेना पसरत गिद्ध सभ अपन नंगा नाच ओहिना तेज करत। ऐ अन्हारसँ निकलू, नईं त सभक पहचान खतम भ जायत'। (पृष्ठ 41) पार्वतीपुरमे लीगी सभ प्रचार करैत छल जे हिन्दूक शासन भ जेतैक त ओ मुसलमान पर अत्याचार करत, नमाज नहि पढ़ देत। मोलबी साहेब सभकेँ कहथिन जे 'हम त हिन्दूक बीच रहए बला मुसलमान छी, कहाँ कियो हमरा पर अत्याचार कयलक आइ धरि।' मुदा हुनक बात पर कियो कान-बात नहि दैछ।

दाहुर ओहि पाकिस्तान के छोडि देत अछि जे ओकर मीता हरिकिसुन के मारि देलकै। हरिकुसन लग एकटा छोटछिन रामचन्द्रजीक मूर्ति रहैक, जकर पूजा ओ नियमित करैत छल। ओहि मूर्तिकेँ दाहुर प्राणप्रिय बुझि अपना संग राखि ओकर इबादत करै आ 'अल्लाह हो रामसँ' संबोधित करै। एहि तरहें दाहुर अपन मीतक **स्मृति कें** जोगौने छल। ओ कुशल दर्ज़ी छल, एकता छोटछिन मुसलमानी टोपी सीबि रामचंद्रजीकेँ पहिरा दैछ।एहि तरहें ओकरा एहि मूर्तिमे अल्लाह आ राम दूनूक दर्शन होए लगलैक। यैह चीज गाममे कोहराम मचा दैछ। भरल पंचायतमे दाहुर कहैत अछि, 'हम शास्त्र नहि पढ़ने छिऐ मुदा मुसलमानी टोपीमे राम हमरा अपन बुझाइ छथि. ख़ास अपन, तें **पहिरिलिऐ**।' सांप्रदायिक सोचबला ग्रामीणकेँ भले ई बात नहि अरघल होइ, मुदा सभसँ प्रसिद्ध रामभक्त तुलसीदास लिखने छथि-**'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।'** दाहुरक दूनू धर्मक प्रति अगाध भक्तिक सूचक छल ई मुसलमानी टोपी। मुदा जतय दाढ़ी आ टोपी देखिएक मोन कोनादन होअ लगै, ओहि समाजकेँ की कहल जा सकैछ! भारतक अधिकांश मुसलमान किछुए पीढ़ी पहिने हिन्दू छल, ताहि लेल ओकरा सभक संस्कारमे हिन्दूपन छैक, एहिमे दू मत नहि। इ बात समन्वयपूर्ण समाजक लेल अत्यंत सार्थक। हिन्दीमे कतेको मुसलमान कवि भगवानमे अल्लाहक और अल्लाहमे भगवानक छवि देखैत छथि।

कथा नायक अलमा, बाबाकेँ जल चढ़ब वैद्यनाथधाम जाइत अछि। इहो प्रसंग जकरा भारतमें हिन्दू-मुस्लिम संश्लेषण नहि बुझल छैक अनसुहाँत लगतैक। एतबे नहि मुसलमान टोलमे रूपनाथ बाबाक मंदिर आकृतिक ताजिया बनायब सेहो लोककेँ अतिशयोक्तिपूर्ण लागि सकैत अछि। कारण ई जे मनुक्खक दिल-दिमाग साम्प्रदायिक भ गेल छैक।ओ अगलो-बगलक यथार्थकेँ नहि देख चाहैत अछि।

जखन महादेव खुदनेश्वर (खुदा आ ईश्वर) भ सकैत छथि त मंदिर आकृतिक ताजिया किएक नहि बनि सकैत अछि।समस्तीपुरक मोरवा प्रखण्डमे महादेवक खुदनेश्वर मंदिर आ मुस्लिम महिला खुदनीक मजार एक्केठाम अछि। दूनू धरमक दर्शनार्थी दूनूक पूजा अनिवार्य रूपसँ करैत छथि।मुस्लिम महिला खुदनीक नामसँ बाबाक मंदिरक नाम अछि- खुदनेश्वर। खुदनी बाबाक भारी भक्तिन छल। देशमे किछु मंदिर एहन अछि जाहि ठामक पुजारी मुसमलान छथि आ **मुस्लिम** धार्मिक स्थलक हिन्दू। यैह भारतक सौन्दर्य थिक।फिरकापरस्त लोककेँ एहि दिव्य सौन्दर्यसँ चिढ़ छैक। **अल्लाह हो राम** भारतीय संस्कृतिक एहि सौन्दर्यकेँ बचेबाक उदार प्रयत्न अछि।

उपन्यासमे ताजिया यात्रामे जाहि तरहेँ उपद्रव कयल गेल आ जुबैदक ह्त्या होइत अछि ओ एहि बातक संकेत अछि जे देशक मुसलमान अधिकारपूर्वक ताजिया कोना निकालि सकैत अछि? जाहि ताजियाक सम्मान गामक आम हिन्दू करैत आयल अछि आ क रहल अछि ओतहि दक्षिणपंथी विचारक मुखियाजीक बेटा बबलू तथा 'चारण' आ 'हिन्दू' पत्रकारिताक प्रतीक हरेन्दर कोनो-ने-कोनो लाथे फसाद ठाढ़ क दैत अछि, जाहिमे जुबैद मारल जाइत अछि।

सवर्ण समाजमे स्त्री दुर्गतिक कथा **अल्लाह हो रामक** वैशिष्ट्य अछि। मुखियाजीक पुतोहु आ बबलू मिश्रक पत्नी बबीता झाक मार्मिक कथाक माध्यमसँ स्त्री-पीड़ाक अत्यंत बेधक आख्यान उपन्यासकार रचलनि अछि।बबीताक पिताकेँ हुनक बचपनक मित्र मुखियाजी, ठकि फुसियाक अपन बहसल बेटा बबलू संग बियाह करा दैत छथिन। एक राति त बबलू हद क देलक। दारूक नशामे बबीताक संग अभद्रता पर उतरि गेल।बबीता द्वारा मना कयलाक बाद आओर उत्तेजित भ जाइछ, 'ओ... छोड़ू ने नीक आ अधलाह... हम जेना कहै छी, तेना करू।अहाँ अपन सुट खोलि लिअ आ खाली ब्रा पहिरिक' नाचू ने...' ई कहैत बबलू ओकर सुटक हुक खोल लगैत अछि। बबीता बबलूकेँ धक्का दैत अलग करैत अछि आ बबलूकेँ घटिया आदमी संबोधित करैत अछि। एहि पर बबलू उदंडताक सभ सीमा टपि कहैत अछि, - लिअ' ऐमे अधलाह कोन बात छै। बंद घरमे अहाँ ब्रा पहिरिक नाचू तं आ नंगटे नाचू तं देखै बला के अछि अहाँकेँ। एकटा हमहीं ने। मुदा हमर तं हक़ अहाँ पर ने...।' पितृसत्ताक सबसँ गहींर आ मजबूत जकड़बंदी यैह अछि' स्त्री-देह पर पतिक अधिकार। एहन अधिकार जेना ओ देह नहि कोनो वस्तुजात होइक। पूर्वमे न्यायालयमे सेहो पत्नी संग बलात्कारक कोनोटा मामला नईं बनैक। पतिकेँ पत्नी संग बलात्कारक अधिकार छलैक। पत्नीक इच्छा-अनिच्छाक कोनो मतलब नहि। अइयो कोर्टमे ई नितांत **अनसोहाँत** बुझल जाइत अछि- घरेलू हिंसाक कानून बनलाक बादो। जखन बबलू सभ सीमाक उल्लंघन करैत बबीताक माय-बापकेँ गरियबैत केस **खीचि** क अधमरू कर लगैत अछि त बबीताक स्त्रीत्व जगैत अछि आ ओ बबलूकेँ हिन्दीमे गरियबैत कहैत अछि, 'तुमको मारना है न, ले मार, मार रे मादरचोद...मार... लेकिन मैं एक बार नहीं हजार बार कहूँगी, तू ठग है, तेरा बाप ठग है।' मैथिली उपन्यासक परम्परामे बबीताक ई पाँती एतिहासिक पाँतीक रूपमे याद कयल जयबाक चाही। मिथिलाक कुलीन स्त्री सभ दिन माय-बापक फज्जति सुनैत रहल, गारि-मारि सहैत रहल, तामससँ घोर होइत रहल, इच्छा रहितो एहि तरहक पाँती नहि बाजि सकैत छल। एहि जाग्रत स्त्रीत्वसँ पूरा परिवार सन्न। बबलू मिसरक माय माथ पर हाथ राखि लेलनि- हौ दैव हौ दैव। कनिया बहुरिया कतौ एहन गारि पढ़ै। एहन **असद्ध** गारि कतौ मौगी पढलकए? बेटा गारि संगे पत्नीकेँ धुनि दइ त माय-बापक लेल धन सन, मुदा मौगीक मुँहसँ गारियो नइ निकालौ?

अल्लाह हो राममे तीन गोट प्रेमकथा अछि। उपन्यासमे प्रेमक मादे ई बात रेखांकित होइछ जे आत्मिक प्रेम आ दैहिक प्रेमकेँ 'वाटर टाइट कम्पार्टमेंट'मे नहि बाँटल जा सकैत अछि। दूनू एक दोसराक पर्याय होइछ।प्रेम अपन उन्नत रूपमे तखने अबैत अछि जखन आत्मा आ देहक अभूतपूर्व संगम होइछ। उपन्यासमे सभसँ उदात्त प्रेम कथा अछि कथा नायक अलमा आ नायिका कमलीक।दूनूक जान-प्राण एक दोसरामे बसैक। दूनू जेना एक दोसराक लेल बनल हो। अलमा आ कमलीक किछु सघन आ मनोहारी प्रेम-दृश्य रचबामे उपन्यासकार कोमल कल्पनाशीलताक परिचय देलनि अछि।नहि चाहैत अलमा आ कमलीमे प्रेम भ जाइ छै।दूनूक आँखि एक दोसराकेँ तकैत रहै छै। एक दोसराकेँ एकरत्ती देख लेबाक हेतु अफसियाँत। मुदा प्रेम-विरोधी समाजकेँ ई प्रेम नहि अरघलइ। घात लगा क एक दिन बबलू मिसर, हरेन्दर आ ओकर लफंदर टीम। दूनूकेँ पकड़ि लेलक। कमलीक सामूहिक बलात्कार कयलक, अलमाकेँ ओध-बाध क मारलक आ गायब क देलक। अधमरू कमलीकेँ टांगि क घर द आयल आ एहि दुर्दशाक अपराध अलमा पर मढ़ि देलक। लफंदर टीम एक पंथे दू काज कयलक- काम-तृप्ति आ एकटा मुसलमानकेँ बदनाम। एहि घटनाक बाद अलमा-कमलीक जीवन नष्ट भ जाइत अछि।अलमाक कतहु अता-पता नहि आ कमलीक बियाह पंचायत चुनावमे आयल हरियाणाक अधवेसू सिपाहीसँ जेना-तेना क देल जाइ छै।बियाहक बादो कमली कहियो अलमाकेँ बिसरि नहि सकल।ओकर देह आ आत्मा दू भागमे बंटि गेलै। देह गेलै सिपाहीक खातामे अ आत्मा अलमाक खातामे।प्रेम विद्वेषी समाजमे एहि तरहेँ देह अ आत्माक बँटवारा भ जाइछ।

अल्लाह हो राम मैथिलीमे लिखल गेल राष्ट्रीय चिंताधाराक उपन्यास अछि। मिथिलाक ताना-बाना संग देश-विभाजन आ साम्प्रदायिक समस्या जेहन राष्ट्रीय समस्याकेँ उपन्यास अपन सम्पूर्ण संभावनाक संग ओकर जटिलताकेँ उद्घाटित करैत अछि। एहि समस्याक अतिरिक्त उपन्यासमे बाढ़िक समस्या, राहत सामग्रीक बँटवारामे धांधली, दलित समाजक विडंबना, स्त्री-अस्मिता, उभरैत हिन्दू लामबंदीक राजनीति, चुनावक दाँव-पेंच, पितृसत्ताक नख-दंत आदि सभ किछु अत्यंत **संश्लिष्ट** आ रोचक कथात्मकताक संग प्रस्तुत भेल अछि। ई कहबामे संकोच नहि जे मैथिली उपन्यासक इतिहासमे **अल्लाह हो राम** नब मयार (ऊँचाई) **स्थापित** करैत अछि।

सम्पर्क : 86305 63805

सुचिता

●जगदीश प्रसाद मण्डल

तेसर पड़ाव

भुवनेश्वर एला राधारमणक पनरह दिन। जहियासँ राधारमण कमलपुरसँ निकलला तहियासँ अखन धरि गाम बिसैर गेल छला। जे सोभाविको अछिए। किए तँ नव-नव जगहक संग नव-नव काजोक बेवस्था छेलैन्हे।

जखन राधारमण घरसँ निकैल टेम्पुपर अपनाकेँ सवार केलैन तखनेसँ मनक विचार वर्तमान बास करए लगलैन, तँए घरक सभ किछु बिसैर अपन जीवन-यात्रा प्रारम्भ केलैन। ओना, नव राज्यक नव जगह भुवनेश्वर छीहे, मुदा ओहनो नव जगह भुवनेश्वर नहियेँ अछि जेकरा कमलपुरक लोक नहि जनैत होइथ। किए तँ छअ मासे बेंतक छड़ी नेने गाम-गामक लोक जगरनथिया गीत गबैत पीढ़ी-दर-पीढ़ी जगरनाथ जाइत-अबैत रहला अछि। तइमे कमलपुर छुटल रहल सेहो बात नहियेँ अछि। तँए भुवनेश्वर अपरिचित जगह कमलपुर-ले नहियेँ अछि। मुदा राधारमण-ले से नहि छैन, तेकरो केना नकारल जा सकैए। गप-सप्पक क्रममे कमलपुरबला एते जनिते छैथ जे भुवनेश्वर उड़ीसा राज्यक जिलो मुख्यालय छी आ राजधानियोँ छीहे। तही जिलामे जगरनाथपुरी सेहो अछि आ समुद्रक कातमे सुर्ज मन्दिर'कोनार्क' सेहो अछिए। तैसंग कबीरदासक खन्ती समुद्रक कातमे सेहो गाड़ल छैन। जगरनाथो बाबा तेहने छैथ जे सभ दिन नव अन्नक प्रसादो ग्रहण करिते छैथ।

भुवनेश्वर पहुँच राधारमण अपन विधिवत जीवन धारण केलैन, जइसँ सरकारी सभ सुविधा भेटबे केलैन, तँए कोनो असुविधा नहियेँ भेलैन। मुदा सभ बेवस्था करैमे राधारमणकेँ एक पख लगिये गेलैन। आइ पनरहम दिन राधारमणकेँ गाम मोन पड़लैन।

भाय, जीबैतमे लोक माए-बापकेँ किए ने बिसैर जाइ, मुदा कोनो चोट लगला कि अवघात भेलापर वा आफद-असमानी एलापर लोक सभ किछु बिसैर जाइए, एते तक कि रक्षक भगवानकेँ सेहो बिसैर जाइए, मुदा 'माए-गइ-माए', 'बाप-रौ-बाप' मुहसँ फुटबे करैए।

गाम दिस विचार बढ़िते राधारमण पत्नीपर नजैर खिरौलैन। पत्नीक नव रूप व नव चेहरामे देख पड़लैन। अपन बैसारीक महत्व-केँ देखैत, पत्नी जैठाम बच्चा-ले दूध औंट रहल छेली, तइ लगमे पहुँचला। सुवासिनीक, दू सालक बच्चा सुचिता ले, दिन भरिक दूध तैयार होइते मन (विचार करैक) सभ छान-बान तोड़ि विचरण करैत अपन जन्मसँ आइ धरिक जीवनमे दौड़ए लगलैन। मुदा जहिना ओइ दिन माने पिताक मृत्यु दिन, सुवासिनी एतबे बुझने छेली जे माता-पिताक मृत्युमे बेटा-बेटी केना कानैए; तहिना कानि धीरे-धीरे बिसरए लगली। ओना, आइ सुवासिनी ओइ घटनाकेँ जीवनक एकटा घाट बुझि जीवन-बाट बनबए चाहि रहली अछि, तँए विचारक अपन धुन मनक विचारकेँ मथि रहल छेलैन...। तैबीच पत्नीकेँ अपन विचारी बुझि राधारमण बजला-

'गामसँ बहरा गेलौं मुदा गामक किछु ने केलौं..! समाजो अड़ियाति क विदा केलैन। मुदा एतबो उपराग कियो ने देलैन जे गाममे अहाँक कएल किछु ने अछि। जे ता-जिनगी मन रहैत जाधैर जिनगी रहैत। सेहो ने भेल। आइ मनक बात माने मनमंत्र कहए चाहि रहल छी से सुनब?'

जहिना अकसरहाँ लोककेँ ठोरपर बरी पकले रहै छै तहिना सुवासिनीक ठोरपर पकले रहैन। बजली-'अहाँक बात हम कहिया नइ सुनलौं जे एना शंकालु भेल बजै छी..?'

ओना, जहिया सुवासिनी आई.ए.क छात्रा छल तहियेसँ राधारमण चिन्हलैन। सुवासिनीक पितासँ, कौलेजक शिक्षक (प्रोफेसर) आ छात्रक बीच जे सम्बन्ध होइए, बस तेतबे राधारमणक सम्बन्ध छेलैन। राधारमणक मनमे एकाएक उठि गेलैन जे गोविन्द बाबूक टुटैत परिवार देख विचार जगल आ कि हुनक मृत्यु? तँए मिरगा जकाँ मन नाचै छेलैन। ओना, नाचबो दू रंगक होइए। पहिल होइए सुर-तान मिला नाचब आ दोसर होइए अनधुन नाचब। मुदा राधारमणक मनक नाच दुनूमे सँ कोनो नहि छेलैन। किए तँ अखन तक माने गोविन्द बाबू ऐठाम जाइ तक, राधारमणक मनमे कोनो एहेन विचार नहि छेलैन जे केहेन परिवार छैन आ कोन स्थितिमे पहुँचत। आ ने इएह छेलैन जे अपनोमे कोनो तरहक बल (सबल) अछि जे किछु मदैत क सकबैन। अनहोनी जकाँ घटना छल जे एकाएक परिस्थितिक सूत्र राधारमणकेँ अराधक बना देलकैन।

आराधना (संकल्प) सेहो दू रंगक दू परिस्थितिमे कएल जाइए। एक परिस्थिति भेल जे शान्तचित्तसँ कोनो संकल्प (अराधना) करब आ दोसर होइए अशान्त परिस्थितिमे संकल्प (अराधव) करब। राधारमणक दोसर श्रेणीक छेलैन।

पत्नीक मुहसँ माने सुवासिनीक मुहसँ खसल 'शंकालु' शब्द सुनि राधारमण बजला-'कोनो शंकाक निवारने कहिया केलौं जे शंकालु नहि रहब?'

ओना, विचारक दौड़मे, जे जीवनक संग दौड़ैए, तइ दृष्टिएँ राधारमण आंशिक परिपक्व भइये गेल छैथ जे सुवासिनी नहि छैथ। तेकर कारणो दुनूक अपन-अपन छैन्हे। विद्याध्ययनक क्रममे ध्रुव जकाँ राधारमण अपने मनकेँ संकल्पित क नेने छला जे

प्रशासनिक पद तँ गरथाहक पढ़ब छी मुदा एम.ए. करब तँ थाहल अछिए, तँए कोनो कौलेजे वा हाइये स्कूलक शिक्षक बनब तँ गरथाहमे नहियेँ अछि। जखने कोनो काजक फल आ ओइ काजक प्रक्रियाक बोध केकरो भ जाइ छै तखने ओकरो अपन बल जगिते छै, जइसँ संकल्पक अनुकूल परिस्थित सेहो निरमित होइते अछि, जेकर उपयोग भेलासँ सफलताक सीढ़ी सेहो भेटते अछि। मुदा से सुवासिनीक जीवनमे घटित नहि भेल छेलैन। ओना, परिवारमे ओहन घटना घटित भेले छेलैन जइसँ परिवार मेटा जाइए। कहैकाल समाजमे हजारो समाजसेवी आ हजारो धर्मात्मासँ गाम भरले रहैए, मुदा परिवारो आ बेकतियो केना मेटा रहल अछि, से देखनिहार कियो ने...। जे बात'विचार'राधारमणक मनमे नाचि रहल छेलैन, तँए अनुभवी आ अन-अनुभवीक बीचक दूरी मनमे बनले छेलैन। तँए शंकालु हएब सोभाविक भइये जाइए, मुदा सुवासिनीक मनमे सामान्य पति-पत्नीक जे जीवन अछि से छेलैन। जैठाम पतियो बुझै छैथ जे कमजोरसँ कहलापर माने कोनो आदेश देलापर, जँ नहि करती माने पत्नी नहि निमाहती तँ गरमा क माने जोरसँ कहलापर निमाहबे करती। तहिना पत्नियोँ बुझिते छैथ जे जखन दुनू गोरेकेँ जीवन भरि संगे-संग रहैक अछि, तैबीच जँ कोनो तीत-कसाइन होइए ओकरा सहि लेबाक चाही। लोक तँ कोनो संकल्पक (व्यस्तताक) पाछू भरि-भरि दिन सहि लइए, तहूमे अपन मिथिला तँ सहनमा देश छीहे जे हरिवासय सन पाबैन, जइमे तीन दिन सहल जाइए, सेहो लोक करिते अछि।

ओना, सुवासिनीक विचारकेँ राधारमण सेहो मने-मन मापि रहल छला जे अखन धरिक जे हिनकर जीवन रहलैन, तही अनुकूल ने विचारक सभ प्रक्रिया निरमित भेल हेतैन...।

अपन चिन्तन-मननमे राधारमण ओझराए लगला। राधारमणक मनमे उठलैन जे विचारक ओझरी तँ अमती काँट जकाँ झोंझगरो होइए आ खट-मधुर फलो दइयेबला होइए। तैठाम तँ तेहने ने बनि क रहने पार-घाट लगि सकैए, नहि तँ धारक कातमे असगरे बैसल रहब।

अपन आ पत्नीक विचारक दूरी राधारमणकेँ तेना झोंझिया देलकैन जे किछु करबो-ले आ किछु सीखबो-ले बाध्य क देलकैन। ओना, राधारमण एक रस्तासँ चोटी (आई.ए.एस.) पर पहुँच गेल छैथ। मुदा जिनगीक दोसर-तेसर हजारो बाट ओहन अछिए जेकरा चोटी धरि पहुँचबैक सामर्थ तँ छैन, मुदा से बुझल-गमल नहि छेलैन। ओना, राधारमण विज्ञानक विद्यार्थी कहियो ने रहला, बस ओतबे रहला जेते हाइ स्कूल तक सामान्य ज्ञानक विज्ञान अछि। मुदा तेतेक तँ पढ़ल छैन्हे। तइसँ एते मनमे गरिये गेल छैन जे कला (आर्ट) आ विज्ञानमे अन्तर बेवहारसँ अछि। जँ कोनो बात वा विचार बेवहारिक रूपमे देखल जाए तँ ओइमे ओते अनुपात अन्धविश्वासक जगह विश्वास लइते अछि...।

एकाएक राधारमणक मन मनुखक जीवन लग पहुँच गेलैन। जीवन लग पहुँचते अपन कार्यालय मन्दिर जकाँ देख पड़लैन। केते लोकक जीवन ओइ मन्दिरसँ माने कार्यालयसँ संचालित भ रहल अछि? मन आगू घुसैक ओइ सीमा लग पहुँच गेलैन जइ सीमापर कार्यालयक कार्यकर्ता ठाढ़ छल। जिनका माध्यमसँ कार्यालय चलि रहल अछि। सबहक अपन-अपन कार्यालय, सबहक अपन-अपन काज...। तैठाम अपनो तँ असगरे छी? हँ, एकटा ओगरवाहक रूपमे प्यून अछि। जे काजोमे आ अपन जीवनोमे सहयोग करिते अछि। जखन बारह बजेक दुपहरियामे रौदक तापसँ तपित भ मन घुमए लगैए आ काज करैसँ अनिच्छा होइए, तखन ओकरे माध्यमसँ माने प्यूनेक माध्यमसँ ने एकटा दबाइयक गोली मंगा खाइते छी...।

जेना कोनो डकैतीक सुराक भेटने पुलिसक मन खुशी होइए तहिना राधारमणकेँ सेहो खुशी भेलैन। खुशी भेलैन माने राधारमणकेँ मनमे एलैन जे जइ कार्यालयमे छी तइमे सभसँ ऊपर भेलौं, जे एक छोर भेल, मुदा एकर दोसर छोर तँ वएह ने हएत जे ओकर विपरीत अछि। माने जहिना सभसँ ऊपर आई.ए.एस. अफसर भेला, तहिना सभसँ निच्चाँ चपरासी भेल। दरमाहा तँ बीचमे केतेको रंगक अछि, माने स्तरक हिसाबसँ रंग-रंगक। जे अन्तिम सीमा चपरासी लग पहुँच सभसँ कम भ जाइए..।

अपन प्यून मनमे अबिते राधारमण सुवासिनीकेँ कहलैन-

'आइ पएरे घुमैक मन होइए, से संगे चलब?'

ओना, बिनु विचार केनहि सुवासिनी लगले-मुँह कहि देलकैन-

'किए ने चलब..!'

बजला पछाइत सुवासिनीक मन पाछू हटकए लगलैन। हटकैक कारण भेलैन जे पुरुखकेँ की छै, एकटा लूँगी, एकटा गंजी वा कुरता पहीरि केतौ चलि जेता, मुदा अपने केना जाएब।

राधारमण सुवासिनीक मनक अत्स-वित्सपर धियान नहियेँ देब नीक बुझलैन। उठि क ठाढ़ होइत बजला- 'अहूँ चलू आ सुचिताकेँ सेहो नेने चलियौ। पएरे-पएरे दस डेग तँ ओहो चलिते अछि।'

जाबे सुवासिनी विदा होइक नियार-भास केली तैबीच राधारमणक मन अपन प्यून'हिम्मतलाल'पर पहुँच गेलैन।

हिम्मतलाल आदिवासी परिवारक अछि। जहियेसँ कार्यालय खुजल तहियेसँ हिम्मतलालक परिवार ओइ कार्यालयसँ जुड़ल रहल अछि। हिम्मतलालक पिता बिसवासलाल नोकरी शुरू केलैन, जिनकर असामयिक निधनपर अनुशंसाक आधारपर हिम्मतलालक बहाली भेल छल। जहिया पितेक गारजनीमे हिम्मतलाल छल तहिये तीनटा धिया-पूता भ गेल छेलै, पछाइत दूटा आरो भेलै, कुल मिला क, अखुनका जे परिवार-नियोजनक चार्ट अछि तइसँ ओभर ड्राफ्ट बनियेँ गेल अछि। जइसँ माए लगा आठ गोरेक परिवार छै।

राधारमणक डेरासँ हिम्मतलालक घरक दूरी करीब डेढ़ किलो-मीटर अछि। आगू-आगू राधारमण, बीचमे सुचिता आ पाछू-पाछू सुवासिनी विदा भेली। हिम्मतलालक घर लग पहुँच राधारमण

एक गोरेकेँ पुछलैन- 'हिम्मतलालक घर कोन छिऐन?'
तइ बिच्चेमे हिम्मतलाल घासक बोझ माथपर नेने खेतसँ घरपर पहुँचल। राधारमणकेँ देख बाजल-'साहैब, यएह अपन घर भेल।' कहि घासक बोझ राखि हिम्मतलाल हाँइ-हाँइ क दरबज्जा बहारए लगल। दरबज्जासँ बाहर राधारमण तीनू गोरे'अपने, पत्नी आ बेटी'ठाढ़ रहला। दरबज्जा बहारि, कुरसी सेरिया हिम्मतलाल राधारमणक बाँहि पकैड़ क आनि कुर्सीपर बैसौलकैन। सुवासिनी सेहो बैसली मुदा सुचिता, हिम्मतलालक धिया-पुताक संग ठाढ़ भ गेल। आठो गोरे माने हिम्मतलालक परिवारक सभ कियो दरबज्जापर पहुँचल छल। हिम्मतलाल पत्नियौँ आ बच्चोकेँ कहला-'साहैबकेँ प्रणाम करियौन। अपन माए-बाप सभ किछु यएह छैथ।'
हिम्मतलालक पत्नी जहिना राधारमणकेँ पएर छुबि गोड़ लगलकैन तहिना सुवासिनीकेँ सेहो गोड़ लगलकैन। ओना, रूक्मिणीक एकछाहा कारी चेहरा देख सुवासिनीक मन थोड़ेक भटकलैन, मुदा बजली किछु ने। तैबीच राधारमण कुरसीपर सँ सुभद्राकेँ' हिम्मतलाल माएकेँ'सेहो गोड़ लगैले उठला। जे बात हिम्मतोलाल बुझि गेल आ सुभद्रा सेहो बुझि गेली। आगू बढ़ैत सुभद्रा सेहो घुमिक राधारमणक पएर छुबए चाहली मुदा बाँहि पकैड़ राधारमण बजला-'जहिना अहाँ हिम्मतलालक माए छिऐ तहिना ने हमरो भेलौं। हमर फर्ज बनैए जे हम पएर छुबी।'
ओना, विचारक क्रममे राधारमणकेँ अपन क्रम छेलैन मुदा सुवासिनीक क्रम तइसँ भिन्न छेलैन। राधारमणक विचारक्रम मनुक्खक सीमापर ठाढ़ छेलैन, जखन कि सुवासिनीक विचारमे जाति आ रंग-भेद थोड़ेक दूरी बनौने छेलैन। जइसँ सुवासिनीक मन कछमछाए लगलैन जे कखन ऐठामसँ उठि विदा भ जाइ। मुदा राधारमणक मनमे जहिना अपन ससुर माने पत्नीक पिताक परिवार दुर्घटनावश बिलटैक कगारपर पहुँच गेल छैलेन तहिना हिम्मतलालक परिवार सेहो पिताक (बिसवासलालक) अकालमृत्युसँ भेल छल। जइ कार्यालयमे बिसवासलाल काज करैत रहैथ, दू मंजिलाक सीढ़ीपर सँ खसने मृत्यु भेल छेलैन। सात गोरेक परिवारमे छ गोरे बेसहारा भ गेल छेलैन। जखन कि सुवासिनीक परिवारमे, पिताक मृत्युक समय मात्र तीन गोरे'सुवासिनी, भाए- मनोज आ माए'छेली। राधारमणक मनमे दुनू परिवारक बात एकसंग नाचि रहल छेलैन। मनमे उठलैन- दुनू परिवार केना-केना आजुक सीमापर पहुँचल अछि, तइ विचारकेँ सबहक सोझ राखी, जइसँ एक-दोसर परिवारक सुख-दुख देखा-देखीसँ सीखा-सीखी करत। भाय, परिवार तँ परिवार छी, तहूमे मनुक्खक परिवार, जेकरा माल-जाल जकाँ छान-पगहा नहि लगल छै।
सुवासिनीक मनोभावकेँ राधारमण आँकि नेने छला। मुदा शंका ई उठि गेल छेलैन जे 'बरे किदैन तँ जैतुक के लेत' माने ई जे जइ सुवासिनीकेँ हिम्मतलालक परिवारक रंगे-रूप देख मन भटैक गेल अछि से ओइ परिवारक सुख-दुखकेँ अपन सुख-दुख बुझि अङ्गेज केना सकैए? आ जँ से नहि भेल तँ 'केतए एलौं तँ केतौ ने' सएह हएत...।
तैबीच हिम्मतलाल तीनटा प्लेटमे जलखै अनलक। राधारमण दुनू परानीक प्लेट एकरंग सजल छल आ सुचिताक दोसर रंग। दुनू परानी राधारमणक प्लेट जहिना स्वादक हिसाबे मीठ-नमकीनसँ सजल तहिना सुचिताक प्लेट मीठ-मधुरक हिसाबसँ सजल छल। तइ बिच्चेमे हिम्मतलालक पत्नी सासु-ले माने हिम्मतलाल माए ले, सेहो आ पाँचो धिया-पुता-ले सेहो बड़का थारीए-मे आनि रखि देली। इएह तँ दुनियाँक खेल छी, जहिना हिम्मतलालक पूरा परिवार दुनू परानी राधारमणमे देवत्वपन देख रहल छेलैन तहिना राधारमण हिम्मतलालक परिवारमे की मजमा अछि, तेकरा तजबीज क रहल छला। एक दिस वैधव्य माए अपन पोता-पोतीक संग आ दोसर दिस राधारमण अपन परिवारक संग...। मुदा सुवासिनीक मन उखड़ल-उखड़ल सन छेलैन।
अपन रणभूमिक रणकौशलकेँ राधारमण असफल होइक प्रक्रियामे देख रहल छैथ। माने ई जे जिनका (पत्नीकेँ) जिनगीक भेद बुझबैत एलौं सहए तेहेन उखड़ल-उखड़ल सन भ गेली जे बुझि केना पौती? मनक विचारवाण छुटिते राधारमणक मनमे नव चेत एलैन। नवचेत ई एलैन जे पहिने सुवासिनियेक परिवारक वृतान्त उठौलासँ ओ एकाग्र हेती आ अपन प्रतिक्रिया बुझैले हिम्मतलालक परिवार दिस नजैर उठौती। जखने से भेल तखने हिम्मतोलालक परिवार सेहो अपन जीवनक तुलना करैत प्रतिक्रिया देबे करती। बीचमे दुनू गोरे भेलौं, माने अपने आ हिम्मतलाल, हमहूँ सभ अपन-अपन पक्ष रखैत सामंजसक सीमापर पहुँचब।
राधारमण नमकीन खा रहल छला आ सुवासिनी नमकीनक कड़ू कम करैले मिठाइ खा रहल छेली। दुनूक विपरीत दिशा देख हिम्मतलाल बाजल- 'साहैब, हमरा सबहक परिवार तँ सहजे सबदिनसँ गरीब रहल आ अखनो अछि। अहाँ सन राजाकेँ केना दुआरपर सुआगत क सकै छी, मुदा मिथिलाक धरणीधरक पुण्य कर्म रहलैन जे चाहे विदुरक साग हुअए आकि शबरीक बैर, दुनू बरबरि रहल अछि। तँए मनमे नइ बहुत तँ रतियो भरि खुशी तँ भइये रहल अछि।'
ओना, हिम्मतलालक हाथक छुअल प्लेटक भोज्य विन्याससँ राधारमणक मन तृप्ति भ चुकल छेलैन जइसँ मनोभावमे थोड़ेक दलदली जरूर आबि गेल छेलैन। जलखै केला पछाइत हिम्मतलाल घासक बोझमे सँ एकटा सुखल खढ़ निकालि नहेसँ खरिका बना दुनू गोरेक हाथमे दैत बाजल- 'चाह पीब लिअ पछाइत दिन-दुनियाँक गपो-सप्प हेतै आ रातुक रहैक बेवस्था सेहो हेतइ।'
रौतुका रहैक नाओं सुनि सुवासिनीक मनमे झड़कवाहि उठलैन मुदा मिठाएल मुँह रहने शब्दे बदैल मुहसँ खसलैन-'जहिना

मिथिलाक धरणीधरक चर्च केलौं तहिना चाहक पछाइत पान सेहो रहल अछि।'

ओना, जहियासँ राधारमण कार्यालय पकड़लैन तहियासँ कार्यालयक सभ किछु देख-सुनि-गुनि नेने छला जे हिम्मतलालकेँ गुनले छल; किए तँ साल भरिसँ ओइ ऑफिसमे कार्यरत अछि। ओना, दुनियाँक खेलो विचित्र अछिए जे कियो दुनियाँकेँ देख-सुनि-बुझि छोड़ैए तँ कियो बिनु देखनहि छोड़ि दइए। राधारमण अपन कार्यालयकेँ जइ रूपेँ गुनलैन तइसँ विपरीत रूपे हिम्मतलाल देख-सुनि क अँकने छल। मुदा अपन मन कहै जे ऐ कार्यालयमे हमर ओतबे भेल जेते उपयोग करै छी, एकटा स्टुल कार्यालयक मुँहक दरबज्जापर लगल अछि, तैपर बैसै छी। बस अपन तेतबे भेल।

कार्यालयक सभ वस्तुकेँ गुनन-मनन केला पछाइत राधारमण जखन गेटपर बैसल हिम्मतलालक गुनन-मनन करए लगला तखन मनमे जगलैन जे जहिना एकटा खसैत परिवारकेँ सोंगर बनि, कहुना ठाढ़ केलौं, ओकर औझुका रूप की अछि तेकर साक्षी पत्नी छैथ। तहिना कार्यालयक जे चपरासी अछि जेकर वेतन कार्यालयमे सभसँ कम अछि तेकर साक्षी तँ हिम्मतलाले अछि...। मुदा परिवारक तँ ठेकान नहि अछि जे दुनूमे तीन अछि कि तेरह। इएह जिज्ञासा राधारमणक मनकेँ उत्प्रेरित केलकैन जइसँ एकाएक छुट्टी दिनक कार्यक्रम बना हिम्मतलालक घरपर एला। भाय, केकरो ऐठाम, बिना दिन-ठेकान बनौने जखन जाइ छिऐ तखन अपना मनमे ईहो अबधारि लिअ पड़त किने जे गेला पछाइत माने ओइठाम पहुँचला पछाइत जँ धरबारी अपन दुआर-दरबज्जा झाड़ए-बहारए लगैथ तँ बगैल क कातमे ठाढ़ भ जाइ। ई नहि जे अपने ठाढ़ छी आ घरवारी ओरियान क रहला अछि तँए अपमान भेल। दरबज्जाक बेवस्था बनत, जखन ओइठाम बैस परिवारक धाराक आदान-प्रदान हएत। भाय, दुनियाँ छी किने, रंग-रंगक नाच-तमाशा, रंग-रंगक मंचपर ठाढ़ भ तमसगीर अपन तमासा देखैबतो अछि आ आगूओ देखेबे करत।

सुवासिनीक 'पान' सुनि दिअर जकाँ हिम्मतलाल अनठा देलक। अनठबैक कारण भेलै जे जइ मिथिलांचलमे चाह पीआक बेसी अछि तइ मिथिलामे चाहक उपज (उत्पादन) नइ हुअए तखन अनका भरोसे केते दिन चलब? अपन उड़िया चाह पत्तीक चाह बना रूक्मिणी दुनू परानी राधारमणक हाथमे कप पकड़बैत बजली-'मेम सहाएब, उड़िया चाह छी।'

ओना, पानसँ पहिने चाहक पूर्ति भेने सुवासिनीक मनमे नवचेत भेलैन। नवचेत ई भेलैन जे मिथिलांचल, जे अंग्रेजक चाह बगने छल आ पान हथियौने रहल, तैठाम पानक अपन उपज-बाड़ी सेहो ने छल। हिम्मतलालक पत्नीक मुहसँ सुनल 'मेम सहाएब' अंगरेजीक प्रभाव छी, जे बदैल आइ मैडम भ गेल।

पान भेला पछाइत हिम्मतलाल, दुनू गोरेक बीच माने राधारमण आ सुवासिनीक बीच बैसल। हिम्मतलालक पाछू पत्नियोँ आ माइयो आबि बैसली। ओना, भीतरे-भीतर जहिना राधारमण हिम्मतलालकेँ देख रहल छला तहिना हिम्मतलाल सेहो अपना नजरिये राधारमण दुनू परानीकेँ देखैत रहैन। दुनू परिवारक सम्मलित रूप देख राधारमण बजला-'हिम्मतलाल, परिवारमे के सभ छैथ?'

हिम्मतलाल बाजल-'सर, जहिना अहाँकेँ पनरहे दिन ऑफिस-प्रवेशक भेल अछि तहिना हमहूँ कोनो पुरान नहि छी, पैछले सालसँ हमहूँ छी। जहिया नोकरी भेल तहियो आठ गोरेक परिवार छल आ अखनो अछि।'

हिम्मतलालक बात सुनि सुवासिनी बजली-'बच्चा कएटा अछि?'

हिम्मतलाल-'पाँचटा अछि। तीनटा बेटा आ दूटा बेटी। तैसंग पत्नियोँ अछि आ माइयो अछि।'

हिम्मतलालक परिवारसँ सटैत सुवासिनीकेँ देख राधारमणकेँ अनुकूल परिस्थिति बुझि पड़लैन। जइ अनुकूलताकेँ जीवनोपयोगी बनबैत राधारमण बजला- 'हिम्मतलाल, नोकरी केना भेल?'

ओना, राधारमणकेँ पछुआरसँ पता चलि गेल छेलैन जे हिम्मतलालक बहाली, पिताक मृत्युक पछाइत अनुशंसापर भेल अछि।

हिम्मतलाल बाजल-'सर, जहियासँ कार्यालय बनल तहियेसँ पिताजी नोकरी करैत छेला। करीब बीस-पचीस बर्ख नोकरीकेँ भेल रहैन। कार्यालयेक दू-मंजिलाक सीढ़ीपर सँ खसने मृत्यु भेलैन, पछाइत हमरा नोकरी भेल।'

अपन बेवहारिक अनुभवकेँ सबहक सोझमे अनैक खियालसँ राधारमण बजला-'अनुशंसाक बहालीमे बड़ लक्कड़-पेंच लगैए। से ने ते भेल?'

ओना, सुवासिनी सेहो सुनबो करै छेली आ मने-मन अपन माएपर नजैर एखि सोचियो रहल छेली। मुदा मुहसँ किछु बाजि नहि रहल छेली। हिम्मतलाल बाजल-'सर, देखै छिऐ जे घर अदहेपर लसैक गेल छल। पिताक मृत्युक पछाइत जे नगद भेटल ओइसँ घर बनेबाक विचार केलौं। पजेबा तँ कीन लेलौं, मुदा नोकरीक दौड़-बरहा आ घूस-पेंचमे तेते चलि गेल जे घर बनाएब पहाड़ जकाँ भऽ गेल।'

राधारमण बजला-'मायरामकेँ ते पेंशन भेटैत हएत?'

हिम्मतलाल- 'हँ सर, ओही पाइसँ तीनटा कोठरी आ दरबज्जा कहुनाक ठाढ़ केलौं हेन। रहै जोकर भ गेल, आगू बुझल जेतइ।'

कैरम बोर्डक अन्य गोटी जकाँ सुवासिनीक मनमे सेहो अपन परिवारक बेथा-कथा सुनबैक विचार आफन तोड़ए लगलैन। आफनो केना ने तोड़ितैन, सुखकेँ ने लोक चोराक रखए चाहैए मुदा दुख तँ से नहि छी। ओ तँ सतैत मनकेँ दुखबैत रहैए जे दोसरकेँ देखले-सुनला आ कहले-सुनलासँ कमैए। ओना सुवासिनीक हाव-भावसँ राधारमण बुझि गेला जे हुनका मनमे (पत्नीक मनमे) अपन परिवारक घटना सेहो आफन तोड़ि रहल

छनि तँए अपन आ हिम्मतलालक विचारक प्रवाह जे अछि ओकरा हिम्मतलाल आ सुवासिनीक माइक मुँहमिलान किए ने क दिऐन जइसँ परिवारक एकरूपताक बोध हेतैन। मनुख कोनौं परिवार वा केहनो परिवारमे किए ने हुअए, अपन ओकातिक अनुकूल परिवारक रहन-सहन किए ने होउ, मुदा जीवन तँ जीवन छी। चाहे ओ मनुखक अपन जीवन माने असगरूआक, होउ आकि परिवारिक होउ, ओकर तँ अपन बुनियाद छै। जेकरा पुरबैक वस्तु वा अन्य भावकेँ लोक बुनियादी जरूरत बुझैए, से तँ सभकेँ छइहे। रौद-वसातक प्रकोप होउ आकि पानि-पाथरक प्रकोप होउ, मानवीय होउ आकि दैवीय होउ, ओ तँ सभकेँ छइहे। क्रियाशील राधारमण सुवासिनी आ रूक्मिणीक मुँह-मिलानी करैत बजला-

'हिम्मत, ऐठाम तोहर माइयो छथुन, जिनका पंच मानि लहुन, एम्हर तोहर पत्नी भेलखुन आ ओम्हर कार्यालयक हिसाबसँ भौजी आ उमेरक हिसाबसँ भावो सुवासिनी भेलखुन, बीचमे हम भलैं जे होइ मुदा भेलौं तँ तोरा आगूमे बाले-बोध किने, तँए बजै छी, तोहर भौजियो हमरा सड़केपर भेटल छेली।'

ओना, राधारमण ताना मारि बाजल छला, मुदा सुवासिनीकेँ तेकर मिसियो भरि कुवाथ नहि भेलैन। बिहुसैत बजली-'बौआ, माने हिम्मतलाल! केना अहाँ दिअरो भेलौं आ भैंसुरो भेलौ?'

अपन जड़ियाएल मोटरीक भार उतारि हिम्मतलाल बाजल- 'जखन पितातुल्य भाय सहाएब बैसले छैथ तखन हमर बाजब उचित नइ हएत। उचित एतबे हएत जे जिनगीक बतीसम बर्खमे नोकरी शुरू केलौं।'

हिम्मतलालकेँ महिला जगतसँ फराक होइत देख राधारमणक मनमे उठलैन जे नाँहकमे हम फँसि जाएब। जखन तुलसी बाबा हारि मानि कहलैन जे 'सबै नचाबै राम गोसाइ', तैठाम अपने कोन खेतक मुड़ै छी..! अपन परिवारपर नजैर तड़ैप क पहुँच गेलैन। पहुँचते मनमे उठलैन जे केते सुन्दर परिवार हिम्मतलालक अछि। भार-मुक्त माए छैन, दुनू परानी हिम्मलाल परिवारक पाछू चौबीसो घन्टा लागल रहैए, तैठाम अप्पन परिवार की अछि! दिन-राति पिताजी अधला छोड़ि नीक नहियेँ कहैत हेता। मुदा से कि अपनेटा बुझने हएत। मुदा ऐठाम तँ सभसँ श्रेष्ठ हमहीं छी। जँ अपन परिवार जकाँ वा अपना जकाँ हिम्मतलालकेँ मानै छी, तखन तँ परिवारो ने अपने जकाँ भेल। दू परिवारक ने समागम भेल अछि। मनमे अबिते राधारमणक मनक विचार फुलाइत निकललैन- 'अपना मनक मौजी आ बहुकेँ कहलौं भौजी।'

बजैक क्रममे राधारमण पत्नी दिस इशारा केने छला मुदा हिम्मतोलाल तँ कार्यालयक चपरासी सेहो छीहे। भलैं ओकर विचारक मानि कार्यालयमे नहि होउ, मुदा कोनौं प्रश्नकेँ जँ हलसँ बुझौल जाए तँ ओ उचित नहि बुझि सकै, सेहो केना नइ कहल जाएत। बिजलोका जकाँ बिचमानि भ हिम्मतलाल लोकैत बाजल- 'से केना यौ भाय सहाएब?'

ओना, राधारमण केता दिन ऐ पाँतीक प्रयोग क चुकल छला, तँए मनकथा सेहो एक दिन गाड़ीमे, माने ट्रेनमे बैसले-बैसल गढ़ि लेलैन। सएह बजला- 'हिम्मत भाय! हम सब, माने मिथिलामे रहनिहार ऐ सूत्रकेँ मानै छी जे अपनासँ जे ऊपर जीवित छैथ, ओ एक सीमा भेला आ अपन आगू बढ़ैत पीढ़ी जे अछि, ओ भेल दोसर सीमा, मुदा अखन तँ जगरनाथ बाबाक धरतीपर छी, तँए दोसरो परिवारकेँ तँ ओहन स्थान अछिए। तेहने स्थानक दू परानी गाड़ीमे स्लीपर बोगीमे रहैथ। निच्चाँ-ऊपर यात्री चारूकात भरल छल। सभ अपन-अपन परिवारक संग हँसैत बजैत रस्ता काटि रहल छल। मुदा ओ बेचारे माने दुनू परानी, ऐ लोक लाजकेँ मानि जे पति-पत्नीक बीचक प्रेम अपन छी, तँए लोकक बीच प्रदर्शित हएब जरूरी नहि, ओ तँ एकनिष्ट प्रेम छी। तँए दुनू परानीक बीच हँसी-मजाकक कोनो एहेन वातावरणे नहि बनि रहल छल।'

मुस्की दैत हिम्मतलाल बाजल-

'भाय सहाएब, तखन तँ ओइ बेचाराकेँ औनैनी-पाद (औनाइक दिशा) निकलए लगल हेतइ।'

जहिना समदृष्टिकेँ आनन्द भवन मानल गेल अछि तहिना अपन दृष्टिकेँ एकनिष्ट करैत समेकित होइत राधारमण पत्नी दिस ताकि बजला-

'जेहने परिवार हिम्मतलालक अछि तेहने ने अहूँक नैहरक परिवार अछि। हिम्मतलाल माएकेँ परिवारसँ मुक्त बनौने अछि जखन कि अहूँकेँ माए छैथ किने?'

ओना, हिम्मतलालक अनुशंसाक नोकरी सुनि मने-मन सुवासिनी सहैम गेल छेली जे राधारमणेक कएल काज माएकेँ अनुशंसापर नोकरी दिआएब भेलैन। तैसंग राधारमण हमरा सन बिलटैत परिवारकेँ थामि जीवनक धारमे परिवारकेँ ठाढ़ क देलैन, एहेन पुरूखकेँ केहेन पुरूख कहल जाए, से आइ धरि मनमे कहाँ उठल..। सुवासिनीक मनक भेल गति साँप-छुछुनैर जकाँ बनि गेलैन। मूस बुझि जँ खाएत तँ परान गमाएत, नहि जँ दाँतसँ पकैड़ छोड़ि देत तँ आन्हर हएत..! जखन आँखिये नइ रहत तखन देखत की। आँखिये ने दुनियोकेँ देखैए आ दुनियोकेँ आँखिये देखबैए। जखने मनुख दुनियेँ जकाँ अपनो दुनियाँ (माने भेल, एक बाहरी दुनियाँ, दोसर भीतरी दुनियाँ) केँ देखए लगत, तखने ने बाहरी दुनियाँक भीतरी दुनियाँ देखए लगत। तहिना जखन कियो भीतरी दुनियाँकेँ देख लइए तखन बाहरी दुनियाँकेँ सेहो ने देखए चाहैए। भलैं दुनू दुनियाँक दू रूप किए ने होउ। दू रूपमे भेल एकटा जहिना सत्य अछि तहिना दोसर असत्य सेहो अछिए। भलैं दुनूक रंग-रूप देखैमे एकरंगाहे अछि। ओना, मने-मन सुवासिनी अपनाकेँ भोथियाएल यात्री जकाँ बुझि पड़ि रहल छेली, मुदा जखन पतिक संग छी तखन भोथियाएब केना भेल। अपने विचारक धारमे सुवासिनी कखनो उगै छेली तँ कखनो डुमै सेहो छेली। जहिना तत्वज्ञानी पुरूख तात्विक भेलाक पूर्वक अपन अतात्विक दिशा देख मने-मन हँसबो करै छैथ आ पश्चातापो करै छैथ जे एते समय माने जीवनक एतेक समय पानिमे दहा-भँसिया

गेल, तहिना सुवासिनीक मन सेहो मानि लेलकैन। एकाएक मनमे जिज्ञासा जगलैन जे किए ने हिम्मतलालक जिनगीकेँ लगसँ अधिक-सँ-अधिक जनैक परियास करी। समतुल्य बनि सुवासिनी बजली- 'जहियासँ सासुर बास भेल तहियासँ नैहर बिसैर गेलौं। अहाँ केते पढ़ल छी हिम्मत?'

'पढ़ब' सुनि हिम्मतलालक मन चढ़ि उठल। बाजल- 'मेम सहाएब, जहिना अपने बी.ए. पास छी, तहिना घरोवाली बी.ए. पास अछि।'

'बी.ए. पास' सुनि सुवासिनी बजली- 'तखन दुनू परानी नोकरीए किए ने करै छी?'

हिम्मतलाल बाजल- 'अहाँक जे प्रश्न अछि तेकर उत्तर दइमे बेसी समय लगत। तँए जँ हम उत्तर दिअ लगी आ बिच्चेमे भाय साहैब कहए लगैथ जे बिलम्म भ रहल अछि, चलू। तखन तँ अधमरु साँप जकाँ ने मनक विचार कछ-मछाए लगत। तँए पहिने भाय साहैबसँ पुछि लियौन।'

ओना, राधारमणक मनक अभ्यन्तरमे रहैन जे हिम्मतलालक विचार जीवनक पूर्व अवस्थाक एकधुरीक विचार हएत, जे पढ़ल-लिखल रहनौं सुवासिनी नहि बुझि पेब रहली अछि तँए जीवनक जे सत्य अछि तइसँ परिचित भ जेती। मुदा एक्के दिनमे केते परिचय कएल जा सकैए। दुनू परिवारक बीच सम्बन्ध केना नीक-सँ-नीकतर बनैत चलत, से भेल मूल विचार। अखन सम्बन्ध स्थापितक प्रथम दिन छी। हिम्मतलालकेँ रोकैत राधारमण बजला- 'हिम्मत, गप-सप्प करैक जँ बेसी मन (जिज्ञासा) होइत हुअ ते निचेनसँ आगूओ होइत रहत। तइ ले कोनो अगुताइ अछि। आइ पहिल दिन छी एतबे राखह।'

ओना, सुवासिनीक मन कनी चोटेलैन मुदा आगू निचेनसँ गप-सप्प होइत रहत, सुनि शान्ते रहलैन। विचारकेँ बदलैत सुवासिनी बजली- 'बाल-बच्चा सभकेँ पढ़बै छी किने?'

हिम्मतलाल बाजल- 'की पढ़ाएब मेम सहाएब, सोझे इस्कूल धरौने छी। जैठाम पढ़ाइ होइए तैठाम जाइक ओकाइत नहि अछि आ जैठाम अछि, तैठाम पढ़ाइ नइ अछि। तखन तँ लोक जे दुसत जे बेटा-बेटीकेँ इस्कूल देखौने छह कि नहि, तइ खानापूरी करै दुआरे महल्लेक इस्कूलमे पढ़बै छिऐ।'

हिम्मतलालक बात सुनि सुवासिनीक मनमे मिसियो भरि हलचल नहि उठलैन। तेकर कारण भेलैन जे सामान्य पढ़ाइक रूप-रेखा जे अछि, बात तही अनुकूल बुझि पड़लैन। मुदा राधारमण हिम्मतलालक श्रमशक्तिकेँ जानि चुकल छला तँए बुझि पड़लैन, हिम्मतलाल अपन शक्तिकेँ छिपबैत बाजल अछि। फेर अपने मन गोहरियबैत विचार देलकैन जे जखन चेले बहीर-मतसून रहत तखन जँ गुरु अपन जान छोड़ा आन्हर बनल नहि रहैथ सेहो तँ नीक नहियेँ हएत।

हिम्मतलालक विचारकेँ पोस्ट-मार्टम (चीर-फार) करैत राधारमण बजला- 'हिम्मत भाय, किए ने मेम सहाएबकेँ खोलि क कहि दइ छुहुन जे पाँचोमे कएटा स्कूल जाइए आ के कोन किलासमे पढ़ैए?'

राधारमणक विचार सुनि हिम्मतलाल मने-मन तुष्ट भेल जे अगर माए-बाप धिया-पुता-ले किछु समय निर्धारित क पढ़ाएत, पढ़ाएबक अर्थ जीवनक पढ़ाइसँ अछि। तँ ओइ परिवारमे बिलम्मसँ उच्छृंखलता औत। नहियोँ आबि सकैए। मुदा से निर्भर करैए परिवेशपर। राधारमण बजला- 'जहिना अखन दुनू परिवारक सभ एकठाम बैस जीवन गाथा गाँथि रहल छी तहिना आगूओ गथैत रहब। अखन चलैक बेर भ गेल तँए चलै छी।'

राधारमणक विचार सुनि हिम्मतलाल 'हँ-हूँ' किछु ने बाजल। मुदा आँखिक इशारासँ जेना पत्नीकेँ किछु कहि देलक। बैसकसँ उठि रूक्मिणी आँगन आबि अभ्यागतक सुआगतक पाछू लागि गेली। तैबीच हिम्मतलाल बच्चा सभकेँ पढ़बैक अपन बात बाजए लगल- 'भरि दिन तँ घरसँ कार्यालयक कार्य तकमे व्यस्त रहै छी, मुदा राति तँ अपन हाथक ने भेल तइमे प्रतिदिन दू घन्टा पाँचो बच्चाकेँ पढ़बैमे लगबै छी। ओना, छोटका तँ अखन बड़ छोट अछि मुदा ओहो एकाध-घन्टा लगमे बैसल रहैए।'

हिम्मतलालक बात सुनि सुवासिनीक मनमे सुचिताका प्रति जेना नव आकर्षणक संचार भेलैन। मनमे विचार घोराए लगलैन जे स्कूलमे किछु सीमित विषयक पढ़ाइ होइए, मुदा जिनगी तँ असीमित अछि। ओइ असीमितकेँ परिवारे ने सिखा-पढ़ा सीमित बना सकैए। भेल तँ यएह ने जे अखन तक जे समाजिक धारामे परिवारक प्रवाह अछि ओइ प्रवाहकेँ, माने पैछला पीढ़ीसँ ऐगला पीढ़ी तक धारनुमा प्रवाहित होइक दायरा बना लेब। जइमे परिवारक संग-संग बेकतियोक जीवन प्रवाहित होइत रहत। जँ से नहि हएत तँ अनेरे परिवारमे विषमता बढ़ैत रहत। माने ई भेल जे जेहेन परिवारक आँट-पेट'आँट-पेटक माने सभ साधनसँ सम्पन्न'रहत तइ हिसाबसँ चलने समता बनल रहैए, मुदा जँ तइ हिसाबकेँ छोड़ि बहवाड़ि बाट पकड़ने विषमताक सम्भावनेटा नहि अनिवार्यता सेहो भइये जाइए।

सुवासिनीकेँ अपन परिवारक बुद्ध जगलैन। **बुद्धि** ई जगलैन जे जेना आन-आन पत्नीक जीवन अछि जे सोल्होअना पतिपर आश्रितो रहै छैथ आ हुकुमदारिनी (माने आदेश पालक) बनि सेहो जीवन बितबै छैथ, तइसँ तँ ई नीक ने भेल जे जखन पढ़ि-लिखि एक सीढ़ीपर पहुँच गेल छी, तैठाम तक बालो-बच्चाकेँ पढ़ाइये सकै छी। जखन ओकरा पढ़ाएब शुरू करब तखन ने गुरूत्वक बोध हएत...। ओना, विचारक दौड़मे सभ बुझै छी जे माता-पिता बेटा-बेटीक माते-पिता टा नहि, प्रथम गुरु सेहो छैथ। जखने माता-पिता गुरु सेहो बनि जेता तखने ने बाल-बच्चाक यादगार सेहो बनि जेता। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि जे पिता आ गुरुमे किछु अन्तरो अछि वा एकरंगाहे भेल? अन्तर अछि! अन्तर ई अछि जे जैठाम माता-पिता पालकक रूपमे छैथ तैठाम गुरु प्रेरक भेला। खाएर जे भेला, मुदा माता-पिता बाल-बच्चाक गुरुआइ नहि क सकै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। कइये सकै छैथ। केनिहार करितो छैथ।

घड़ी देख राधारमण एकाएक उठि क ठाढ़ होइत बजला-

'हिम्मत, आब चलब।'
तैबीच रूक्मिणी डालीमे तीनू गोटा-ले माने राधारमण, सुवासिनी आ सुचिता ले, देहक वस्त्र नेने पहुँच राधारमणक आगूमे रखि देली। ओना, सुवासिनी साड़ीक रंग-रूप देखए लगली, मुदा राधारमणक मनमे भादवक अन्हारक मेघौन जकाँ लटकए लगलैन। जहिना भादवमे एक दिस अकाससँ पानि झहरैए तँ दोसर दिस बिजलोका सन शक्तिवान प्रकाश (इजोत) सेहो चमैकते अछि आ तेसर दिस अन्हारो तँ ई कहिते अछि जे यएह तँ भादवक अन्हारक खेल छी, जइमे सबहक जीवन सेहो समाहित अछिए। राधारमण बजला- 'हिम्मत भाय, हम तोरा दोसर नहि बुझै छिअ, तैठाम एकर'माने वस्त्रक'कोन जरूरत अछि..!'
अपन परिवारक परम्पराकेँ सुनबैत हिम्मतलाल बाजल- 'भाय साहैब, सभ परिवारकेँ अपन-अपन किछु धरोहर होइ छै, सएह छी।'
हिम्मतलालक बात सुनि राधारमण अवाक भ गेला। अपना दिस तकैत विचारलैन जे हम किछु छी तैयो हिम्मतलालसँ आगू छी, तैठाम जँ एहेन सम्बन्ध ओ स्थापित करए चाहि रहल अछि तँ हमरो आगू बढ़ि सम्बन्धकेँ सुदृढ़ करक चाही। जेते कीमतक वस्त्र अछि तेते तँ अपनो देबा चाही। रस्तो अछिए। जखने धिया-पुता सभ गोड़ लागए लगत तखने ओकरा हाथमे पाइ दैत कहबै- 'बौआ, मिठाइ खइहह।' मुदा एक तँ दरमाहा जोकर काज नहि पूरल अछि, माने अधेमास भेल अछि, तइसँ वेतन नहि भेटल अछि। दोसर, अखन धरि जे परिवार चलि रहल अछि ओ दोसरे ओरियानसँ चलि रहल अछि। अपने तँ टहलैक खियालसँ चलल छेलौं, तँए हाथमे तँ किछु अछि नहि। अपन रस्ता की हएत? लगले राधारमणकेँ मिथिलानीक दृश्य मोन पड़लैन। मोन पड़िते गहना-जेबर-नगदपर धियान गेलैन। अखन तक सुवासिनी माइक देल धरोहर परिवारमे लगौली कहाँ अछि। आँखिक इशारासँ पत्नीकेँ पुछलैन। शिकारी सुवासिनी बुझि गेली। आने स्त्रीगण जकाँ सुवासिनी सेहो अपन नगद-नारायण सेहो संगहि अनने छेली।
जहिना हिम्मतलाल-परिवारक नव वस्त्र सभकियो माने तीनू बेकती राधारमण ग्रहण केलैन तहिना वस्त्रक मूल्यक सवाइ लगा बच्चा सबहक हाथमे दैत सुवासिनी हिम्मतलालक घरसँ विदा लेलैन।
रस्तामे, सुवासिनी कखनो अपन साड़ीक दाम लगबैत तँ कखनो बच्चा'सुचिता'क शर्ट-पेंटक, मुदा जखन मन (दाममे) ओझरा जानि तखन राधारमण दिस ताकए लगैत। राधारमण अपन अन्तिम विदाइ माने जइ दिन गामसँ नोकरी दिस विदा भेला, दिन जे सीतानाथ आ गीतानाथसँ गप-सप्प करैक विचार केने छला से मोन पड़लैन। विचारि लेलैन जे डेरापर गेला पछाइत दुनूसँ गप करब।

(क्रमशः)

सम्पर्क : 99316 54742



साहित्य, संस्कृति-भाषा-समाजक ज्ञान-स्तंभ, पं. गोविदं झा शतायू भेला। मिथिला दर्शन परिवार एहि यशस्वी रचनाकार के अभिनंदन करइत गौरवक अनुभव करइए।

इन्वेस्टमेंट

• *धीरेंद्र कुमार झा*

श्याम बाबूक दिमाग मे एखनो 'इन्वेस्टमेंट' शब्दक सही-सही अर्थ नइ लागि रहल छलनि। अनायासे बामा हाथ सँ माथ कुड़ियाब लगलाह, की होइत हेतै एकर अर्थ। उज्जर पाइप के मोड़ि क बनाओल गेल तीन गोट फ्रेम मे पकिया हरियर रंगक पर्दा बान्हि क बनाओल गेल एकटा पर्दानुमा पार्टीशन। आठ टा बेड बला रूम मे एकटा अलग तरहक सुरक्षित कोन हएबाक भ्रम उत्पन्न करैत छलैक। राजकीय अस्पतालक सामान्य वार्डक आठ नम्बरक बेड। शुद्ध अस्पतालक वातावरण, बेडक बगल मे लोहाक स्टैंड बला खुट्टी, पानि केर बोतल लटकाब केर व्यवस्था, बेड केर नीचा मे एकटा स्टील केर अढ़िया आ पेशाब कर बला बरतन। बेड पर पएर दिस लटकल एकटा तख्ती पर दबाएल कएकटा पन्ना। बेड केर सिरमा सँ कनिए हटि क एकटा दराज बला टूल जाहि उपर मे कएक गोट दबाइ सँ भरल। बेडक बीचोबीच बामा कात एकटा खिड़की जकर पल्ला एखन खुजल छलैक। फागुनक रौदक एक टुकड़ी फर्श पर पड़ैत छलैक। ओना खिड़कीक दुनू पल्लाक तीन दूना छओ गोट शीशा मे सँ चारिटा नदारद छलैक। ई त छोटू ओइ दिन आएल छलैक त सब पर कागज लगा गोंद सँ साटि क बन्द केलक। नइ त ततेक मच्छर घुसि जाइत छलैक जे राति आ दिन, तबाह केने रहै छलैक। ने ऑलआउटक शीशी काज करैत छलैक ने मार्टिनक कॉइल। बाद मे तैयो किछु हिसाब पर आएल।
उजरा चद्दरि आ तकिया पर चित्त पड़ल श्याम बाबू कँ करौट फेरबाक इच्छा भेलनि। बड़ी काल भ गेल छलनि चित्त पड़ल। कोशिश क क धीरे-धीरे बेड कँ सिरमा दिसका पाइप पकड़िक कोशिश केलनि। माधवी खिड़कीक बगल बला बेंच पर बैसल छली। उठि क अइलीह लग मे। इशारा केलथिन बैस लेल, प्रयास केलनि... धीरे-धीरे बामा करौट भ गेलाह। आब भ जाइत छलनि। खाली दहिना करौट घूमब मना केने छनि एखनि, कम सँ कम दू मास। सोचलनि, आब बड्ड सुधार भेल छनि कि, कनिए सहारा भेटला सँ उठि क बैसि जाइत छलाह। धीरे-धीरे ठाढ़ भ जाइत छलाह। एक गोटे संग रहनु त छड़ी ल क दस डेग चलियो लैत छलाह। बहुत किछु उम्मीद भ गेल छलनि... ठीक भ जाएब आब... ठाढ़ भ सकब...अपने सँ चलि-फिर सकब... नइ त ओइ दिन त' भेल छलनि जे आब इएह अंत भ गेल। सब किछु जेना समाप्त। निराशाक एहन गंभीर दबाव पड़ल छलनि जे कए दिन तक होनि जे आब फेरि उठि क ठाढ़ नइ भ सकताह। स्नान करिते काल कनिये जे पएर पिछड़लनि बाथरूम मे। नइ सम्हारि सकलाह। कनीकाल लागि गेलनि। ओ त संजोग छलनि जे बाथरूमक केबाड़ बन्द नइ छलैक। परूकाँ साल जे बोखार भेल रहनि, ततेक कमजोर भ गेल रहथि पन्द्रह दिन धरि चलथि त लगनि जेना पएर पताइत छलनि। ओही बेर सँ बाथरूमो जाथि त केबाड़ नइ बन्द करथि। खाली सटा दइ छलथिन... छिटकिल्ली नइ लगबैत छलाह। सएह काज देलकनि, पत्नी सुमित्रा बाथरूम मे एतेक जोरक आवाज सुनि क दौड़ल आएल छलथिन। नहाए बला बाल्टी उनटि गेल रहैक आ मग छिटकि क दूर चल गेल रहैक। मोन त छनकल रहिते छलनि। दौड़ल गेलीह केबाड़ खोलि क देखलनि भीजल देहे खसल, अचेत। उठएबाक कोशिश कएलथिन नइ उठाओल भेलनि। ताबत अपनो होस भेलनि। अत्यन्त तीव्र पीड़ा शरीरक दहिना भाग मेँ डाँड़ लग अनुभव केलनि। एहेन भयंकर दर्द, जे अपन पैंसठि बरखक जीवन मे नइ अनुभव भेल छलनि।प्रायः हुनकर शरीर एहन दर्द अइ सँ पहिने नइ सहने छलनि। तत्काले ज्ञान भ' गेलनि जे किछु भयंकर भेल छलनि हुनका संग। अपनो उठबाक कोशिश केलनि, पत्नी सुमित्रा सेहो जोर लगओलथिन दुनू बाँहिक भीतर सँ पकड़ि क मुदा तैयो नइ उठल भेलनि। बल्कि कष्ट और बढ़िए गेलनि। एकाध बेर और। प्रयास केलनि। सुमित्राक मोन अउना गेलनि। दौड़क' केबाड़ लग सँ जोर सँ सोर केलथिन छोटू... कनिए देरी भेलैक कि फेर चिकरलीह छोटू... सिड़ही सँ उतरि क बढ़लीह महेश बाबूक घर दिस। आकि 'छोटू' हड़बड़ाएल निकलल। की काकी...? ओहो आश्चर्यचकित छल, एहन चिकरब त ओ नइ सुनने छलनि कहियो। आशंकित भेल छल... 'दौडू बउवा कनी आउ एमहर 'कक्का' खसि पड़लाह... बाथरूम मे...'
छोटू सेहो दौड़ल। देखलकनि। दुनू गोटे मिल क उठेबाक प्रयास केलनि तैयो नइ भेलनि। दर्द और बढ़ाइए देलकनि। अंततः छोटू गेल आ पलटू कँ पकड़ि क अनलक। तखन दू गोटे मिलिक' कहुना उठा क ओछाओन पर सुतओलक मुदा एतबे मे त बूझि पड़लनि जे प्राण छूटि जएतनि, तेहेन दर्द। ओछाओन पर पड़ि त रहलाह मुदा हिललो नइ होनि। कनियो जे देह हिल जानि त फाड़ लगनि दर्द सँ। कुल्हाक बीच मे दहिना जांघ जत' मिलै छै कुल्हाक हड्डी सँ ओत्तहि। एखनो छूबैत जेना डर होइ छनि। सिहरि जाइ छथि। डर दूर क देने छलनि डाक्टर। डा0 राजेश... नीक डाक्टर अछि। सोचलनि मोने मोन आ कृतज्ञता सँ, भरि अएलनि मोन। नीक डाक्टरे नइ, नीक मनुक्खो अछि। से नइ रहैत त आइ अइ योग नइ भ सकितथि किन्नहुँ। बेंच पर बैसल माधवी दिस ध्यान गेलनि। पुछलथिन "कतेक काल छै गाड़ी आब मे..."
खिड़की सँ बाहर तकैत जवाब देलथीन माधवी "... बस आब अबिते हेताह भैया..."

आब मोन व्यग्र भ उठल छलनि। पचीस दिन भ गेलनि अइ अस्पताल मे, अइ बेड पर। होई छलनि कखन घर जाएब।लेकिन माथ मे जेना फेर घुड़ियाए लागल छलनि... आखिर ठीक ठीक की अर्थ होइ छै "इन्वेस्टमेंट" क - अइ अंग्रेजी शब्दक भावार्थ त मोटामोटी बूझै छलथिन मुदा एकर ठीक-ठीक अर्थ नइ बूझि पाबि रहल छलाह... अर्थशास्त्रक एहि शब्दक सही अर्थ जरूर पुछथीन प्रो0 श्रीवास्तव कैं - ओ ठीक सँ बुझा सकतनि। संगी छलनि स्कूले सँ। खूब तेज। तेज त ई अपनो छलाह। मुदा ओ कनी बेसी तेज। बी0 ए0 आनर्स तक दुनू गोटे रहथि सँगे मुदा परीक्षा होइत-होइत पिता गाम मे ओछौन ध लेलथिन, खबरि भेलनि। माता-पिताक एकमात्र संतान परीक्षा खतम होइते पड़ेलाह गाम। देखलनि ठीके स्थिति गंभीर। बड्ड कमजोर भ गेल छलाह एतेक जे पकड़ि क ओछाओन सँ उठथि। नीक जेकाँ नित्य क्रिया तक नइ कएल होनि। घुरि क जे गाम एलाह श्याम बाबू त, फेर गामे के भ क रहि गेलाह। पिताक शरीर क्रमशः घटिते गेलनि आ श्याम बाबूक सेवा बढ़िते गेलनि। आनर्सक परीक्षाक रिजल्ट आएल छलनि। ओ आ श्रीवास्तव दुनू गोटे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेल छलाह। मुदा परीक्षा फल सेहो अनबाक पलखति नइ निकालि सकलाह आ श्रीवास्तव त सोझे एम0 ए0 केलक ओहू मे फर्स्ट क्लास भेलैक। लगलेप्रोफेसरी सेहो भेटि गेलैक। जीवने बदलि गेलैक। सब किछु अपन रस्ता पर।

ओहू अवस्था मे पिता पाँच बरख धरि जीबैत रहलथिन आ जखनि अंततः आँखि मुनलथीन त श्याम बाबूक जीवने बदलि गेल छलनि।

शास्त्रोक्त विधि सँ सब काज सम्पन्न भेलाक बाद पलखति भेलनि कनी बैसि क सोच के। थोड़े अपना बारे मे, भविष्यक बारे मे। किछु नइ सूझनि दूर दूर तक निपट बियाबान। पिताक अंतिम इच्छा पूर्ति लेल विवाह केलनि आ हुनक मृत्यु होएबा सँ छओ मास पूर्व मनीषक जन्म सेहो भ चुकल छलैक। पौत्रक मुह देखि लेलनि। मोन भरि गेल छलनि पिताक, आब किछु होअओ, कोनो बात नइ। चल एलाह ओही अपन मित्र लग....श्रीवास्तव लग। ककरा सँ गप्प करताह, ककरा सँ विचार पुछथीन। ओएह विचार देलकनि बी0 एड0 करै लेल, नोकरी भेट' मे आसानी हएत। अपनो मोन मानि गेल छलनि। मोन स्थिर केलनि... बी0 एड0 क क चट द नोकरी भ गेलनि गामेक लग हाई स्कूल मे। तहिया त कम्मे पाइ दैत छलै दरमाहा। मुदा फेर धीरे-धीरे ठीक भेलनि। माधवीक जन्म भेलैक। दुनू संतानक पढ़ाइ लिखाइ मे कोनो कसरि नइ छोड़लथीन कहियो। तैं ने दुनू कैं योग्य बनाक सुभ्यस्त क देलथीन। मनीष तेज त छल नेने सँ। आइ इन्जीनियर भ क दिल्ली मे पैघ कंपनी के अफसर अछि। कतेक पढ़ि लेलकैक मनीष... सोच लगलाह श्याम बाबू। कोना एतेक बात बूझि गेलैक। कतेक हिसाब किताब बूझै छै, कतेक अर्थशास्त्र बूझै छै...? नइ अनुमान केने छलाह एतेक 'समझदार' भ गेल छलैक मनीष। हँ, एकटा बात आइ दिमाग मे आबि रहल छलनि जरूर जे बात आइ सँ पहिने कहियो नइ सोचने छलाह, जे अपन शिक्षा अपूर्ण छोड़ि पिताक सेवा मे लागि जएबाक हुनक निर्णय सही छलनि कि नइ? एतेक दिन धरि ई बात कहियो मोन मे नइ आएल छलनि। मुदा जेनेरल वार्डक ओइ बेड पर पड़ल आइ अपन ओइ निर्णय पर ओ पुनर्विचार करबा लेल बाध्य भेल छलाह।

माधवी दौड़ल आएल छलीह जखने माए खबरि केलथीन जे "बाबू खसि पड़लाह बाथरूम मे - उठल नइ होइ छनि - एत के डाक्टर देखलकनि अछि, कहै छनि - टूटल छनि - बड़का अस्पताल ल जाए पड़तनि..." ओछाओन पर पड़ल पड़ल सुनि रहल छलाह श्याम बाबू। दर्द असह्य छलनि। बेचारा पड़ोसिया डाक्टर देख गेल छलनि। तुरन्ते कहि देलकनि - हड्डी विशेषज्ञ सँ देखब लेल - टूटि गेल छनि। ओकर कम्पाउन्डर दर्दक सुइ द जाइ छलनि। दू-तीन घंटा लेल कनी कम होनि मुदा फेर जेना फाड़ लगनि। ओइ सुइ-दवाइ सँ कते राहत हेतनि, तथापि बेचारा जहाँ तक भेलइ कइए रहल छल। कनियो देह कैं हिलबथि त लगनि जेनाप्राण छूटि जेतनि। ताबत जे किछु करबाक अछि से ओछाओने पर। बेचारा छोटू परेशान छल। शारीरिक क्रियाकलाप त ने बन्द भ' जेतैक... दैहिक क्रिया त चलिते छलैक...जेना तेना ओ दिन बीतल।

माए कैं कनी भरोस त भेलनि मुदा, की कएल जाए ताहि लेल प्रतीक्षा होब लागल मनीषक। दोसर दिन भोरुका फ्लाइट के टिकट भेटलनि। सबेरे चलताह दूपहर तक आबि जेताह। गप्प लगातार भइए रहल छलनि। काल्हि जखने सँ खसलाह श्याम बाबू, तखने सँ छटपट क' रहल छलाह.... कखन अएताह मनीष? काल्हियो चाहितथि त आबि सकै छलाह। दूपहर मे चलितथि साँझ धरि पहुँचि जइतथि। जल्दी मे भने हवाइ जहाजक भाड़ा जरूर बढ़ि जाइ छै। भाड़ा बेसी लगितनि त की भेलइ, ओ सक्षम छथि। अइ तरहक समय मे ई सब थोड़े देखल जाइ छै। सुनलनि जे मनीष आबि गेलाह, मोन हल्लुक भ गेलनि - चलू आब कष्ट सँ छुटकारा भ जाएत - ओ अबैत देरी सम्हारि लेताह... एक सँ एक डाक्टर आ हॉस्पिटल जे संभव छैक क क छोड़ताह... एना कष्ट मे थोड़े रह देथीन... खाली आब त दियौक... सब तरहक क्षमता छैक ओकरा... केहनो परिस्थिति मे घबड़ाइत नइ छल...जनैत छलाह हुनकर इलाज मे कोनो कसरि थोड़े छोड़तनि ओ....

ओइ दिन आहटि भेल छलैक गेट पर, माधवी बाजल छलीह "भैया आबि गेलाह..." मोन प्रसन्न भ गेलनि। भरोस भेलनि, चलू देरियो भेलैक त कोनो बात नइ... कनियाँ, बच्चा सब बादो मे अओतैक त कोनो बात नइ। अबैत देरी भीतर गेलाह, माए सँ भेंट केलनि। सबटा हाल सुनि तखन अएलाह ओइ घर मे... पएर छुबि प्रणाम करैत पुछलथिन "कोना छी बाबू...?"

"...देखिते छी कोना छी, खसि पड़लहुँ बाथरूम मे, कोना खसलउँ से आब यादो नइ अछि... कनीकाल त बेहोस रही प्रायः, ज्ञान भेल

त ततेक जोरक दर्द रहए... आइ धरि एहन दर्द नइ भेल छलए... एखनो त' अछिए..."
"..कोनो बात नइ 'बाबू' ठीक भ जाएत..."
"...हँ, हँ... ठीक किए ने हएब..." पुत्रक मुह सँ एहने बातक आशा करैत छलाह। आँखि मूनि लेलनि... भरोस भेलनि... आब कष्ट दूर भ जेतनि।
माए चाह जलपान करब लगलथिन। सँगे गप्प सेहो भ रहल छलैक - विचार भ रहल छलैक कोना की कएल जाए। ककरा सँ सम्पर्क कएल जाए। माए कहलथिन "आब देरी नइ करहुन। जल्दी सँ कोना की करबाक छैक से करइ जाउ, आइ दोसर दिन भ गेलनि ओछान पर। रखने कते परेशानी छैक बूझै छ्ही किने - सब किछु ओछाने पर कते बेर कपड़ा, चद्दरि सब बदल पड़लैए... कनियो घुसकाब पड़ै छनि त प्राण जाए लगै छनि..."
"...हँ, हँ... कनी गप्प क लैत छिअइ... पता करैत छिअइ कोना की छैक एत, कत ठीक हेतैक..."
मनीष तखनि सँ मोबाइल पर व्यस्त भ गेलाह। कतेक संगी परिचित कैँ लगाक गप्प करैत रहलाह बड़ी काल धरि। घर मे गप्प नइ करै छलाह। बाहर मे टहलि-टहलि क गप्प करैत रहलाह। राति भ गेलैक कोनो अस्पताल नइ ल गेल जा सकलनि। कोनो विचार नइ भ पाबि रहल छलनि... कत हेतनि इलाज। कोनो अस्पताल जाउ त पहिने त सब तरहक टेस्ट-एक्स रे... तखने ने इलाजो शुरू हेतनि। ऑपरेशन त करहि पड़तनि ओहो लंबा ऑपरेशन... कोनो छोट-मोट नइ। एकाधिक बेर श्याम बाबू भीतर सँ खोज क चुकल छलथिन... "कत छथि मनीष, की सोचि रहल छथि... अनेरे समय दूरि करै छथि..."
मनीष अंततः मोबाइल बन्द क क बैसि गेलाह - बरामदा पर बहुत बात सोचैत। पता नइ, की कहाँ। श्याम बाबू सटले घर मे पड़ल छलाह। एखने सुई द क गेल छलनि। जएह किछु घंटा दर्द सँ कनी राहत। कनियो जहाँ दर्द कम होइत छलनि त निन्न पड़ि जाइत छलनि। बैसल बैसल झूक लागल छलाह मनीष - "किछु खा ने लिअ भैया..." लग मे आबिक' पुछलथीन माधवी... "द दे जे छै से, किछु त चाहबे करी..." रोटी-तरकारी बनल छलैक। आनि क देलथीन माधवी, खाए लगलाह मनीष। कनी रुकि क पुछलकनि माधवी - कनी थकमकाइते सन -' की सोचै छिऐ भइया, किए ने कोनो अस्पताल मे भर्ती क दै छिअनि, बाबू कैँ... देखै नइ छिअनि कते कष्ट मे छथीन..."
"...देखै छिअनि कि... देखिए रहल छिअनि... सएह त देखि रहल छिअइ। कत एडमिट कराएब ठीक हेतइ..."
"... अइ मे एतेक देख के की छैक भैया - एक सँ एक हॉस्पिटल छैक एत... अपोलो, पारस, रूबन... सब एक सँ एक... सब तरहक व्यवस्था रहै छै ओकरा सब लग, खाली एक बेर खबरि करबाक देरी छैक..."
"... से त' बुझिते छिऐक, कनी पता क रहल छिअइ कोना कत कनी सस्ता मे भ जाए... ओकर सबहक हिसाब-किताब बूझै छही - एक बेर फँसू त' लाखक लाख कोना खर्च भ जाइ छै - पतो नइ चलै छैक..."
"... से त छै भैया, खर्च त होइते छइ मुदा, फेर बेर पर ई सब थोड़े देखल जाइ छै... आखिर भैया, पाइ केर काजो त अही सब बेर पर होइ छै..."
"... से त छै... मुदा बुझै नइ छही, बाबू सब पर आब एतेक पाइ 'इन्वेस्ट' केला सँ की फायदा..." बजैत-बजैत हाथ रुकि गेल छलनि मनीषक आ चुप भ गेल छलीह माधवी... हुनका लेल वार्तालाप समाप्त भ चुकल छलनि। फेर सँ कौर उठबैत बजलाह मनीष -"तखन देखै छिअइ की कएल जाए..."
माए भानस घर मे छलथिन ओ प्रायः नइ सुनलथीन। मुदा श्याम बाबू अपन कोठली मे सूतल नइ छलाह। दुनू भाइ-बहिनक वार्तालाप पर कान छलनि... गुम्म भ गेलाह। एहनो घोर विपत्तिक समय मे अपन पुत्रक मुह सँ एहि तरहक प्रतिक्रियाक उम्मीद नइ केने छलाह। कनीकाल लागि गेलनि अपना कैँ सम्हार मे, पड़ले-पड़ल पूरा जीवन आ मनीषक जन्म सँ ल क एखन धरिक समय एक-एक क घूमि गेलनि आँखिक सोझाँ... जीवन भरिक तपस्या, लगलनि जेना सभटा समाप्त भ गेलनि... निराशाक एकटा एहन तीव्र वेदना उठलनि भीतर मे, अपना पर धिक्कार होब लगलनि... "एहन भ गेलहुँ, किए जीबै छी आब..." आँखि मूनि लेलनि... दुनू आँखि मे भरल पीड़ा टघरि क माथ तरक गेड़ुआ पर खसि पड़लनि...।
राति भरि एकटा बिहाड़ि बहैत रहलनि मोन मे। देहक कष्ट किछु कम लागि रहल छलनि। भोर मे माधवीक उठबाक प्रतीक्षा क रहल छलाह। माधवी के कहलथिन -"माधवी कनी 'महतो'जी के फोन लगा त... नम्बर हेतइ ओइ मे, साइंस टीचर छलाह हमरे स्कूल मे, हुनकर बेटा डाक्टर छनि... कहै छलाह जे हड्डीक अस्पताल जे खुललैए सरकारी... ओही मे अएलाह अछि..."
'महतो'जीक बालक - 'राजू' माने डा0 राजेश, पता लगिते अपने फोन केलकनि। कहलथिन सब बात- इहो जे -"एक बेर देखि लितए आबिक'..." कहलकनि "अस्पताल जाइते काल देखि लेब, अबै छी..."
नओ बजैत-बजैत डा0 राजेश दाखिल छलाह... भीतर एलाह... मनीष ल क अएल छलथीन भीतर -"कोना भेल चचा..." एक बेर फेर सँ सबटा बात कहलथिन... जाबत ओ कहलथिन ताबत डा0 राजेश सब किछु देख चुकल छलाह... कहलथिन -"फ्रैक्चर त अछिए, एकर जल्दी सँ जल्दी इलाज हएबाक चाही... ऑपरेशन कर पड़त आ ठीक भ जाएत... चिंताक बात नइ..."
पुछलथिन -"अहाँक अस्पताल मे छैक एकर व्यवस्था..."
"...हँ, हँ किएक नइ, सरकार अही लेल ने खोललकैए ई अस्पताल, मुदा..." एक बेर ओ मनीष दिस तकलनि... मनीष नीचा ताकि रहल छलाह... मूड़ी नइ उठा भेलनि...।

फेर पुछलथिन -"अहाँ ठीक क देब ने हमरा, ठाढ़ क सकब हमरा..." स्वर काँपि गेल रहनि, श्याम बाबू के...
जोर द क कहलकनि डा0 राजेश -"एकदम ठीक भ जाएब चचा, अहाँ अपने सँ ठाढ़ भ सकब, चलि सकब... भ सकैए किछु समान सब कीन पड़ए, अन्यथा सब इंतजाम त रहिते छैक..."
श्याम बाबू के बेशी किछु बाजल नइ भेलनि।
एक्के घंटा बाद एम्बुलेंस आबि क घरक सोझाँ मे ठाढ़ भ' गेल। स्ट्रेचर पर उठा क श्याम बाबू कैँ एम्बुलेंस मे चढ़ाएल गेल आ ओत्तहि सरकारी अस्पताल मे एडमिट भेला। एम्बुलेंस आब सँ पहिनहि मनीष कैँ कहलथीन, अलमारी मे सँ चेकबुक निकालि क दइ लेल... खर्चा सँ किछु बेशीए केर रकम भरि क सिरमा लग कहलथिन राख लेल। कनी जोर द क डॉड़ लग सँ देह कैँ मोड़ि क दस्तखत क देलथिन। कहलथिन -"आइए निकालि लेब... कखन कतेक केर जरूरत पड़त..."
अस्पताल पहुँचबाक एक घंटाक भीतर 'ट्रैक्शन पर द देलकनि बहुत आराम भ गेलनि, तखने सँ जाँच सब शुरू भ गेलनि... तेसर दिन ऑपरेशन क स्टील केर गुंड़ी लगा देलकनि... ऑपरेशन पैघ छलैक... लंबा चललैक... तैयो सफल रहलनि। क्रमहि ठीक होइत गेलाह। मनीष, ऑपरेशनक बाद डा0 राजेश सँ अनुमति लए क गेलाह... कए दिनक नोकसान भ गेल छलनि। आश्वासन द क गेल छलथिन जे जहिया डिस्चार्ज करबनि सूचना भेटला पर अवश्ये आबि क घर ल जेथिन। तदनुसारे सूचना देल गेल छलनि आ मनीष ठीके आबि रहल छलाह बाबू कैँ डेरा ल जाए लेल। बाकीक एतेक दिन आ राति माधवी आ ओ बगल बला छोटू मिल क सम्हारलक... कते परेशानी... कते दौड़-धूप... माए त कउखन क अबथीन कनीकाल लेल। हुनकर त घरे सम्हार मे समय बितलनि। मुदा अइ पचीस दिन मे श्याम बाबू जतेक काल धरि अस्पताल मे रहलाह इएह सोचैत रहलाह जे "इन्वेस्टमेंट"क ठीक-ठीक अर्थ की होइ छै।प्रायः एहन निवेश जाहिसँ किछु लाभक आशा रहए- जँ से त एकर मतलब हुनका पर खर्च केनाइ आब लाभप्रद नइ। हुनका अपन अइ नब 'स्टेटस' - नब परिचय सँ, साक्षात्कार भ रहल छलनि।
मनीष गाड़ी ल क आबि चुकल छलाह। एकरत्ती हाथ पकड़लकनि माधवी त उठिक' बैसि गेलाह। पएर नीचा रोपलनि, ठाढ़ भेलाह... स्र्कि गेलाह... दहिना हाथ सँ छड़ी कैँ टेकलनि बामा हाथ माधवीक कान्ह पर देलथिन आ बढ़ि गेलाह। चलबाक अभ्यास क चुकल छलाह। दूटा सीढ़ी उतरक छलनि बेटीक कान्ह पर कनी जोर देब पड़लनि। पहिने एकटा सीढ़ी... स्र्कलाह आ फेर दोसर, फेर धीरे-धीरे गाड़ी तक पहुँचि गेलाह। मनीष गेट खोलि क रखने छलथीन। कनी असौकर्य भेलनि। पहिने खुलले गेट मे पोन रोपि क बैसि गेलाह, फेर धीरे-धीरे घुसकिक' भीतर केलनि अपनाकैँ आ पएर के भीतर धीरे-धीरे मोड़ि क। गेट बन्द भेल, सब बैसल। गाड़ी स्टार्ट भेल। लगले पहुँच जएताह डेरा। पचीस दिनक बाद अपन घर वापस जा रहल छलाह। नीक जेकाँ अपन घर वापस जा सकब, भरोस नइ छलनि। तखन पहिने सन त नहिए रहलाह तैयो ठीके छै। ई पचीस टा दिन कते किछु ल लेलकनि जीवन सँ। तखन हँ बहुत किछ देबो केलकनि। बहुत किछ ज्ञान भेलनि। बहुत पैघ शिक्षा द गेलनि। सोचलनि भरि जन्म लोक सिखिते रहैए... ठीके छैक।
डेरा आबि गेल छलनि। गाड़ी रूकल। पत्नी ग्रिल खोलि क ठाढ़ि छलथिन... खबरि भ चुकल छलनि। अपनाकैँ बाहर दिस मोड़ि क पएर बाहर केलनि। गाड़ीक गेट पर जोर द क ठाढ़ भेलाह। छड़ी टेकलनि। मनीष आ माधवी दुनू अगल-बगल मे ठाढ़, धीरे-धीरे डेग बढ़ओलनि। चारि गोट सीढ़ी छलनि...स्र्कि-स्र्कि क एक-एकटा पर डेग देलनि। सम्हारै लेल आगू बढ़लथिन मनीष आ माधवी मुदा हाथ हिला क मना केलथिन। अंतिम सीढ़ी पर थाकि गेलाह, पएर थरथराए लगलनि... जोर लगा क ग्रिल पकड़लनि आ अपनाकैँ घिचलनि उपर - पहुँच गेला बरामदा पर - कनी आगू बढ़ि क स्र्कि गेलाह। पत्नी कुर्सी देलथिन। पकड़ि क बैसि गेलाह। सब उपर आएल। कनी सुभ्यस्त भेलाह। एतबे मे पसेना चुहचुहा आएल छलनि कपार पर। पत्नी कैँ कहलथिन -"चिन्ता नइ, ठीक छी आब..." पसेना पोछैत माधवी कैँ कहलथिन -" हमर मोबाइल दए त... कनी श्रीवास्तव कैँ फोन लगबिऐ..." मोन मे सोचलनि कनी पुछिऐ जे "इन्वेस्टमेंट" केर ठीक-ठीक अर्थ की होइ छै....?

सम्पर्क : 98356 76152, 96318 52460

ज्ञानवर्द्धन कंठ

बोंगहा मिठाइ

पचहीबाली काकी कार्तिक नहा कय घुरैत रहथि। संगे रहथिन झिरिया माय। कहलथिन- 'गै मौगी, भुखले छें।पेटमे मुसरी दंड देने हेतौह।चल, कोनो नीक होटलमे कनी पानि पीबि ले। गाम पहुँचैत-पहुँचैत बेरि डुमि जेतौह। तखन कह लगबें जे कोन धोंछीक संगे गेलहुँ जे पेटमे अगराही ढुकले रहि गेल।चल, झटकारि क!' सामने एकटा खूब फैशनेबुल रेस्टोरेंट रहैक। दूनू जनी झोरा-झंटा लेने ओहिमे घुसि गेलीह। एकटा बैरा झटकल लग आबि मेनूबला कागत हिनका सभक टेबुल पर राखि देलकनि।काकी बजलीह- 'रौ छौंड़ा!ई कोन कागत घुसका घसकल जाइ छें? ई की छियौक? बंगौर? रौ,हमरा सभ ई कागते चिबायब कि?' ओ घुरलनि आ कहलकनि- 'उसमें देखिए और बोलिये क्या खाना है? जो आर्डर कीजियेगा सो आ जायेगा!' काकी कहलथिन- 'जे की कहेंगे? कोनो लहसुन-पियौज कहेंगे? खाली मधुर-मिठाइ कहेंगे। आन किछ थोड़बे बाजेंगे?' ओ कहलकनि- 'कौन-सी मिठाई ला दें?' काकी- 'मिठाइ आनेगा त' आनो ने रे बोंगहा, मिठाइ जल्दी सनी!' ओ बैरा काउंटर पर गेल। ओकरा सभमे बड़ीकाल धरि हुज्जति होइत रहलैक। मनेजर कहलकैक- 'वो जो मिठाई माँग रही है, उसका तो नामो नहीं सुने हैं। बोलेंगे नहीं है,तो रेस्टोरेंट के इमेज पर पड़ेगा। जाओ,संभालो कस्टमर को!' ओहि बैराकेँ अबैत देखि पचहीबाली काकी चिचियेलीह- 'छच्छे हाथ डोलबैत अबै छें एत्तीकाल पर? आना रे बोंगहा, मिठाइ तों?' ओ कहलकनि- 'दादी,वो मिठाई...' काकी कहलथिन- 'तखन त बड़े गप्प छाँट रहा था जे जे बाजेंगे से आन देगा। आब की हुआ? मिठाइ नैं रखता है बना क'?' ओ कहलकनि- 'दादी, बड़ा होटल है। यहाँ सब आइटम मिलता है...' काकी- 'तखन आना किए ने?' बैरा- 'बोंगहा मिठाई था,लेकिन एगो कस्टमर आर्डर देके ले गया है। इसलिए....' काकी- 'चल गे झिरिया माय!एकर मधुरे सठि गेलैक अछि। होटल खोलने अछि नानाक सगाइ लेल!' ई कहि दूनू जनी विदा भेलीह। काउंटर लग दुनिया भरिक मिठाइ शीशाक भीतर देखाइ देलकनि। देखितहि काकी बुमकार छोड़लनि- 'रौ अन्हराक नाति!एतेक मिठाइ राखि बइला रहल छलें? की बुझाया जे मौगी पाइ ले के पड़ा जाएगा? लो,अगौं पाइ धरो आ खुआओ मिठाइ! थमो, झोरा खोलबाइये दिया त परसादी-बद्धी भी लइए लो।' ई कहि काकी सभ स्टाफ आ उपस्थित ग्राहक लोकनिकेँ परसादी-बद्धी बाँटि मिठाइ खा क बहरेलीह।पूरा होटल रोड तक अरियातक लेल एलनि। मनेजर चरण छूबि कहलकनि- 'माताजी,ये पैसा वापस लीजिए और आशीर्वाद दीजिये।' काकी आँचरसँ नोर पोछि देलथिन। कहलथिन- 'पाइ रखो लोक। हमर असिरबादी है। हम फेन आबेंगे त तोरा सभसे भेँट करेंगे। भगमान हँसी-खुशी राखेंगे!'

कोरोनाक टीका

बगरू भोरे-भोर पचहीबाली काकीकेँ टोनि देलकनि- गै काकी!तों टीका लेब नहि गेलही बलौक? काकी कहलथिन- बलौकमे कहूँ टीका बिकाइ? हँस्सी करै छें रौ रौदीक जनमल? तोहर बापेकेँ कोरा-काँख खेलौने छियौक! कहबियो छैक जे आगूक जनमल, गोड़ लाग दे!

बगरू-गै काकी!तोरासँ हँसी करबौक? टीका फिरीमे बँटाइ छैक। तोहूँ ल ने आ!

-रौ तिलबिखना!फिरीमे टीका बलौकमे बँटाइ छैक? हमरे सिखब एलेहें?ओ सोनरा-दोकान छियैक? सुसके बुझै छहीक?हमर नओ भरिक मँगटीकाक दाम बुझल छौक? से त कहियो मौके-बेगरता हम पहिरबे नहि करी आ ई फिरीमे सरकार देत से केहन देत?जो अपने माय लोहनाबालीकेँ कहियैक जे ल आनत आ पटवाइस क क टीका झमकौने भरि गाम छमछम करत ग!

-गै काकी,तोहूँ त अनहेरे करै छें?कोन टीका बुझि लेलकै ई? गै ओ सुइया होइ छैक। जल्दी ल आ नहि त' कोरोना बेमारी कखनो घुलटा देतौ।

-रौ बजरखसुआ!हम एखने मरबौ? तोरो अँकुरी खा क मरबौ रै जनिपिट्टा! हमरा बेमारी हैत,तखन ने सुइया लेब?एखन जे लेब जायब से कि हमरा कोनो कुकुर कटने अछि?

तावत ओतय मारे लोक सभ काकी लग जुटि गेल रहैक। सभ केओ हुनका बुझाब लगलनि। कतेक फजगज भेलाक बाद काकी बुझलनि। हुनका प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर ल जाइ गेलनि। आधार कार्ड ल क रजिस्ट्रेशन करबा देलकनि। कहलकनि होलीक बाद अयबाक लेल। काकी पता केलथिन जे अस्पतालमे स्त्री-पुरखे कैक लोक स्टाफ छियैक।घर आबि काकी सभक लेल मलपुआ, दहीबड़ा, मेवा-मधुरक तैयारीमे लागल छथिन। होली बाद खलिये हाथे ओतय जेथिन त ओ सभ की कहतनि जे बेटा-पुतोहु ललडलमे (लंदन) रहै छैक त काकियो अपन संस्कार बिसरि भठि गेलैक!

गहूमक रखबारी

फूदे पुछलथिन -'यौ लूटे, तखनिसँ हाक द रहल छी। अकानैत नहि छियैक? कनियों उनमुनेबो नहि केलहुँ! कोन अनमनामे लागल छलहुँ? एना अनमनायल किएक छी? मुँह किएक भकुआयल अछि?'
लूटे कहलथिन- 'की कहू भाय? ई गहूमक रखबारी लाहेब केलक। गहूम फटकायल असोरा पर धैल रहैक। काल्हि कनिकाल लेल झिसियाइ लगलैक। आध घंटाभरि फुँहिया गेलैक। ककरो धेयान नहि रहलैक।गहूम रहैक बोरामे। हमर नजरि गेल। हड़बड़ा गेलहुँ। फुरफुराक' उठलहुँ। तलमलाक खसलहुँ। बासन सभ ढनमना गेलैक। कछमछा गेलहुँ। तैयो ओरिया क उठलहुँ। घिसिया क बोरा भीतर ल गेलहुँ। तैयो गहूम सिमसिमा गेलैक। की करितहुँ? मोन मारि ओछान पर ओंघरा गेलहुँ। भोरे तरफरा क उठलहुँ। देखलियैक, रौद मरियायल रहैक।अगुतायल रही, मुदा असोथकित भ सुस्ताय लगलहुँ।फेर मोन भेल जे गहूम पसारि दैत छियैक। पक्के पर छिड़िया देलियैक। एमहर गहूम पर कौआ सभ लुबुधायल रहैक। चुगै लेल लुसफुसायल रहैक। नंग-चंग क देलक। बगिलमे सोंटा टेबिया क धयने रही। जुमा क चला देलियैक।ओमहरसँ एकटा नेता लोक सभकेँ डोरिएने भोट माँग आबि रहल रहैक। ओ सोंटा ओकरे कपार बजरि गेलैक। ओ डिरियाय लगलैक।चिचियाय लगलैक। हम सिटपिटा गेलहुँ। केबाड़ बन्न क क गबदी मारि पड़ि रहलहुँ।ओ सभ बड़ीकाल धरि केबाड़ पीटैत रहल। चिकरैत रहल।नेता कहलकैक - 'छोड़ि दही, एखन भोटक टाइम छैक।' तखनसँ जीह हड़हड़ करैए। ताहिमे अहाँ खड़खड़ायल आबि गेलहुँ।ओ नेता बड्ड खबखबायल हेतैक, नहि यौ?कहूँ लोक जिता देलकैक, तखन यौ? बाप-रौ-बाप!'

डॉ. अनमोल झा

युग

आइ तीस तारीख रहै। दरमाहाक दुनू चेक हरीशक हाथ आयल रहनि। एकटा अपन आ दोसर बाँसक। बाँस आइ नहि आयल रहनि तै एकाउंट्स वाला हुनको चेक हिनके पठबा देने रहनि।
लिफाफ खुजल रहै, तै हरीश अपन आ बाँसक दुनू चेक देखलनि जे कतेक चेक ककर अछि दरमाहाक। हरीशक चेक रहनि बीस हजारक। बाँसक चेक अस्सी हजारक। देखिक कनि काल लेल हेरा गेलाह हरीश। एतय पच्चीस साल सॅं काज करैत छथि हरीश। हिनक बाँस पन्द्रह साल सॅं। हिनका सामने मे आयल छनि ओ। हरीश एम. ए., नेट, पी-एच.डी. छथि। बॉस बी. एस. सी. मात्र। हरीश साढ़े नौ बजे ऑफिस अबैत छथि आ साढ़े छः बजे जाइत छथि ऑफिस सॅं। बाँस साढ़े दस बजे अबैत छनि ऑफिस आ पॉच बजे सॉझ होइत चलि जाइत छनि हिनका एक गादा काज दके।
हरीश पचासक उमर मे कंम्पनीक रौल मे छथि आ आठम साल रिटायर भ गामक रस्ता देखय पड़तनि। बाँसक उमर एखन बहतरि बरखक छनि आ अनठाबनक उमर मे रिटायरक बादो चौदह बरख सॅं एहि प्राइवेट कंम्पनी मे कंट्रैक्ट बेसीस पर काज क रहल छथि। जैह काज बाँसक छनि ताहि सॅं वेसीये आ वैह काज हरीशक छनि। बाँसक लेल चेम्बर, हरीशक लेल बाहरक हॉल में सबक संगे एकटा टेबुल कुर्सी लागल। हॅं, बाँसक टेबुल पर कम्प्यूटर लैपटॉप लागल नहि। कारण ओ कम्प्यूटर चलब नहि जनैत छथि, सबटा हाथे सॅं लिख - लिख हिनका दैत छनि आ ई कम्प्यूटर सॅं सबटा क दैत छथिन। हरीशक टेबुल पर कम्प्युटर, प्रिंटर, स्केनर लागल। बाँसक डीजीगनेशन परचेज मनेजरक छनि। हरीशक डीजीगनेशन परचेज क्लर्कक।
कम्पनीक डायरेक्टर बिरासी सालक बूढ़ व्यक्ति अछि। बेसीतर स्टाफ बुढ़े - पुरान आ एहने एहन अछि। हरीश के कखनो क अपना आप पर ग्लानि होइत छनि जे हम सत्ययुग , त्रेता, द्वापर , कलियुग कोन युग मे रहिक एहन कम्पनी आ कर्मठ लोक लग काज करैत छी। कोन युगक लोक छथि ई महानुभाव सब से कखनो कखनो क सोचैत रहैत छथि हरीश!

दबाइ

आइ फगुआ रहै। ऑफिस मे छुट्टी रहै। कोरोनाक चलते सब रंगों - अबीर नहि खेलाय चाहै छल कियो ककरो सॅं पारा-मोहल्ला मे। सब अपन घरेक लोक मे कनी अबीर - गुलाल लगा लेलक। पुआ, तरकारी, मॉस, माछ जकरा जे भेलै से बनलै। डेरे मे सब खा पी क आराम केलक। गामक होरी नहि ने छीयै जोगीरा साराररा.........। अंगने दलाने दालान घूमल। आ आब त गामो मे कहादन पहिले जकां नहि होइत छैक फगुआ। जे हो।
से डेरा मे सकाले सब अबीर लगा , नहा सोनाक , खेलाक बाद आराम करैत रही की दिल्ली सॅं हमर ग्रामीण संगी सरोजक विडियो फोन आयल। हम उठेलहुं। फोन उठबिते ओकर फोटो हम देखय लगलियै आ ओ हमर। ओ रंग - अबीर सॅं तोपल छल। हंसैत ठीठीयाइत , फगुआक शुभकामना देलक आ हंसय लागल। हमर मुंह देखि कहलक तू रंग नहि खेलेलह, हम कहलियै नहि, कोना खेलैब कोरोनाक क नहि देखै छहक दोसर फेज आबि गेलै छै। कहलक धूर बूड़ि। करोना तरोना नहि छै आब। हम त खूब खेलेलहुं हे, आ आब सरहोजि अबै बाली छथि तँ फेर एक तोर हेतैक आ फेर हॅंसय लागल।
फेर ओ पुछलक, अच्छा कह दबाइ दैत छहक की नहि?। हम नहि बुझलियै, कहलियै दबाइ! कथिक दबाइ?। ओ फेर हॅंसल, कहलक तू नहि सुधरलह, फगुआ मे लोक कोन दबाइ पीबै छै? से दबाइ।

हम कहलियै भांग, ओ कहलक बूड़ि भांग नहि, बोतल बला दबाइ। आब हम बुझि गेल रही जे ई की कह चाहैत अछि। हम कहलियै, नहि ,नहि ओ दबाइ सब हम नहि दैत छियै। ओ फेर जोर सॅं ठहाका मारलक आ कहलक ओ दबाइ नहि दैत छहक तै असली क देबाइ देब पड़ैत छह। लाइफ इन्जुआइ करह इन्जुआइ। आ से कहैत ओ डगमगा गेल आ ओकरा हाथ सॅं मोबाइल खसि पड़लै रहै!

अन्हार

ऑफिस मे ओहि दिन अपन कुपे सॅं गोयनका जी बगलक कुपे मे बैसल अग्रवाल जी कें कहलनि - कोइ अच्छों छोड़ो हो तो बताहीयो। अग्रवाल जी पुछलनि - की लगाओगे? गोयनका जी कहलनि - दो लगासी।

दूर मे बैसल ठाकुर जी दुनूक बात सुनि रहल छलाह। जखन बेरु पहर गोयनका जी नहि रहथि सीट पर त ई जाके अग्रवाल जी के पुछलथिन - कतेक लगबैक बात कहैत रहथि ओ शादी में? , अग्रवाल जी कहलनि - दू करोड़। सोझा अन्हार पसरि गेल रहनि ठाकुर जी कें!

अवाक

मनोज झा पैक्स चुनाव जीत गेलाह। ई तेसर बेर थिक जे ओ ई चुनाव लगातार जीत रहलाह अछि। प्रमाण - पत्र प्रखंड निर्वाची पदाधिकारी द्वारा देल गेल। से लके देरी सॅं राति मे एलाह मनोज झा गाम।

वाट्सअप, फेसबुक आदि द्वारा सब एहि जीतक सूचना अपन - अपन आप्त - मीत आ ग्रामीण जे बाहर रहैत छथि सबके भेलनि। ई बाहर वला लोक जे हिनके ग्रामीण छल आश्चर्य में छल जे आखिर ई कोना होइत छैक?, एकटा शराबी जे दिन राति पी- पाबिक बुच्च रहैत अछि, से ई पैक्स चुनाव कोना जीत जाइत छैक। एकटा ग्रामीण दिल्ली सॅं फोन केलक गाम अपन बौआ बाबाक। बाबा एना कोनाक होइत छैक? पिअक्कर तीन बेर सॅं केना जीत रहल छैक? ग्रामीण सब ककरा भोट दैत छैक से ओ नहि बुझैत छैक की? । बाबा कहने रहथिन - तोरा बुझल नहि छह, एतय शराब बंदी केने छैक सरकार। चोराक जतेक शराब एम्हर बेचल जाइत छैक तकर ठेका एकरे लग छैक।

एलेक्शन सॅं पहिने खुलिक शराब बटैत अछि। गामक लोकके चिन्हते छह! सभ भोट मनोजे झाक! ओ ग्रामीण जे फोन केने छल अवाक भ गेल छल!

मैथिली

एहि महानगर मे भोरे जेना सब दिन क हम दुनू बेकती थोड़े काल लेल टहलैक लेल निकलैत छी तहिना आइयो निकलल रही। मुदा आइ सब दिन जाहि बाटे जाइत रही ताही बाटे नहि जा क दोसर रस्ता धेने रही।

आधा घंटाक बाद ओतय पहुंचल रही जतय गया जिलाक लोक सभ अपन - अपन घर बनाक रहैत छथि। ओ गया मोहल्ला नामे जानल जाइछ। ओ सब आपस मे किछु बात करैत रहैक। किछु पुछलकै ककरो सॅं कियो, त ओ कहलकै - हम दू बजे गेलियै। ओ जोर सॅं कहने रहैक। से सुनि हमरा भेल हमर मैथिली ओतय तक त नहि अछि!

बेटा

गाम मे पिताक नामे लागल बिजली क पॅाच हजार बिल भ गेल रहै। तीनू भाइ बाहर काज करैत छथि। सपरिवार बाहरे रहैत छथि। गाम कहियो काल काज उघेम मे या प्रयोजने अबै जाइ छथि। जामे पिता गाम पर छलखीन सब ठीक-ठाक रहैक। हुनका गेलाक बाद के भरत बिजलीक बिल?

पुत्र लोकनि जमीन, बेख-बाख सब बॅाटि लेलनि। मुदा पिताक नामे आयल बिजलीक बिल भरै लेल कियो तैयार नहि। सब भाइ कहैत छथि, हम अपना नामे अलग मीटर ल लेब, नवका कनेक्शन ल क, मुदा ओ बिल नहि भरब। सझिया चीज हम नहि राखब। दू सय रुपया महीनाक ठीकापाटा बिजली बिल लेल तीनू भाइक लग पाइ आ फुर्सत नहि छनि जे ऑनलाइनो जतय छथि ततहो सॅं भरि देथिन। मुदा अपन- अपन सब नया कनेक्शन लगाक भरता, ताहि लेल तैयार छथि।

जाहि पिताक नामे ई सब नाम -गाम आ पाइ वला भेला से पिताक एकटा नाम तीन भाइ सॅं नहि उठि रहल छनि। आ हम सभ एखनो बेटा- बेटा क क मरैत छी।

सम्पर्क : 94337 53863

•दिलीप कुमार झा

हलधर

- 1 -

जहिदिन बेसी मनुक्ख रहय वनचर
ताहिदिन किछु लोक
जंगलक कन्दरामे क रहल छल अनुसन्धान
कोनो दूफेरा डारिकें काटि क
एकटा नव क्रान्तिक क रहल छल सन्धान
कतेको बर्षक साधनाक पछाति ओ बना लेलक एकटा यंत्र
बिनु फारक हर
जाहि हरकें कोनो जानवर नहि
ओ लोकनि स्वयं घिचैत छल
आइ दुनियां तरक्की क गेल अछि
हुनके वंशजकें किसानी सिखा रहल अछि।

- 2 -

खेती नहि छुछे विज्ञान थिक
ओ कलाक संग-संग
संस्कृतिक संधान थिक
खेती संसारमे मेहनतिक मोल बुझेलक
आन प्राणीसँ मनुक्खकें श्रेष्ठताक बोध करेलक
जे नहि कहियो केलनि रौद पानिक परबाहि
धूरा ,गर्दा बिहारि वसात ओ हाहि
बिनु भेदभाव कें
सभक चुल्हि जरौलनि
ओ हलधर कहबौलनि
खेत छोड़ि क कोनो वस्तुक चिंता नहि केलनि
जकरा पाबि क
कियो हाकिम
कियो बाबू
कियो माननीय कहबाबथि
हुनका आन विशेषण कनियों नहि छन मनकें भावनि
गाम-गाम
ओ देश- देश के एकहि हालति
व्यापार बनिजक नामपर
पहिने बिया बालि छिनायल
आब खेत छिनबा लेल विर्त भेल छथि
खेतक आरिपर बैसल हलधर
किंकर्तव्यविमूढ़ भेल छथि।

- 3 -

देश आगाँ बढ़ल अछि
से गछय पड़त
पाँच दशक पूर्ब बहुतो परिवारकें
एक संझा करय पड़ैत रहै
ककरो -ककरो साँझक साँझ उपास
मुदा आइ कियो उपासल नहि अछि
पियासल सेहो नहि अछि
अरुणाचलक बियावानसँ
गंगाक मैदान धरि
भरल अछि अन्नागार
थारक मरुभूमिमे
सेहो उपजि रहलए
सरिसों , गहुम ओ ज्वार
मुदा जे पहुँचाबय थाड़ीमे भात
लोटामे पानि
ओकरे हालति कियै होइत गेलै
दिन-दिन बेपानि?
ग्रामतंत्रक बलिवेदीपर
हैत ने कहियो भारत भूमिक उन्नति
उनटा-पुनटा क देख लियौ
जोड़-घटाव ठीकसँ क लियौ
कृषि कर्म नहि रहलै कहियो लाभ -हानि
नै रहलै व्यापार
जहिया देशमे अन्नक संकट भेलै
सभदिन आगाँ रहला हलधर
भरैत रहलाह हुंकार!
देश नहि आब भूखल रहतै
करब हरित क्रान्ति
रहत सगरो शान्ति -शान्ति
अन्नक लेल नहि कोनो भ्रान्ति
ग्राम स्वराजपर एकबेर फेरसँ सोचू बाबू
भारत भूमिक ओएह थिक मूलाधार
दोसराक नीक लेबयमे कोनो हर्ज ने
मुदा अपन निकहा बचाक राखी
सेहो अछि दरकार
सरकार!

- 4 -

हमरा परिवारमे जतेक पढ़ल- लिखल ,गुणी, ज्ञानी-विज्ञानी
साहित्यकार, अवदानी
सभकें पूर्वेसँ प्रायः ई सूचना छलनि जे वितैत अषाढ़
चढ़ैत साओन
आबयवला छै भयाओन बाढ़ि
जाहिमे बोहिया जायत हमरा भूमिक एक - एकटा खेत
ढ़नि ढनमना जायत सभ्यताक बाँचल सभटा अवशेष
तैयो गुवदी मारने प्रतीक्षा करैत रहलाह बाढ़िक
अपने ल लेलनि आश्रय ऊचाँसपर बनल
बहुमंजिला भवनमे
गाममे बँचल समांग जे करैत छथि खेती
भरैत छथि अपन पेटक संग-संग
नगरक पेट

हुनका ई भनक तक नहि होब' देलखिन
जे एहि भूमंडीलकरण आरंभेमे सरकार केवाला क देलक
हमरा सभक सभटा मरौसी भूमि
कलम- गाछी, पोखरि-झाखरि
सभटा चलि गेल अछि एफ . डी आइ
जाबे भनक लगलनि अछि एहि बातक जे
हमर भूमिपर हमरे खेती करबाक अधिकार नै रहल
अपना मोनसँ फसिल उपजेबाक
अपना मोनसँ ओसा अबा क कोठीमे रखबाक अधिकार
तहिये छिना गेल
जाहिदिन
हमरा देशक माइनजन सभ हस्ताक्षर केलनि
गैट समझौतापर
जाहिदिन चलैत रहय उरूवे चक्रक गपसप
जेना तहिदिन मरछाउर छिट देने रहय कियो
बेहोस जकां भ गेल रही
आब
आकंठ डुबि चुकल हम
बोहिया चुकल अछि सभटा जजाति
तथापि
नीति कहैत छैक
डुबैतकाल जएह बचाली सएह बहुत
तँ बाजब बहुत जरूरी छै
से हलधर सभ बाजब शुरू केलनि अछि
तँ हमरो बाजब बहुत जरूरी अछि
नव विश्वकें पढ़ब सेहो जरूरी छै
लड़ब सेहो जरूरी छै।

तीन दिनक पछाति

तीन दिनक पछाति
आइ भेल छैक बुन्न छेक
गुमती नं तेरह लग
आइ फेर सँ भेल छैक चहल-पहल
एकट्ठा भेल छैक बहुतरास मजूर
कोनो काज हुए तँ कहब हजूर
कहलक जीतन
श्रीमान! ई जे भ गेलैया आकाश मे भूर
तकर सबसँ बेसी मारि परलैया ओकरे पर
जकरा अपने आउर कहै छियै मजूर
जे नितह खुनै इनार
बुझबै नितह अपन पियास
हमर भजार 'मदन' जे लगबै छल एत ठेला
बेचै छल सतुआ, भूजा
सबटा सतुआ तित गेलै
ठेला पानिमे डूबि गेलै
अपन चुआठ चार के उपछि रहलए पानि
अपने दिन- दिन भ रहल बेपानि
जनमौटी नेना
जकरा मुँहमे नै छैक बोल
अधरतिए सँ क'रहल छै किलोल
जँ मुँहमे रहितै बोल
त बजितै
किए नै आनै छी बाबू तीन दिनसँ दूध
मायक छातीमे त दूध उतरिते नै छै
झूट्ठे हम चटइ छी
अपन कल्ला दुखबै छी
आइ आयल छै मदन हमर भजार
गुमती लग छै ठाढ़
ताकै छै कोनो काज
जँ भेट जेतै कोनो काज
छोटकीनमा लय कीन लेतै एक डिब्बा दूध
मुदा घड़ी मे बाजै साढ़े नौ
एखनी धरि कहाँ कियो एलै अढ़ब'
कहलकै संगी जितना - चल रौ भजार!
आब ने एतौ कोनो महाजन अढ़ब'
सब अपने जान लय झखै छै
अपन खुनल खत्ता अपने उपछै छै
की करबह भाइ !
जखन भगवाने भेल बेपच्छ
के सुनत हमर पच्छ?
भाइ ! हम त' कहै छियौ एना जुनि हो निराश
चल अपने राखब हम अपन पच्छ
करबै हमहु सङोर
धरबै पड़त रूप अङोर
तखन बेइमना सभ सुनतै
अपनो आउर किछु गुनतै।

नवगछुली

बुढ़बा बाबाक रोपल अंतिम गाछ सुखाय लागल अछि
बाबूक रोपल फरनमा गाछ सबमे
पल्लवसँ बेसी बाँझी भ रहल अछि
ओहिना जेना अपन मातृभूमिसँ ममत्वसँ विमूख लोक
मना रहल अछि अछि अपन मातृभाषाक मृत्युक उत्सव
मुदा तैयो हतोत्साहित हेबाक समय नहि छैक
एहि उमेदमे रोपि रहल छी
किछु नवगछुली जे
जहिया कहियो डीह -डाबरक सोह एतै
गछबाह सब आओत
बाँझी सबकें पाङि साफ करत सबटा झार झंखार
ताबे बाबाक रोपल अंतिम गाछक स्मृतिक संयोगबाक लेल
ल रहल छी सेल्फी

सम्पर्क : 94309 89449

डॉ. किशन कारीगर

विलुप्त-प्राय मिथिलाक प्रदर्शन कारी कला

कोन बिरड़ो मे उधिया गेलः नटुआ नाच?

हौ कतए के नटुआ एलइए? फलां ठाम के. इ कहू जे थेहगरीये टा की लटकियो नटुआ सब आएल छै? एह जेबै देखै ले तब ने? थेहगरही, लटकी, छमकी सबटा नटुआ एलइए, ततेक नीक नचै जाइ हइ से छौंड़ा मारेर सब मारते रूपैया लूटबै जाइ छै आ नटुआ सब नाचै के त थैह थैह केने रहै छै। हं तब त हमहूँ जेबै नाच देखै लै, एमकी मने नीक नटुआ सब एलइए?

मिथिला के लोक संस्कृति मे रचल बसल रहै नटुआ नाच जे लोक मनोरंजक रूपे बेस प्रचलित रहइ। मूरन, उपनेन, बिआह दान, नाटक, नाच, छकरबाजी, अल्ला रूदल, दिवाली, छैठ जे कोनो उत्सव होउ ओइ, मे नटुआ नाच अबस्से होइ। आ लोक नटुआ के साज सिंगार, लटक झटक, अदाकारी देखै ओकर नाचब देखै, नटुआ संगे नाइच के आनंदित होइत रहै आ लोक मनोरंजन के नीक साधन रहइ।



हमरा मोन परैए जे हमर गाम मंगरौना के दुर्गा पूजा मे भटचौरा के नाटक पार्टी, विरदाबोन के नाच पार्टी सब अबइ। दुनू के नटुआ सब तेहेन लटक-झटक वला, रोल खेलै वला नटुआ सब रहै जे अपन अदाकारी स देखनिहार के मोन मोहि लइ आ लोक खुशी स झूमि के नटुआ के इनाम दैत रहइ। अनदिना त मूरन, बिआह, सब मे बाबूबरही के फूल हसन बैंड पार्टी अबै। उ बैंड वला बेस नामी आ तेकर नटुआ उसमान हुसेन खूब नीक नटुआ रहै ओकर नाचब देखै ले त सौंसे गामक लोक सब अबइ।

नटुआ नाच के प्रचलित प्रकार..

1. **रोल खेलिनहार नटुआ-**

एकरे सब के बोल चाल मे लोक सब थेहगरी नटुआ कहै जाइ। इ सब अनुभवी आ उमेरगर कलाकार सब होइ जे अपना नाचब अभिनय आ बेहतर संवाद स लोक के बेस प्रभावित करै जाइ। नाटक देखनिहार लोक सब एकरा मे अपना समाजिक संबध माए, बहिन, भौजाइ, आदि के छवि देखै जाइत रहइ।

पाठ (रोल) खेलाएब शुरू करै स पहिने इ नटुआ सब मेकअप, सैज धैज के स्टेज पर अबै आ कहै जाइ हे बाबू भैया सब, हे माता बहिन, अहाँ सब अशीरवाद करै जेब। लोक इ संवाद सुनि के जोड़दार थौपड़ि, ताली बजबै जाइ आ मोने मोन नटुआ के अशीरवाद दै लोक सब जे आइ नीक रोल खेलेत। नीक नाटक, नाच देखब, सुनै जाएब.

रोल खेलाइत खेलाइत उ थेहगरही नटुआ सब दर्शक बीच मे अशीरवादी मंगै ले अबै आ लोक सब के दस, बीस, पचास जे जुड़ै से नटुआ के चाबस्सी रूपे दइ।

2. **लटकी नटुआ-**

नामक अनरूपे इ सब तेहेन सजल धजल रहै आ नचैत काल तेहेन लटक झटक करै जे छौंड़ा मारेर सब त एकरा पर फिदा भ जाइत रहइ। एतेक फिदा जे नटुआ के कोरा मे उठा लेब, ओकर गाल छूअब, नटुआ के चोली मे आलपिन लगा रूपैया खोंसि देब आ लटकी नटुआ संगे छौंड़ा मारेर के खूब नाचब बेस रमनगर लगइ।

बूढ़ पुरान सब सेहो तरे आंखि नटुआ सब पर मोहित होइत रहै आ छौंड़ा मारेर सब पर झूठो खिसियाइ जाइ जे हे तूं सब नटुआ के बेसी नंगो चंगो नै करै जाही की ताबे छौंड़ा सब नटुआ के बुढ़ पुरान दिस हुलका दै आ खूब पिहकारी होइ. बुढ़ो पुरान सब नटुआ के नीसा मे डूबल देह हाथ डोला के थोड़ बहुत नाचै आ नटुआ के बक्शीस दइ। अइ लटकी नटुआ सबहक साज सिंगार, इनाम भेटला पर शुक्रिया अदा करब के आगू त फिल्मी कलाकार सब फिका बूझना जइत...

'जिन बलमा ने दिया रूपैया मैं रखूंगी चोली मे सम्हाइर के... अठ्ठनी हमरा गाल पर आ रूपैया हमरा माल पर...' आ तेहेन ने लटक झटक स लोक के मोन मोहि लै जे नवयुबक सब फिदा भ जैत रहइ। छौंड़ा मारेर सब त अइ लटकी नटुआ सब मे अप्पन प्रेमिका, बहुरिया, भौजाइ आदि के छवि देखै आ बेस मनोरंजन मे डूबल रह। इ नटुआ सब नाटक, नाच, बैंड पार्टी मे रहैत रहै जे सब गेबो करै आ खूब नचबो करै जाइ.

3. **छमकी नटुआ-**

इ छमकी सब त रेकार्डिंग डांस कला फिल्मी गीत पर तेना छमा छम नचै जे लोक सब सुइध बुइध बिसरा जाइ. एना एकटिंग करै जे लोक के होइ फिलिम देखै छी... कोठे उपर कोठरी, उस पर



रेल चला दूंगी, बस एक को कुंवारा रखना, मैने जो घूंघरू बांध लिए सब पर तेहेन रिकार्डिंग डांस होइ से छौंड़ा सब सेहो नचै लगै, खूब पिहकारी सिटी बजै आ लोक रूपैया इनाम दइ। शेरो शायरी. रेकोडिंग डांस के जमाना एला पर छमकी नटुआ सब बेस लोकप्रिय भेल रहइ। इ सब सब तरहक गीत पर मनमोहक डांस करै जाइ छल।

4. **नटुआ-**

इ नटुआ सब बैंड पार्टी, छकरबाजी, नाच पार्टी, ढोल पिपही पार्टी, अल्ला रूदल सबमे रहैत रहै जे पारंपरिक वेश भूषा मे, पारंपरिक नाच लेल बेस प्रचलित रहइ। सजल धजल मेकअप केने चोली पर रूपैया टंगने, समाजिक लोक मर्यादा के मान रखने, इ नटुआ सब नचै आ लोक के मनोरंजन करै जाइ।

हमरा मोन परैए स्कूलि जीवन मे गाम घर दिस प्रसिद्ध नटुआ सब जेना रामउदगार, रामदुलार पासवान (दुनू सहोदर रहै), सीरिदेब पंडित, उसमान हुसैन, बनैया राम, बबलू मंडल आदि लोक कलाकार सब जेकर नटुआ नाच देखै लेल लोक दूर दूर स अबइ। कतेक कलाकार सब त आब अइ दुनिया मे नै रहलै तइयो जे कलाकार सब बांचल छै, हुनका प्रति आदर दिर्घायु हेबाक कामना करैत छी।

गाम घर मे नटुआ त सब के मन मे उत्सुकता जगवै। नटुआ सबके मेकअप करैत काल धिया पूता के हुलुक बुलुक करब, छौंड़ा मारेर सब के नटुआ मेकअप रूम के पहरेदारी करब, बुढ पुरान सब तकतान करै मे जे नटुआ सबके बेसी नंगों चंगो नै करै जाही, फेर पिहकारी, हंसी ठहक्का जे लोकरंग रहै से नटुआ नाच के आरो जीवंत बना दइ।

मिथिला समाज, लोक कलाकार प्रति सब दिन उदास रहल। बात बात मे दुत्कारि देब जे पढबें लिखमै की नचनीया बजनिया बनमैं? त एना मे के अइ कला सबके जियाअ कए के राखत? भोजपूर वला सब नटुआ नाच (लौंडा डांस) के जियाअ के रखलक त देखियौ जे रामचंद्र मांझी के पद्मश्री अवार्ड भेटल। आ अपना मिथिला वला सब नटुआ के हेय दृष्टिये देखलक ओहेन प्रोत्साहन नै देलक त आब नटुआ नाच कलाकार नइहे भेटत? बड्ड भेल त नेपाल,बंगाल,यू पी स बाई जी मंगा के लोक नचा लैइए सैह टा। नटुआ नाच के पारंपरिक रूप आ उत्सव बला सुआद डीजे, बाई जी मे किन्नौ ने भेटत? असली आनंद त नटुआ नाच मे देखाएत यदि तकियौ त।

बड्ड दुखक आ चिंता के गप जे एहेन लोकरंग वला नटुआ नाच आब कतौ हेरा गेल जेना, डी जे, अरकेसरा (आर्केस्ट्रा), बाइ जी के बिरड़ो मे कतौ उधिया गेल नटुआ नाच?

-2-

घोड़ा (कठघोड़वा) नाच

आरौ तोरी के देखही रौ घोड़ा लथारो मारै छै! अच्छा चल त घोड़ावला के छू क देखबै। नै रौ अखनी खूब जोर स लथार फेकै हेलै, बलू चोट लगतौ तब. इह कोनो देह टुटि जेतै की? कनि मनि चोट लगतै त कि हेतै रौ बाद मे देह झारि लेब कीने?



छौड़ा मारेर, धिया पूता, बुढ़ पुराण सब कोइ गाम घर दिस बेस मोन स घोड़ा नाच देखै जाइ छलै.

आब नै ओहेन घोड़े वला, नै ओहेन डफली बौंसली वला, आ नै ओहेन छमकी नटुए सब रहल आ नै आब तेहेन घोड़ीनाच रहलै! आ नै कतौ आब होइ छै। विलुप्त भेल जा रहलै घोड़ा नाच। पहिने गाम घर, छोट छिन बजार सब दिस घोड़ा (कठघोड़वा) नाच बेस लोकप्रिय रहै आ लोक मनोरंजन के सहज सोहनगर साधन रहै।

डफली वला डफ-डफ करै, बौंसली वला बौंसरी बजबै, कैसियो वला धुन बजबै आ नटुआ मेकप केने डांर लचका के नचै आ बीच

मे घोड़ा वला अपना कांख मे रस्सी-काठ-बत्ती स बनल सजल घोड़ा के टंगने नटुआ संगे रमैक रमैक के नचै.
घोड़ा वला नचैत नचैत बीच-बीच मे धिया पूता दिस हुड़ैक जाई। आस्ते स लथार फेकै आ छौंड़ा मारेर सब धरफरा के एक दोसर के देह पर खसै।
कोइ धांई भटका खसै त कखनो के छौंडा सब घोड़ा वला के लथारो छू के देखै। त घोड़ा वला आरो हुमैक-हुमैक के अपना ताले बैंड के धुन पर नचै आ धिया पूता सब घोड़ा के मुँह नांगैर छू के अपनो एक दोसरा के धकैल दै छेलै एना जेना घोड़े वला लथार फेकने होई.आ धिया पूता बुढ़ पुरान, जनिजाति सब भभा हँसै। घोड़ा वला नचैत नचैत हुड़कैत हुड़कैत सब दिस घूमि घूमि नाच करै आ ओकरा संगे नटुआ सेहो खूब नचै, घोड़ा नाच काल लोक सब नटुआ आ घोड़ा वला के रूपैया पैसा दै। कतेक छौंड़ा सब त नटुआ के चोली मे आलपिन लगा दस पंच टकही खोंसि दै ताबे एम्हर घोड़ा वला हुड़ैक जाइ आ लोक धड़फरा के भगै आ उ ओकरा देह पर त कोइ ककरो देह पर धरफरा के खसै। नाच देखनिहार लोक सबहक किरमान लागल रहै आ लोक सब भभा भभा हंसै। बुढ़ पुरान, जनिजाति, आ गामक गनमान्य लोक सब घोड़ा वला, नटुआ, डफली वला सबके हाथे मे रूपैया, खुदरा पाई द अशीरवादी बक्शीस दै जाइ छलै.
पहिने मिथिला मे गाम घर दिस बियाह। उपनेन मूरन, मांगलिक काज सब मे घोड़ा नाच अबस्से होइत रहै। गरीब, गिरहस्थ, लोक सब घोड़े नाच वला के बजबै आ घोड़ा नाच सब जाति वर्गक लोक देखै छलै आ लोक मनोरंजन के नीक साधन रहै घोड़ा नाच. लेकिन आब ई घोड़ा नाच बिलुप्त भेल जा रहलैए? बड्ड चिंता के गप जे लोक मनोरंजक घोड़ा नाच आब कतौ देखबामे नै अबै हइ। एकरा सरंक्षित करै लै सरकार आ मिथिला समाज के आगू आबए पड़तै। आब त गामे गामे डी जे बजैए, बाई जी नचैए, अरकेसरा होइए? त के चिंता करतै, केकरा बेगरता परतै आ के देखतै घोड़ा (कठघोड़वा) नाच?

-3-

भैंट (भांट)

अहूं कहब ग ने जे बलू कारीगर भैंट जेका किए बड़बड़ाइए हइ? अहां सुनियौ ने जे ओइ बड़बड़ी मे कते काजक गप होइ छै आ लोक के रमनगरो लगै छै! भैंट हमरा जनतबे बुढ़ पुरान के मुँहे सुनल जे हइ एना किए भैंट जेका बजैत रहे छैं। ताबे दोसर गोटे बाजल जे उ भैंट बजै की छै से सुनीयै ने?
मिथिला मे भैंट सब गामे गाम घूमि के लोक सब लग मनोरंजनात्मक रूप मे बजै-गबै छलै। जै मे गाम लोक के खिदहांस, बड़ाई, उकटा पैंची, छल-कपट, बैमानी-शैतानी, झगड़ा-सलाह, आदि के वर्णन उ फकड़ा रूपे बाजि,कहि,गाबि के करैत रहै।
भैंट के घूमक्कर वाचक सेहो कहि सकइ छी। ओकर मुख्य काज रहै गामे-गाम जाके लोक के, दूरे दरब्बजे जा के सबहक लोक मनोरंजन करब. आ लोक तेकरा बदला मे भैंट के धान चाउर, रूपैया, चीज-बौस जेकरा जे जुड़ै से दै। अहि स भैंट के गुजर बसर होइत रहै।
भैंट अपना वाचक प्रस्तुति मे, समाजिक बेबस्था-बैमानी-शैतानी नीक बेजाए पर बेस कटाक्ष करै आ हंसि-गाबि के तेना-जे लोक के अनसोंहातो नै लगै...
एकटा फकरा मोन पड़इए-

कारी मुँह मे उज्जर दांत देखलों
उज्जर मुँह मे कारी दांत देखलों
धन रहैतो खाइ लै औनी पथारी देखलों
बाबूए सीरे खा बमफलाट छौंड़ा देखलो
बुढ़बा के केकरो स पटरी खाइत ने देखलो
बज्जर कोढ़िया के दूरा सर-कुटमार ने देखलो
अपने मे लड़ै जाइए दियादी मिलान ने देखलों
उनटे भैंटे के गरिअबैत फल्लां बाबू के देखलों
सर समाज लै काज करैत चिल्लां बाबू के देखलों
अनके भरोसे बैसल रहैए बाबू के देखलौं
साउस पुतौह के झगड़ा मे आगि लगाएब टोलबैया के देखलों
झगड़ा भेल पंचैती काल पंच बाबू के निपत्ता देखलों

(इ फकरा सब बुढ़ पुरान क मुँहे सुनल.. जे कहांदिनु हमरो गाम मंगरौना मे (भरौड़ा) गोनू झा के गाम स भैंट सब अबै आ फकरा वचै, इ सब कहै)
फकरा स्पष्टीकरण भ रहल छै जे ओ भैंट, सब समाजक सब स्वरूप के देखार चिनहार फकरा रूपे क के, लोक के मनोरंजन करै. तकरा बाद, लोक ओकरा जे जुरै से दै आ ओकर आजीविका चलै।
पमरीया जेका भैंटो सबके गाम आ इलाका बांटल रहै आ सब अपना इलाका मे घुइम-घुइम बिशुद्ध रूपे लोकक मनोरंजन करै. अपना मे मिलानी बाद, भैंट सब एक दोसरा के इलाका मे सेहो जाइत रहै।
आब भैंट किनसाइते कतौ देखबा मे अबै छै.। जेना उ भैंट सब मिथिला स बिलुप्त भ गेल हो। ओइ भैंट सब के फेर स ताकि ओकरा संरक्षित करबाक सामूहिक प्रयास हेबाक चाही.

सम्पर्क : 84098 83597

ब्रह्माक श्राप

•*रामलोचन ठाकुर*

आ बेताल राज कथा आरंभ केलनि-कथाक नाम भेल 'ब्रह्माक श्राप'। एक खेप एहन भेल जे देवराज इन्द्रक अत्याचार-अनाचर सं तंग आबि प्रधान-प्रधान देव ऋषिगण हुनका विरुद्ध गुरू वृहस्पतिक अदालत मे मामला डारि केलनि । हिनका लोकनिक ओकिल रहथिन महर्षि विश्वामित्र। ओ अपन मोक्किल दिस सं अभियोगक तालिका प्रस्तुत केलनि जे एना छल; रौदो दाही सं त्राण पेबाक लेल आइतक सरकार द्वारा कुनू काज नहि कएल गेलए। फलतः प्रतिवर्ष कतौ रोदो त कतौ दाही होइते रहैछ आ अन्नक अभाव मे सभठाम हाहाकार मचल अइ। सभ बर्ख कागजपर योजना बनैए परंच कार्यतः किंछु भ नहि रहल - ए। दानव लोक सं कर्ज में गहुम ल क खाइत खाइत लोकक मानसिक स्थिति बिगड़ि रहलै ए आ लोक सभ विपथगामी भ रहल-ए। धर्माचारक समस्त बाट बन्न भ जेवाक कारणे लोक पापाचार मे लीन भेल जा रहल ए। स्वयं देवराज इन्द्र नारी आ मदिराक पांछा मत्त रहैत छथि। सैनिक, जकर काज देवलोक के दानवी आक्रमण सं रक्षा केनाइ थिक से देवलोकक नागरिक पर अत्याचार करे - ए आ तकर मात्रा दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक। देवराज इन्द्र अपन बेटाक नामे विराट कारखानाक निर्माण केलनिहें संगहि बेटा पुतोहुक नामे पाताल-लोकक बैंक में कोटियो टाका जमा क चुकल छथि। एकर अतिरिक्त अन्यान्य व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्तिक निमित्त सतत राजशक्तिक उपयोग कएल जा रहल- ए।

एतवा कहि महर्षि विश्वामित्र बैसि जाइत छथि आ तखन उठैत छथि देवराजक ओकिल-विश्वकर्मा । ओ आरंभ करैत छथि– योर आनर, विरोधीदलक ओकील जें सभ आरोप हमर क्लाइन्ट पर लगओलनिहें से सभ निराधार थिक आ तकर कारण मात्र व्यक्तिगत द्वेष थिक। योर आनर। नोट कएल जाय जें देवराज इन्द्रक यश चतुर्दिक पसरि गेल-ए। तीनू लोक में हुनक यशोगान भ रहल-ए, हुनक बुद्धिमत्ता आ कार्यक्षमताक प्रशंसा भ रहल-ए। ते विरोधी लोकनि के डाह होइत छनि । देवराजक कार्यकाल में देश कते प्रगति केलक ए। तथा एकर प्रतीष्ठा कतेक बढले-ए। हम तकर किछु उदाहरण राखि रहल छी। योर आनर। देवलोकक कतेको रास्ता पेड़ाक नाम देव-ऋषिक नाम पर राखल गेल-ए । राजधानी अमरावती के सरिपहुं स्वर्ग बनाओल गेलए, जतय बारहो मास छतीसो दिन वसन्त विराजमान रहैछ आ जकर शोमा देखिते बनैछ। दिनानुदिन बढैत जनसंख्या के रोकवाक लेल जन्म निरोधक आइन बनाओल गेल ए।

सभ के समान सुख-सुविधा उपलब्ध होइक ते आइन बना सप्तर्षिक अधिकार मे कटौती कएल गेल-ए। आधुनिकतम बजूक आविष्कार कएल गेल-ए जाइ सं अपर लोक मे हमर प्रतिष्ठा बढ़ल-ए । संगहि विदेश नीति मे लाभजनक परिवर्तन भेल-ए । तें विरोधी दलक आरोप जे देवराज इन्द्र देश आ देशबासी लेल किछु नहि केलनिहे-एकदम स निराधार अछि ।

एहि तरहे कतेको दिन तक केस चलैत रहल आ पक्ष-विपक्ष मे दलील देल जाइत रहलैक । अन्त मे प्रधान न्यायाधीश देवगुरु बृहस्पति आन आन अभियोग के अनठा मात्र राजशक्तिक अनुचित उपयोगक अपराध मे इन्द्र के दोषी ठहरओलनि। ओना एहि फैसला सं इन्द्र पर कुनू प्रभाव नहि पड़लनि आ ओ पूर्ववत अपन पद पर आसीन रहलाह जखन की देवलोकक आचार संहिताक अनुसार दोषी ठहरबाक कारणे हुनका इस्तीफा द देब आवश्यक छलनि। हुनकर दिनचर्या सेहो पहिने सन रहल। अंत मे विपक्ष लोकनि आन्दोलनक धमकी देलथिन। देवराज आन कुनु पथ नहि देखि सभ कें जहल में ठूसि देलनि आ सम्पूर्ण मंत्रीमंडलक क्षमता अपना हाथ मे ल लेलनि। आकाशवाणीक संगहि समस्त प्रचार यंत्र सं दिवा-रात्रि हुनके जयगान, यशोगान होमय लागल। ठीक एन मोओका पर वृद्ध ब्रह्मा फारेन टूर स फिरलाह त अमरावतीक एयरपोर्ट पर नारद के छोड़ि ककरो नहि देखि अचरज भेलनि। बाट में जखन नारद द्वारा सभ बात ज्ञात भेलनि त ओ नारद के कारागार पठा अपने ओही टैक्सी सं सोझे इन्द्रालय पहुंचलाह। साँझ पड़ि गेल रहैक। इन्द्रक दरबार में महफिल जमल छलैक। स्वयं देवराज दहिना हाथ में मंदिराक गिलास आ बामा हाथे एक श्वेतांगीक डांर पकड़ने, मुंह में पाइप, डान्स करैत। ब्रह्मा के त देखिते तरबाक लहरि टिकासन पर चढ़ि गेलनि। ओ बम-कलाह-इन्द्र! इंद्र पलटि क बजलाह- हेलो डीयर ओल्ड स्त्रष्टा! गुड इवनिंग। गुड, बेरी गुर इवनिंग टु यू। इन्द्रक मुंहे म्लेच्छ भाषाक प्रयोग ब्रह्माक कान मे टहकेत तेल जकां बुझेलनि। ओ फेरो गरजलाह-ई की भ रहलए? नथिंग गुरुदेव। असल में अपने बुढ़ भेलहुं ने, तें मन नहि होएत । आइ हमर 'बर्थ डे थिक ने-तकरे पार्टी। ई लोकनि हमर गेस्ट छथि। दे आर आल फरनर्स । अपने के परिचय करा दी। परंच - जेना इन्द्र के किछु मन पड़लनि ओ दोसर दिस घुरि आबाज देलथिन, बेटर! एक बड़का ओल्ड स्मगलर आ एगो चिकेन टिक्का कबाब फॉर आवर ओल्ड स्त्रष्टा। जल्दी । आ हं-एक पैकेट स्टेट एक्सप्रेस 555। बेचारे ब्रह्मा त तामसे माहूर भ रहल छलाह परंच तैयो शान्त स्वरे बजलाह; देखैत छी जे सोमरस तोरा

पर अपन बेस प्रभाव जमा चुकलए। इंद्र ब्रह्माक मूंह दूस लगला– हाउ फनी । सो म रस...

अपने भरिसक बिसरि गेल छी जे ई राजा-महाराजाक खानदानी पेय थिक आ ताहू पर हम त जन्मक पूर्वहि सं एकर अभ्यस्त छी। हमर पितृदेव सेहो नोक पीआक छलाह। हमर बाबा...

-तों अपन बकवास बन्न करह। हमरा सभ पता अइ। देवगण आ ऋषिगण कहां छथि?

हाउ कैन आइ से? बजैत आ तलमलाइत इंद्रे ब्रह्माक लग पहुंचलाह आ चुरुठक एक पैघ कश खीचि एक लोइया धुआ ब्रह्माक मुंह पर विक्षेप केलनि। बुढ़ ब्रह्मा दुनू हाथे ओकरा हटवेत पाछू हटलाह आ ताही क्षण नारद जी महाराज समस्त देवऋषिक संग हाजिर भेलाह। हिनका लोकनि के देखिते देवराज इन्द्रक सभ नशा छू मन्तर भ गेलनि। ओ कल जोड़ि मिनतीक स्वर मे बजलाह सर। हमर कुनू दोष नहि। विश्वास करू! हिनका लोकनि के बुढ़ हेबाक संगहि बुद्धि सेहो भासि गेल छनि। ते त हम कहैत छियनि जे हमरे जका मओज-मस्ती करू जे सभ दिन जबाने रहब। परंच ई लोकनि उनटे हमरा गारि पढ़ैत छथि आ हमर स्वर्गीय पिताक नामे यत्र-तत्र कुप्रचार करैत छथि। सर अपने त सभ जनैत छी जे हम अपन जन्मक पूर्वहि सं एहि देश आ देशवासीक सेवा करैत छी। नेनहि में अपन पिताक संग विभिन्न लोकक भाषण केने छी। हुमर स्वर्गीय पिता सेहो एहि देशक हेतु की ने केने छथि। हमर देव तुल्य बाबा।

ब्रह्मा फेर इन्द्र के चपटलनि त ओ थरथर कापय लगलाह। एमहर देव ऋषि-गण असहाय भेल तमसायल ब्रह्मा के देखि रहल छलाह। ब्रह्मा बेस शान्त स्वरे हुनका लोकनि दिस देखि बजलाह- देव ऋषिगण। अहाँ लोकनि हाथ रहितो कहियो तकर उपयोग नहि कएल, पौरुष नहि देखाओल। तैं आइ सं नपुसक भ जाउ। अहां लोकनि सभ दिन एहिना विरोध में चिचिआइत रहव। जहल जाइत रहब। जै हेतु स्वार्थ जनमि गेलए, तें लोक के व्यर्थ ठकवा क प्रयास करैत रहब, परंच स्वार्थ के पूर्ति कहियो नहि भ पाओत। आ अपन कमंडल सं एक चुरूक पानि ल के हुनका लोकनि पर निक्षेप केलनि ब्रह्मा। वेलडन, वेल्डन कहि इन्द्र खुशी सं नाचय लगला। परंच ब्रह्मा के अपना दिस फिरैत देखि कंपनी ध लेलकनि जेना माधक बदरी मे प्रातःस्नान केलाक बाद होइत छैक। ओ करजोरि के अनुनय स्वर मे बजलाह-स्त्रष्टा, फॉरगिव मी। अहीक सप्पत हम निर्दोष छी। तथापि कान पकड़े छी जे एहन भूल कहियो ने करव। नेवर इन माइ लाइफ, आइ प्रोमिस। ई बजैत ओ कान पकड़ि उठ - बैस करय लगलाह। ब्रह्माक गंभीर गर्जन भेल-इन्द्र !

—श्रीमान माई माप

-तोरा में साहस छौक तें' तो सम दिन शासन करैत रहबैं। ओना अगिला पीढ़ी तोरा बलजोरी कान पकड़ि सिंहासन सं हेट क देत आ केश काटि, मुंह मे कारी चूनक टीका लगा, चानि पर खापरि राखि क अमरावतीक प्रधान-प्रधान पथ पर परिक्रमा कराओत । समस्त देवलोक अपर लोकक निवासी, तोरा दूर छीया करत । अन्त मे तोहर सन्तानो तोहर अपमान करत. गारिगंजन देत। वाध्य भ ओकरे सं समझओता करबै आ ओकरे इशारा पर चलबैं । एतबा सुनिते देवराज त्राहि श्राहि क के ब्रह्मा चरण पर खसि पड़लाह। आखि से दहोबहो नोर बहय लगलनि। ब्रह्माक ह्मदय द्रवित भ गेलनि । ओ अपन श्राप में एमेन्डमेन्ट केलनि। देख, ओना हमर श्राप त व्यर्थ जा नहि सकैछ। तखन एहि लोक मे नहि, बीसम शताब्दी में तो मनुखक जोनि में जन्म लेवें देवराज हेवाक कारणे तोहर जन्म पवित्र भूमि आर्यावर्त में होएत। तखन म्लेच्छ भाषाक नीक जकां प्रचार प्रसार रहतैक आ स्वभावतः ओ तोहर खानदानी भाषा रहतौक। नारी में अतिशय आशक्ति रहवाक कारणे तो नारी रूप में जन्म लेबें। ई कहि जो भरि चुरुक पानि इन्द्र पर निक्षेप केलनि। आकाशवाणी सं साधु साधु ध्वनि भेल आ सुमन दृष्टि होमय लागल। ब्रह्मा प्रस्थान केलनि आ इंद्र माथ पर हाथ धेने बैसि रहलाह।

-महाराजा विक्रमादित्य थपरीक संग वाह वाह करय लगलाह। सरिपहुं अनमोल कथा सुनओलह मीता। परंच एकर रचयिताक नाम त नहि कहलह? -रचयिता तोहर परिचिते डा. व्यास छथि। हुनका छोड़ि दोसर के एहन सुच्चा साहित्यक सिरजन क सकैछ? एतवा कहैत बेतालराज अपन गर्दभ विमान सं विदा भेलाह आ महाराज विक्रमादित्य अपन प्रिमियर पदिमनी गाड़ी स्टार्ट करय लगलाह।

किए रामलोचन जी ?



अहां किए अपसियांत रहलौं कांच उमेर स ल क पाकल वयस तक? जखन कि अहां नीक जकां जनइत छलहुं....' एहि अजगुत देशक/मनुखक आकृति/आ पशु-प्रवृत्ति बला जीव/ने त माउग अइ ने पुरुख/तैं ई देश/आर जे कोनो देश किएक ने हो/मिथिला देश नइ भ सकैछ.....(अजगुत देश, आजुक कविता, 1984') ....उनटे अहां त एकरे लक्ष्य बना लेलौं... नियाइर लेलौं जे जं सघन प्रयास करब त पशु-प्रवृत्ति के त्यागि लोक मनुख जकां व्यवहार करत.... सीता क मर्यादा के अकानत ,विराट श्रुति-साहित्य (जकरा लोक-साहित्य कहल जाइ छइ) स अनुप्राणित होएत, विद्यापति क पद मे स्वयं के चीन्हत, शिव सिंह क संघर्ष- परंपरा के आगू बढ़ओनिहार समस्त हुतात्मा लोकइन के अपन माथक मउर बना लेत....पुनर्स्थापित होएत.... तीन कात मे नदिया हो नदिया/उत्तर दिस पहाड़े हो हाइ/हाइ, माझे जे बसइ छइ मिथिला देसे हो हाइ....(अपूर्वा मे छप स पहिने, 1976)' ....बस चाही 'अग्नि-संस्कार ' समस्त अनर्गल के डाहि-जारि सुच्चाक चमक के जगजिआर करबाक संस्कार....' हमरा सभके/तय क लेबाक अइ/बहूत रास बाट/पहुंचि जेबाक अइ/ओइ दिबड़ा भीड़ पर ....किंतु आगामी काल्हि/हमरे सभक होएत.....(काल्हि हमरे सभक होएत, देशक नाम सोनचिड़ैया,1986)

...मिथिला देसक लेल संगोर, संगठन, सम्मेलन, आन्दोलन स होइत,कविता, व्यंग,संयोजन, संपादन करइत, आवश्यकता क पूर्ति लेल कतेको नाम धरइत,युक्ति-संशोधन करइत, मैथिलीक साहित्यिक-सामाजिक पत्रकारिता तक के अपन सम्पूर्ण दइत अहां देइख रहल छलियइ... जकरा लेल मिथिलाक नागरिक हेबाक सपना जोगोलियइ से त ..' आजुक सुपनेखा क तरबा चटइत/मां मैथिली के नाक-कान काटि/घर स बैला....(अजगुत देश) देब मे क्रमशः बेसी सुरखुरु होइत गेलए।तइयो हे युयुत्सु! अहांक युद्ध नइ ठमकल... अनेरे ने ...

मिथिला-मैथिली क लेल चिंता-श्रम केनिहार क लेल एकटा नियम जकां छइ। मैथिल, हुनिका सब स अनिवार्य दूरी बनबइए... ठोर पर कुटिल मुस्की संग 'अभियानी' कहइए ....किछु-किछु ओहने जेना विद्यापति के' कोकिल ' आ भोगेंद्र झा लेल 'भोगी-भगवान'...

'लाख प्रश्न अनुत्तरित' मे स एकटा प्रश्न... अपना गामक चौक के ' ज्योतिरीश्वर चौक' नाम नइ देब देल गेल? किए?

...रहल हेता ज्योतिरीश्वर आदि गद्यकार, कि समाज -संस्कृति क वर्णन-रत्नाकर, इतिहास क बहुरंग आ सत्ता क धूर्तइ के देखार केनिहार... आ कि अहांक आकलन स ठाकूर-गच्छ क डीही-सुदूर अतीत क पूर्व-पुरुख... मुदा आइ त साधारणीकरण माने रस-निष्पति हुनका स नइ, 'मरनी ' स छइ! ...सुनइ छी बेस गुलजार छइ 'मरनी चौक'.... परोपट्टा मे अहांक (आ हमरो) गामक लैंडमार्क...

तइयो कहियइ -' कटहर' ...(कोनो असहमति के अही एक शब्द स खारिज करइ छलियइ ने!!)... '.ई कारी समय हरदम नइ रहतइ ...भोर हेतइ ...इजोत हेतइ....' अही आशा-विश्वास नेने विलोपित भेल पूर्व-पुरुखक कतार मे अहूँ शामिल भ गेलौं रामलोचन जी... ताहि स पहिने, स्वयं स स्वयं के विलोपित क लेलौं... के छी ? किए छी? ...सबस मुक्त ...

आखरी फोन जे केने रही त पुछलौं –के कुणाल ?!! ....हम अकबका गेल रही रामलोचन जी! आई हम, जे - जेहन छी, तकरा गढ़ मे अहांक बड़ बेसी हाथ अइ ने! ...से, के कुणाल???.....जीवन पर्यंत, एक उद्देश्य लेल दौड़इत - दौड़इत एकदम स निखोज-निरुद्देश्य भ गेनाइ.... एकरा हम केना बुझू रामलोचन जी!!!

आर एक दिन ...

एक दिन... भोरुका पहर... अहां बहरा गेलौं बाट पर। बाट, जे अहांक समस्त संघर्षक मूक साक्षी अइ, बाट, जकर अहां रग-रग चिन्हइ छलौं, ओही बाट पर हेरा गेलौं... मिझरा गेलौं जन - अरण्य मे। हमर स्मानियत शिव सिंह क मिथक के दोहराइत देखलक.... अन्ततः सेहो नइ।किए रामलोचन जी?

एक ख़ाढ़ी ऊपर रहितो मित्र छलौं-मीता छलौं। कक्का कहक चाहइ छल, रामलोचन जी कहइ छलौं। हमरा सभक (कुणाल-अग्निपुष्प) संग पुरइत रहलौं ....सुल्फा क संपादन, कि भग्न स्तुपक एक अक्षत स्तंभ मे अभिनय, कि शिखा क लेल बेताल कथा लेखन कि कह लोचन कविराय, कि फंड क जोगार, कि पत्रिका क प्रचार, कि हरदम पक्ष मे अडिग..... हमहुं त ओएह सब कएल जे अहां केने रही ....बस, अनेक नाम स लिखनाइ (अपवाद-कुमार अनिल, शिखा) आ जुलूस-आन्दोलन मे हिस्सा लेनाइ (एकरो अपवाद छइ) के छोइड़....अंततः मिथिलादर्शन हमरे थम्होने गेलौं...

अंततः अहां के त फ़ूरसइत भ गेल रामलोचन जी ..हमरा त ....देखी जमाने की यारी/बिछड़े सब बारी-बारी ....

(पुनश्चः एकरा मैथिली मे लिखि सकइ छलौं। मुदा अहां के खऊंझाबक जे छल.... अहां कहियइ ने... देखिहें लगउ ने हिंदी क लू.... मुदा आब ओएह मैथिल घरक शीतल बसात छी आ मैथिली- लू!!!!

अन्ततः आब हम अहांक' कटहर' क भय स मुक्त भ गेल छी ....

ओहने मुखिया जेहने जनता

•वीरेन्द्र नारायण झा

सुपारी छ हौ...?
-पान बाबा यौ! ...आउ! बैसू।
कि लैप टॉप कें ओगारने छह, होरीक खुमारी उतरि गेलह कि?
चढ़ल कहिया जे उतरत। अहाँ सभ जकाँ त्रि-काली नइ ने छी हम।
-होरी पर लिखै छह, जकरा कियो पढ़य ने सुनय। तखन तों हमर भक्त शिरोमणि लेखक छह, हम तं सुनबे करबह आ दोसर बात जे प्लाट तं हमहीं तकै छियह।
से तं छै पान बाबा, अजुका लेल की अछि?
बसिया होरी कें अबै बला मुखिया चुनाओ से टैग कए दहक। टटका प्लाट कहियौ बाबा। पंचायत इलेकसनक की गहमह छै, होरी मे कत्ता गैलन दारू सरकारक नाम पर आ कतेक करोड़ भांगक गोली महादेव कें प्रसन्न करबा मे घोंटल गेल आ कतेक जन मुखियाक उम्मीदवारी पर अपन की-की लुटेलक-उड़ेलक, से सभ तेला-बेला कहियौ ने।
-हेहौ! तोंही सभटा बजबह कि किछु हमरो सुनबह!
-नै बाबा! असली बाजा अहीं छी, हम तं अहाँक इअर फोन छी।
-से कहलियह...तों एकटा आचार-संविधान बनाबह जे मुखिया-मुखियाइन केहन होए, कोना बाजए-'भुकए' (अइ मे भुकइयो पड़ैत छैक), कोन तरहें पंचायतक काज आ विकास हेबाक चाही? लोक संग कोना व्यवहार होए। पंचायत-दरबारक 'घंटा' कियो कखनो बजा सकैए, मोबाइलक घंटी जं स्विच ऑफ नहि रहैक। ओइ मे घड़ी घंटे उपयोगी होयत। भगवानो तं घंटा आ कि घंटिए सुनै छथि। लोकतंत्र मे मुखिया-मुखियाइन भगवान-भगवती सं कम नहि ने। ओना जनता त जनार्दन' अछिए।
-बाबा, कने थमहब।
-की भेलह हौ सुपारी, लग्घी लागि गेलह कि?
-नै यौ, लग्घी सटकल अछि अहांक संविधान मादे सुनि कए। एकटा बात कहू, घंटाक आवाज मुखिया-मुखियाइन सुनिए लेताह-लेतीह, तकर कोन गारंटी छै?
-हदबदाब जुनि। कोना तों बेस्ट सेलर मैथिली लेखक बनबह से नहि जानि! जखन हम तोरा संग खुट्टा गाड़ने छियह, तखन चुकर नहि! घंटा सन-सन समस्या कें हम घंट ने मोजर दी। सुनह...पंचायत मे जत-जत भेपर लाइट लगायल जायत ओत-ओत रिमोट सं संचालित घंटा बाजत। ओही पोल पर स्पीकर सेहो टांगल जायत। जकरा लाउड स्पीकर आ डीजे सं जोड़ब अइ लेल उचित हेतैक जे ओकर सामूहिक उपयोग सं किछु धन कमा कए ओकर मेंटीनेंस खर्च पूरा होयत।
-इ, आबक नेन्हो, डीजे बजलाक बादे जन्म लेबा लेल राजी होइए।
सच्चर मुखिया चाही, बाबा। लंजू-पंजू से काज चलइ वला नहि।
- सुनह... बीच मे डिस्टर्ब नहि करह। दिमागक लिंक फैल भए जायत। मुखिया जीक चरित्र एहन हेबाक चाही जे हुनक कोनो चरित्रे नहि होअय। जकर कोनो चरित्र नहि वैह तं राजनीति आ राज-काज सम्हारि सकैए। तखने सफलतम मुखियाक श्रेणी मे आबि एक दिन एमएले-एमपी चुनाओक सुयोग्य प्रत्याशी होअय। जकरा लग समांग आ टाका छैक ओकर आरोपक पोटरी सांढ़क अंडकोष जकाँ झुलिते रहत आ प्रशासनक कोनो टा कौआ लोल नहि मारि सकत। जे मुखिया कोनो फण्डक सए रूपैया मे सं मात्र पंद्रह रूपैया मे काज संपन्न कए लिअय, वैह त भेल जनताक सुच्चा सेवक, जे नहि भेल से बुझह लुच्चा।
- एँ यौ बाबा, पाइ खाइ वला मुखिया-जनसेवक सुच्चा-ईमानदार कहेतैक? कोन पट्टी पढ़बै छी यौ!
- धुत्त! खतम छह तों। पाइक काज पाइए से हेतै, नै कि चट्टी खिएला सं! मुखिया रबड़क गाछ नहि छियै जे पाइ लेल तीरैत रहबहक। तिरा कए एक दिन टूटि जायत। तखन ओइ गाछक की फएदा। काज एना होमक चाही जे सापो मरि जाए, लाठियो नहि टूटए। मुखिया-सरपंच आ कि कोनो प्रतिनिधि जे पाइ खायत आ कि खुआयत ओ त पंचायते मे रहत। मुखिया बोलेरो-स्कार्पियो लेबे करत, ड्राइवर-लठैत-मुहलगुआ रखबे करत। तखन पंचायत मे कतौ जन्मी,मरनी, भोज-भात, मुडन-उपनयन-कन्यादान, नवाह-कीर्तन, मंदिर-मसजिद-गहबरक उत्थान, पावनि-तिहार, चन्दा-चुमान-चढौआ, मददि-सहायता...आदि पर खर्च करइए पड़तैक संगहि सलिआना जीएसटी (गॉड सर्विसेज टैक्स) क नाम पर धन खर्च केनाइ अनिवार्य जे भगवान दहिन रहथि आ आरोप-अपमान-अभियोग-कलंक आ मारि-गारि-धमकी सं रक्षा करथि। आब तोंही हमरा बुझाबह जे अइ सं रोजगार संग विकास हेतै कि नहि! ई कोन बात भेलै जे खायब ने खाय देब। हगब ने बाट छोड़ब। जिअ देब ने मरए देब। मुख्य बात, विकास हेबाक चाही। जं गुणवत्तापूर्ण काज होमए लागए तं पंचायत विकास विहीन भए जायत। बिनु जलक नल हिलै-डोलै त अछि। पानि लेल कमला-कोसी अछिए।
- बाबा, आब सारांश कहू, जाहि सं सरकार आ चुनाओ आयोग कें मेल ठोकि दियै।
- शॉर्ट मे ई भेलह जे जनतंत्र मे जेहने जनता तेहने मुखिया।

सम्पर्क : 790342 5262 / 98352 95040